30.00

November 2012

# मरयम



करबला
और
सोशल-रिफ़ार्म

हमारे बच्चे

नया सफ़र, नया घर
नई ज़िंदगी

अब वक़्त आ गया है
कुछ कर दिखाने का

नक़ली दीन

ख़ुशी, ग़म और हम

घर के काम

# मरयम

का एक साल पूरा होने के मौक़े पर हम अपने
सब्सक्राइबर्स के लिए लेकर आए हैं

## ख़ुशियों की सौग़ात

और शुरू कर रहे हैं

**एक स्कीम जिसमें हर महीने 5 ख़ुशनसीबों को मिलेंगे ख़ूबसूरत ज्वैलरी सैट, घर के इस्तेमाल के सामान और भी बहुत कुछ...**

बस पढ़ती रहिए मरयम मैगज़ीन और इंतेज़ार कीजिए अपनी बारी का।

**इस महीने जिन 5 ख़ुशनसीबों को
मरयम की तरफ़ से ख़ूबसूरत तोहफ़े दिये जा रहे हैं
उनके नाम यह हैं:**

# अ० हुसैन

तुम नहीं रहे, तुम्हारा घर नहीं रहा
मगर तुम्हारे बाद ज़ालिमों का डर
नहीं रहा।

RNI No: UPHIN/2012/43577






Monthly Magazine

# मरयम

Vol:1 | Issue: 9 | November 2012

## इस महीने आप पढ़ेंगी...

| | |
|---|---|
| हमारे बच्चे | 6 |
| ईदे ग़दीर और हमारी ज़िम्मेदारियां | 9 |
| नया सफ़र, नया घर, नई ज़िंदगी | 10 |
| गोद के बोलते बच्चे | 13 |
| करबला (इंटरव्यु) | 16 |
| परवरिश के बारे में कुरआन का पैग़ाम | 19 |
| मुबाहेला | 21 |
| करबला और सोशल रिफ़ार्म | 22 |
| बे-तक़वा औरतों पर होने वाला अज़ाब | 26 |
| नक़ली दीन | 27 |
| घर के काम | 30 |
| सूरए राद (तफ़सीर) | 31 |
| ख़ुशी-ग़म और हम | 35 |
| गोशा नशीनी | 37 |
| अब वक़्त आ गया है कुछ कर दिखाने का | 41 |

**Editor**
Mohammad Hasan Naqvi

**Editorial Board**
Nazar Abbas Rizvi
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

**Managing Editor**
Abbas Asghar Shabrez

**Executive Editor**
Fasahat Husain

**Assist. Exec. Editor**
M. Aqeel Zaidi

**Contributors**
Imtiyaz Abbas Rizwan
Azmi Rizvi
Fatima Qummi
Qayam Abbas
Tauseef Qambar

**Graphic Designer**
imagine Siraj Abidi 9839099435

**Typist**
S. Sufyan Ahmad

Husain
Husain
Husain
Husain
Husain
Ya

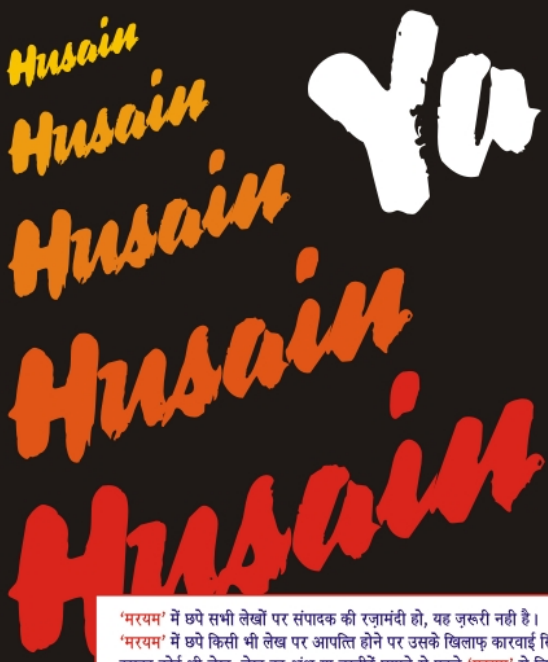

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॅापर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprieter S. Mohammad Hasan Naqvi printed at Swastika Printwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and published from 234/22 Thavai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017 (Lucknow), +91-9892393414 (Mumbai)
Email: maryammonthly@gmail.com

# इमाम हुसैन[अ०] का ख़ुतबा करबला के क़रीब

कूफ़े की तरफ़ बढ़ते हुए 'क़स्रे बनी' में रात के आख़री पहर इमाम ने हुक्म दिया कि नौजवान अपनी-अपनी मश्कें पानी से भर लें और चलने के लिए तैयार हो जाएं।

जब ये कारवाँ चला तो कारवाँ वालों के कान में इमाम की ये आवाज़ पहुँची....

''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' इमाम हुसैन[अ०] बार-बार यही कहे जा रहे थे। हज़रत अली अकबर[अ०] ने इस बारे में आप से पूछा तो आप ने कहा, ''मैंने अपना सर घोड़े की ज़ीन पर रखा ही था कि हलकी सी नींद आ गई। मैंने एक आवाज़ सुनी जो कह रहा था, ''ये लोग रात के इस अंधेरे में जा रहे हैं और मौत भी इनके पीछे है। बस मुझे मालूम हो गया कि ये मेरी मौत की ख़बर है।'' हज़रत अली अकबर[अ०] ने कहा, ''ख़ुदा कोई बुरा हादसा न लाए। क्या हम हक़ पर नहीं हैं?'' इमाम ने फ़रमाया, ''हाँ बेटा! ख़ुदा की क़सम! हम हक़ के बग़ैर क़दम भी नहीं उठाते।'' हज़रत अली अकबर[अ०] ने कहा कि, अगर राहे हक़ में ही मरना है तो हमें मौत से कोई डर नहीं। इमाम ने अपने लख़्तेजिगर को दुआ दी और फ़रमाया, ''ऐ बेटा! ख़ुदा तुम्हें बेहतरीन बेटा होने की जज़ा अता फ़रमाए...।''

जी हाँ! अगर मरना ख़ुदा की राह में हो, ज़ुल्म और अत्याचार के ख़िलाफ़ हो तो ऐसी मौत से डरना नहीं चाहिए और ये वह सबक़ है जो हुसैनी मकतब से न सिर्फ़ बेटे को सिखाया जा रहा है बल्कि सारे हुसैनी अज़ादारों को भी दिया जा रहा है।

# हमारे बच्चे

■ फ़ातिमा कुम्मी

बच्चों को पालने में बड़ी-बड़ी दुश्वारियां सामने आती हैं। उनकी तरबियत और परवरिश करना बहुत ही सख़्त काम हैं। ख़ास कर उनकी अच्छी तरबियत करना पालने-पोसने से कहीं ज़्यादा सख़्त है। घुटनियों चलना सीखना, फिर बोलना, फिर खड़ा होना, फिर चलना सीखना यहां तक कि बच्चों की हर बदलती हुई स्टेज के अंदर हमारे लिए नए-नए चेलेंजेस भरे पड़े होते हैं। बच्चे चाहे जितने ही छोटे क्यों न हों लेकिन उन्हें पालने पोसने में बहुत हिम्मत और हौसले की ज़रुरत होती है। इसलिए कभी-कभी आपने मां-बाप को यह कहते हुए भी सुना होगा कि जब उनके बच्चे छोटे होते हैं तो उनका दिल चाहता है कि उनके बच्चे जल्दी से बड़े और समझदार हो जाएं ताकि सारी मुश्किलों से उन्हें छुटकारा मिल जाए। जबकि उन्हें शुरु से ही खाना खिलाने से लेकर खेलने तक बहुत कुछ सिखाना और समझाना होता है। साथ ही अच्छी आदतें भी डालनी होती हैं। और यही काम बड़ा सख़्त होता है। वह सारे काम अपनी मर्ज़ी से करना चाहते हैं या वही करते हैं जो देखते हैं। दूसरी तरफ़ दूसरे लोगों को वही काम जब दूसरे तरीक़े से करते हुए देखते हैं तो वह कंफ़्यूज़ हो जाते हैं। इसलिए उनके सामने एक रास्ता नहीं बल्कि कई रास्ते होते हैं। एक रास्ता उनका ख़ुद का और एक अपने दोस्तों का। उनका अपना रास्ता सही या ग़लत भी हो सकता है। इसलिए उन्हें सही रास्ते पर चलना और सब कुछ सिखाना पैरेंट्स का ही काम है। इसका मतलब यह हुआ कि बच्चे जितने बड़े होते जाते हैं, मुश्किलें कम नहीं होतीं बल्कि बढ़ती ही जाती हैं।

एक्सपर्ट्स के मुताबिक़ सीखने का अमल पूरी ज़िंदगी कंटिन्यू रहता है। और बच्चे तो वैसे भी पैदाईश के बाद से ही सीखना शुरु कर देते हैं। सीखने और सिखाने के साथ-साथ हमारे सामने एक बड़ा चेलेंज यह होता है कि बच्चा जो भी करता है, क्या वह सही भी है? उसमें अख़लाकी लिहाज़ से कोई कमी तो नहीं है? अगर है तो हम किस तरह बच्चे को समझाएं और उसे कैसे ख़त्म करें? ज़ाहिर सी बात है कि बच्चे ग़लत और सही तो पहचानते नहीं हैं इसलिए उनसे यह उम्मीद करना कि वह बड़ों की तरह समझदारी से काम लेंगे, सही नहीं है। बच्चे को समझाना या रोते हुए बच्चों को कैसे ट्रीट किया जाए यह बात पेरेंटस के लिए सोचने की है। ऐसे मौक़े पर बच्चों के साथ किसी भी तरह की ज़बरदस्ती न की जाए।

1- बच्चे जो कुछ करते हैं या करना चाहते हैं या तो वह अपने मन से करते हैं या कभी कभार अपने बड़ों का कहना मानकर। इसमें बेचारे बच्चों की कोई ग़लती नहीं है। बड़ों का कहना मानने के पीछे हो सकता है कि उन्हें कोई लालच हो या उन्हें डांट पड़ने का डर हो या पिटाई का डर हो। अगर इन सारी वजहों से वह आपका कहना मानते हों तो यह सही नहीं है क्योंकि इस तरह से आप उनसे अपना कहा तो मनवा सकती हैं लेकिन उनके दिलों पर हुकूमत नहीं कर सकतीं। क्योंकि इंसान को हर वह चीज़ अच्छी लगती है जो वह दिल से करता है इसलिए आप कभी यह नहीं चाहेंगी कि आपका बच्चा आपका कहना सिर्फ़ आपके लिए माने बल्कि आप चाहेंगी कि वह आपका कहना अपने दिल से माने। दिल के बजाए ज़बरदस्ती या किसी दबाव में आकर किए गए काम की उम्र बहुत कम होती है। जबकि दिल से किसी बात को मान लेने के बाद उससे मुंह फेर लेना आसान नहीं होता है। आपको उसे ऐसे ट्रीट करना है कि आपकी बात उसके दिल में उतरती ही चली जाए और यह बिल्कुल दिलों पर हुकूमत करने जैसा होगा।

2- अगर आप अपने बच्चे के साथ कोई ज़बरदस्ती करती हैं तो याद रखिए कि उसे उस चीज़ से नफ़रत और चिढ़ हो जाएगी। चाहे वह खाना हो, दूध पीना हो, कोई सब्जेक्ट हो या कोई खेल हो। आपने अक्सर देखा होगा कि बच्चों से जो मना किया जाए वह सबसे पहली फ़ुरसत में उसे ही करने के बारे में सोचते हैं। चाहे वह आपके सामने दोहराएं या आपके पीठ पीछे करें।

3- बच्चे अपने बड़ों को देख कर ही सब कुछ सीखते हैं इसलिए पैरेंट्स को चाहिए को वह बच्चों से पहले ख़ुद को सुधारें। अगर आप मां हैं तो आपकी ज़िम्मेदारी ज़्यादा बनती है क्योंकि बच्चा मां के ज़्यादा क़रीब रहता है। वह आपको देखकर बहुत कुछ सीख जाएगा।

4- बच्चे चाहे छोटे ही क्यों न हों लेकिन बड़े समझदार होते हैं वह अपनी बात मनवाने का तरीक़ा ख़ुद ही ढूंड निकालते हैं। बचपन से ही वह यह देख लेते हैं कि किस जगह रोना है, कहां चिल्लाना है, कहां प्यार से पटाना है और कहां ज़िद करना है। अपने दादा-दादी और पैरेंट्स से कैसे बात मनवाना है, यह हुनर वह ख़ुद से ही नहीं बल्कि आपके बीहेवियर से समझते हैं कि वह आपमें से हर एक को कैसे हैंडिल करें। इसलिए यह आप पर डिपेंड करता है कि आप उन्हें कैसे ट्रीट करना चाहती हैं।

5- ख़ास कर उस वक़्त जब वह ज़िद कर रहे हों तो उन्हें समझाना बहुत मुश्किल होता है। उस वक़्त वह किसी की नहीं सुनते, उन्हें बस अपनी बात मनवाने का भूत सवार होता है। उन्हें मनाना बड़ा मुश्किल होता है। उस वक़्त वह वही करते हैं जो उनका दिल चाहता है। इस जगह पैरेंट्स का पेशेंस ख़त्म हो जाता है और वह तैश में आकर उनको डांट देते हैं या उनकी पिटाई कर देते हैं या फिर कभी उनसे ज़बरदस्ती कुछ करने के लिए कहते हैं और कभी डराते और धमकाते भी हैं जो कि बिल्कुल सही नहीं है। जब बच्चा रो रहा हो तो आपको बच्चे को चुप कराते हुए लॉजिक के साथ उसके मिज़ाज को देखते हुए उसे अपनी बात समझाने की कोशिश करनी चाहिए। उसको दूसरी इधर-उधर की बातें बताकर बहलाते हुए घुमा फिराकर वही बात समझानी चाहिए जो आप उसको समझाना चाहती हैं। लेकिन इस बात का ख़्याल ज़रुर रखें कि उसे क्या पसंद है। हो सकता है कि उसे वह काम पसंद ही न हो जो आप उससे चाहती हैं। इसलिए उसे इस बात के लिए कैसे तैयार करना है यह पैरेंट्स ही ज़्यादा अच्छे तरीक़े से समझ सकते हैं। क्योंकि वह बचपन से बच्चे के ज़्यादा क़रीब होते हैं।

6- हर बच्चे की अपनी आदतें और अपना नेचर होता है। इसलिए कभी भी एक बच्चे पर दूसरे बच्चे के नेचर के मुताबिक़ कोई काम या एक जैसे रुल्स न थोपें। सभी बच्चों के साथ एक जैसा बीहेव नहीं किया जा सकता। हर बच्चे को उसके नेचर के मुताबिक़ ही ट्रीट करना चाहिए।

7- यह समझना भी मुश्किल होता है कि बच्चों से कैसे काम करवाया जाए। उनका मूड समझना वाक़ई में बहुत मुश्किल है। वह कब क्या ख़ुशी से करेंगे और क्या नहीं करेंगे, इसके लिए ज़रुरी है कि आप अपने बच्चे के नेचर को समझने की कोशिश करें। उसे कब और क्या पसंद है?इसे समझना आपकी ज़िम्मेदारी है और यह सब एक मां ही ज़्यादा अच्छे तरीक़े से जान सकती है।

8- कुछ बच्चों से अगर बात मनवानी हो तो वह बिना डांट खाए मानते ही नहीं हैं। यह ग़लत आदत पड़ जाने की वजह से होता है। बच्चे से ज़बरदस्ती या डरा धमका कर बात मनवाना सही नहीं है जिसका रीज़न हम आपको बता चुक हैं। सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि आप बच्चे को प्यार से लॉजिक के साथ सही और सच्ची बात बताएं। लोजिक के साथ बात बताने में उसे समझने में आसानी होगी। उसे इज़ी ज़बान में समझाएं। हमेशा सच ही बोलें। ताकि बच्चे के और आपके बीच भरोसे का रिश्ता मज़बूत रहे। वैसे ऐसा कर पाना बहुत मुश्किल काम है क्योंकि इसके लिए हौसले और सब्र की ज़रूरत होती है जिसके न होने की वजह से पैरेंट्स जल्दी ही हार मान जाते हैं कि अरे कहां तक बच्चे के साथ माथा-पच्ची करते रहें, दिमाग़ ख़राब हो जाता है लेकिन अगर हौसला और हिम्मत रखी जाए तो यह काम ना मुमकिन भी नहीं है। बस शुरू में मुश्किल होता है लेकिन बाद में आसान हो जाता है बल्कि यूं कहिए कि बाद में इसी में मज़ा आने लगता है क्योंकि बच्चा आपकी बात समझने और मानने लगता है।

9- अक्सर क्या होता है कि पैरेंट्स बच्चे को चुप कराने के लिए उनसे झूठे वादे कर लेते हैं। उन्हें कुछ लाकर देने की बात करते हैं मगर बाद में ख़ुद ही भूल जाते हैं। उन्हें कहीं ले जाने की बात करते हैं मगर बाद में लेकर ही नहीं जाते। इस तरह के झूठ से अच्छा है कि बच्चा रोता रहे। उसे किसी और तरीक़े से चुप कराने की कोशिश करनी चाहिए। क्योंकि इस तरह आप झूठ तो बोल ही रही हैं बल्कि साथ ही साथ आप झूठ से नफ़रत पैदा करने के बजाए बच्चे को झूठ बोलना सिखा रही हैं।

10- सबसे बेहतर यही है कि आप अपने बच्चे से जो कुछ चाहती हैं सबसे पहले उसे उसके बारे में प्यार से बताएं। अच्छे अंदाज़ से उसे समझाएं, ऐसा कुछ बताएं जो सच भी हो और जिससे उसके दिल में उससे मिलने या उसे कर गुज़रने की ख़्वाहिश पैदा हो और उसका दिल ललचाए। फिर देखिए उसको उस चीज़ और उस काम में कितनी ख़ुशी होती है।

11- हां! लेकिन आपका काम यहीं पर ख़त्म नहीं हो जाता है बल्कि इस दौरान आपने उससे जो भी वादे किए हैं या जो भी उसे बताया है उसे हर हाल में पूरा कीजिए ताकि उसका दिल न टूटने पाए और वह झूठ बोलने और झूठे वादे करने का भी आदी न बन सके। पूरी कोशिश कीजिए कि जो कुछ भी आपने उससे कहा है वह सब सच है और उसे सच करके दिखाइए ताकि वह भी अपनी आने वाली ज़िंदगी में सच को इम्पॉर्टेंस दें और सच की वजह से बच्चा आप पर भरोसा कर सके। और आपको नेक्सट टाइम बच्चे की तरफ़ से बेवफ़ाई का तमग़ा न मिले। और आसानी से बच्चा आप पर दुबारा भरोसा करने को अपनी ग़लती न समझे। इसलिए जब वह ज़िद कर रहा हो और आप को उसे चुप कराने के लिए ऐसा कुछ करना पड़े जो आपके बस में नहीं है तो बिल्कुल वैसा करने का वादा उससे मत कीजिए क्योंकि यह किसी भी हाल में सही नहीं है। बच्चे से वही कहें जो आप कर सकती हों और जो कहें उसे ज़रुर करें वरना इससे अच्छा है आप वह सब कहें ही न जैसे "चुप हो जाओ शाम को कहीं घूमने चलेंगे" अगर आप सच में जा सकती हों तो ही उससे घूमने की बात करें और अगर नहीं जा सकती हैं तो कोई और बहाना सोचें जो आप कर सकती हों। हमेशा सच को अहमियत दें ताकि बच्चे भी सच की इम्पॉर्टेंस को पहचानें और आपका घर सच, भरोसे, ईमानदारी और मोहब्बत का गुलशन बन जाए। ●

# करबला एक इंक़ेलाब

फ़ैज़ अब्बास आबिदी
युनिटी कालेज, लखनऊ

*इमाम हुसैन[अ०] की शहादत को 1400 साल हो चुके हैं। एक बार फिर माहे अज़ा यानी मोहर्रम हज़रत अबुतालिब के घराने की यादगार शहादत को बयाँ करते हुए आ गया है। वाक़िअ-ए-करबला सन् 61 हिजरी में पेश आया था लेकिन इसके अच्छे असर आज तक देखे जा सकते हैं। करबला महज़ एक जगह का नाम नहीं है बल्कि करबला एक इन्क़ेलाब का नाम है, करबला सच्चाई का पैग़ाम है, करबला हक़ परस्ती है, करबला बातिल की हार है, करबला ज़ुल्म के ख़िलाफ़ एहतेजाज है, करबला एक ऐसा मूवमेंट है जिससे सीख लेकर इन्सानी समाज हर दौर में आगे बढ़ता रहेगा। जिस दीन को बचाने के लिए रसूल[अ०] के नवासे ने अपना भरा घर लुटा दिया आज वही दीन फिर हम से क़ुरबानी माँग रहा है। दुनिया भर की साम्राजी ताक़तें अपनी भरपूर कोशिशों में लगी हुई हैं कि किस तरह से इस्लाम और मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाया जाए। इस ग्लोबल वॉर में 'करबला' ही वह ताक़त है जो हमें रास्ता दिखा सकती है। 10 मोहर्रम सन् 61 हिजरी को महज़ 72 इन्सानों की शहादत नहीं हुई थी बल्कि उस दिन एक ऐसा इन्क़ेलाब बरपा हुआ था जिसने इस्लाम में एक नई रुह डाल दी थी। दीन के नाम पर जब ग़लत चीज़ों को शामिल किया जाने लगा तो इमाम हुसैन[अ०] ने अपनी जान देकर इस्लाम को नई ताक़त दी। आज फिर वही दौर है जब इस्लाम के नाम पर ग़लत चीज़ों को फैलाया जा रहा है। रस्मो-रिवाज के नाम पर हमारी क़ौम ऐसे दलदल में फंसी हुई है जिसका दीन से कोई वास्ता नहीं है। जिस तरह शहादते हुसैन[अ०] से दीन को एक नई जान मिल गई थी, ठीक उसी तरह से ज़िक्रे हुसैन[अ०] और अज़ाए हुसैन[अ०] भी ऐसी होनी चाहिए कि इसलाम को एक नई रुह मिल जाए। मजालिस की शक्ल में जो इस्लामी तहरीक हमें हज़रत ज़ैनब[स०] से मीरास में मिली है उसकी हिफ़ाज़त और तहज़ीबे अज़ा को बाक़ी रखना बहुत ज़रूरी है। दुश्मन यही चाहता है कि करबला का पैग़ाम, अज़ाए हुसैन[अ०] और तहरीके अज़ा को ख़त्म कर दिया जाए क्योंकि उन्हें सबसे बड़ा ख़तरा करबला से ही है।*

*इमाम ख़ुमैनी[र०] ने कहा था, "यह मोहर्रम और सफ़र ही है जिसकी बदौलत आज इस्लाम ज़िंदा है।" करबला को ज़ेहन में रखते हुए एक इन्क़ेलाब फिर बरपा होना चाहिए और एक ऐसी क़ौम सामने आना चाहिए जो लॉजिकल थिंकिंग पर यक़ीन रखती हो, जिसमें अन-नेचुरल चीज़ों के लिए कोई जगह न हो, जो शरई उसूलों को ही फैलाए और हुसैनी पैग़ाम को सामने लाकर हुसैनियत का परचम पूरी दुनिया में फैला दे। जोश मलिहाबादी के इन अश्आर के साथ मैं अपनी बात ख़त्म कर रहा हूँ-*

*ऐ क़ौम! फिर वही है तबाही का ज़माना*
*इस्लाम है फिर तीरे हवादिस का निशाना*
*लाज़िम है उसी शान से फिर छेड़ तराना*
*तारीख़ में रह जाएगा मर्दों का फ़साना*

*मिटते हुए इस्लाम का फिर नाम जली हो*
*मुमकिन है कि हर शख़्स हुसैन इब्ने अली हो*

# ग़रीबी

## ग़रीबी किसी चीज़ का न होना है...

लेकिन वह चीज़ "रुपया-पैसा" नहीं है।

ग़रीबी भूक नहीं है।
ग़रीबी कपड़े न होना नहीं है।

## बल्कि...

ग़रीबी वह गंदगी है
जो हम रास्ते में अपने घर
के सामने फेंक देते हैं।

ग़रीबी वह धूल है
जो अच्छी किताबों पर जम जाती है।

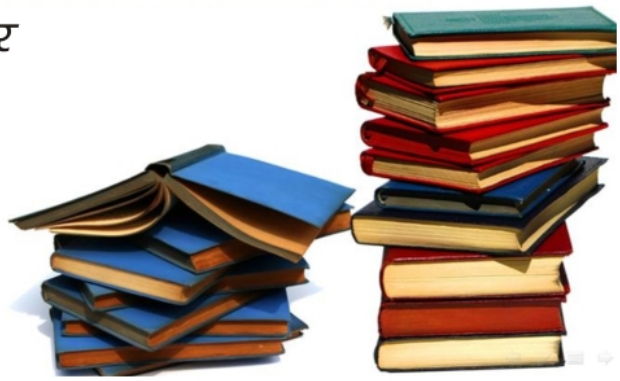

ग़रीबी वह शोर है...जिस से हम अपने पड़ोसियों का जीना हराम कर देते हैं।
ग़रीबी रात को 'बिना कुछ खाए' सो जाना नहीं है,
बल्कि ग़रीबी दिन को "बग़ैर सोचे-समझे" गुज़ार देना है।

## और सबसे बढ़ी ग़रीबी जाहिल होना है

बाप का ख़त बेटी के नाम
पहला ख़त

# नया सफ़र नया घर नई ज़िन्दगी

■ अबू ज़फ़र ज़ैन

मेरी नाज़ली!
अस्सलामु अलैकुम

आज तू इस घर से पहली बार एक नए घर की तरफ़ जा रही है। यह बड़ी ख़ुशी का वक़्त है कि आज से तेरे दो घर हो गए हैं। एक वह घर जहां तूने अब तक अपनी ज़िन्दगी गुज़ारी है और एक वह घर जहां तू आइन्दा ज़िन्दगी गुज़ारेगी। इन्शा अल्लाह आज से तेरी ज़िन्दगी में माँ-बाप के अलावा एक और चाहने वाला दोस्त आ रहा है। आज से तू एक बेटी ही नहीं बल्की एक बीवी भी है।

नाज़ली! आज तेरे माँ-बाप की आँखें नम हैं क्योंकि तू अब उनके सामने ज़्यादा नहीं रह सकेगी। लेकिन उनका दिल ख़ुश है कि उन्होंने एक भारी ज़िम्मेदारी अदा कर दी है और इस से बड़ी ख़ुशी यह है कि उन की बेटी परवान चढ़ी और अब नई ज़िम्मेदारियाँ उठाने के क़ाबिल हो गई है। हम ख़ुश हैं कि हमारी प्यारी बेटी एक ऐसी नई जगह क़दम रख रही है जहाँ उसके लिए दिलचस्पी की बहुत सी चीज़ें हैं। जिसके बग़ैर यह ज़िन्दगी बेकार है बल्कि लानत है।

कहने को तो हम सब लोग तूझे रूख़सत करने के लिए जमा हुए हैं लेकिन रूख़सती का लफ़्ज़ एक पुरानी रस्म है। जिस तरह तू हमारे दिलों से रूख़सत नहीं हो सकती उसी तरह हमारे घर से भी रूख़सत नहीं हो सकती। तू क्या है...? हमारे दिलों की उमंग, हमारी आँखों की चमक, हमारे बुढ़ापे की उम्मीद। जब तक हम लोग ज़िन्दा हैं तू हमारी है, हमारी हर चीज़ तेरी है। आज हम तुझे घर के दरवाज़े से रूख़सत करने के लिए इकट्ठा नहीं हुऐ हैं बल्कि ज़िन्दगी के उस रास्ते तक पहुँचाने के लिए आए हैं जिस पर चलना इन्सान की नेचुरल डिमांड है, हमारे मालिक का हुक्म है, पैग़मबरों और नबियों की ज़िन्दगी का एक अहम हिस्सा है।

बेटी डर नहीं! सफ़र अनोखा सफ़र है, माहौल नया है लेकिन मज़ेदार है। शायद इम्तिहान है, बहुत अहम है लेकिन अगर कामयाबी हुई तो ज़िन्दगी की सबसे रँगीन और खूबसूरत बहारें तेरे पास होंगी और ज़िन्दगी के बाद सबसे बड़ा ईनाम। शादी शुदा ज़िन्दगी को कामयाब बनाना औरत की सबसे बड़ी इबादत है। तुझे ख़ुश होना चाहिए कि अल्लाह ने तुझे अच्छी सूरत भी दी है और अच्छा कैरेक्टर भी। तुझे अक़्ल, सेहत, इल्म और सलीक़ा दिया है। फिर इस इम्तिहान से डरना क्या। अपनी ज़िम्मेदारियाँ संभालने के लिए उठ! हिम्मत और भरोसे से काम ले और आगे क़दम बढ़ा!

यह सफ़र तन्हाई का सफ़र नहीं है। तेरे माँ-बाप ने अपनी ताक़त भर कोशिश करके तेरे लिए सबसे अच्छा रिश्ता ढूँढा है। हमारे पास

अनदेखी बातों की तो जानकारी नहीं है लेकिन हमको ख़ुदा की रहमत से यह उम्मीद है कि तुम दोनों मिलजुल कर ज़िन्दगी की कठिन मँज़िलें आसान कर लोगे। याद रखो! मियाँ-बीवी मिलकर दुनिया पर भारी होते हैं और अलग हो कर दुनिया उन पर भारी होती है। हम दिल की गहराइयों से दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला तुम दोनों को आपसी ख़ुलूस और एक दूसरे की ख़िदमत का जज़बा, अक़्ल, सेहत, हिम्मत और ताक़त दे! नेक औलाद और उनकी ख़ुशियाँ दे! और जब इस दुनिया से उठाए तो ईमान और अमल की दौलत से मालामाल रखे! आमीन!

प्यारी नाज़! हम अपनी हैसियत भर तेरे लिए इस सफ़र का कुछ सामान दे रहे हैं, कुछ नग़द है, कुछ कपड़े हैं और कुछ दूसरी ज़रूरत की चीज़ें। ताकि जब तू अपना घर आबाद करे तो कुछ दिनों के लिए ही सही इन चीज़ों की फ़िक्र ना करे। हमें एहसास है कि यह कुछ चीज़ें ज़्यादा देर तेरे काम नहीं आएँगी और हम लोग इससे ज़्यादा कुछ कर भी नहीं सकते। लेकिन हम जहेज़ में तुझे एक ऐसा तोहफ़ा पेश कर रहे हैं जो बहुत क़ीमती है और ज़िन्दगी भर तेरे काम आ सकता है।

### यह तोहफ़ा क्या है?

यह हमारी मालूमात और तर्जुबों का निचोड़ है जिसे हम ने लिख दिया है। इसे पढ़ा करो! जब ज़ेहनी सुकून हो तब भी पढ़ना और अगर मुशकिलों का सामना हो तब भी पढ़ लेना। ख़ुदा चाहेगा तो इन मशवरों पर अमल करने से तुम्हारी पूरी शादी शुदा ज़िन्दगी हँसती-खिलखिलाती गुज़रेगी। यह मशवरे बहुत आसान हैं।

हाँ इनमें कहीं-कहीं नसीहतों का अन्दाज़ अपनाया गया है और नसीहतों से ज़्यादा कोई बात रूखी-सूखी और बेमज़ा नहीं होती लेकिन इसमें एक फ़ाएदा भी होता है। नसीहत में अलफ़ाज़ कम होते हैं और हमारा मानना है कि अलफ़ाज़ कम से कम और बचा कर इस्तेमाल करना चाहिएं।

बेटी! बात यह नहीं है कि हमारे लिखने और बताने का अन्दाज़ कैसा है, बात यह है कि तुम हमारी बातों को किस तरह अपने दिल और दिमाग़ में जगह देती हो। हमारे मशवरों को ख़ुशी-ख़ुशी मान लेना। इन्हें अपने गर्म ख़ून की लालियों में रचा लेना! आज से अपने देखने का अनदाज़ बदल दे! हमारे मशवरों की लिस्ट बहुत लम्बी है, बहुत सी ज़रूरी बातें छूट गई होंगी। ख़ुदा करे कि हमारी समझ-बूझ और तर्जुबे की कमी को तू अपनी समझ-बूझ और तर्जुबे से पूरा करे। इन मशवरों में बहुत सी बातें तेरे शौहर के लिए भी हैं।

यह मशवरे घर के अन्दर भी काम आाएंगे और बाहर भी। आज औरत की ज़िन्दगी चारदीवारी में सिमटी हुई नहीं है, अगरचे चारदीवारी उसका हेडक्वार्टर है। आज ज़िन्दगी ख़ासकर शदी शुदा औरत की ज़िन्दगी नित नए मसाएल से घिरी रहती है। बेवकूफ़ औरतें इन से डर जाती हैं, जबकि कोई इनसे पीछा नहीं छुड़ा सकता। तू अक़्ल का हथियार संभाल और इस मैदान में कूद जा! ज़रा सोच कि मुश्किलों का कितना बड़ा एहसान है कि वह हमारी सलाहियतों का इम्तेहान लेती हैं। हमारी पर्सनालिटी को मज़बूत और दिलेर बनाती हैं और हमें ज़्यादा बड़ी मुश्किलों से मुक़ाबला करने की ट्रेनिंग देती हैं। सख़्तियों और मुश्किलों में डाल कर ख़ुदा हमें कुन्दन बनाना चाहता है।

जान से प्यारी मेरी बेटी! बड़ी से बड़ी मुश्किल कुछ भी नहीं अगर तुम उसे खेल कूद समझो। मुश्किल तेरे लिए फ़ुटबाल है तू उसकी फ़ुटबाल नहीं है। दुनिया तेरी तरफ़ उम्मीद भरी निगाहों से देख रही है क्योंकि उसकी ख़ुशहाली तेरी ख़ुशहाली से है। तेरे फ़्यूचर में उसका फ़्यूचर है।

किसी जगह लिखा था कि एक आदमी ने ख़्वाब में देखा कि वह एक ऐसे माल गोदाम के पास पहुँचा जहाँ ख़ुदा की नेमतों का स्टॉक रखा हुआ था। सेहत, मुहब्बत, ख़ुशहाली, इल्म, भाईचारा, इन्साफ़, अक़्ल वग़ैरा। उस ने अपने साथी फ़रिश्ते से कहा कि दुनिया में बीमारियाँ, लड़ाई-झगड़ा, बेईमानी, नाइन्साफ़ी, लालच और शरारतें बहुत बढ़ गई हैं इसलिए इसमें से कुछ नेमतें मुझे दे दो ताकि मैं वहां ले जाऊँ।

फ़रिश्ते ने कहा कि ख़ुदा ने यह सारी नेमतें तुम्हें वहां दे दी हैं मगर बीज की शक्ल में, फल की शक्ल में नहीं। इस बीज से फल निकालना तुम्हारा काम है।

तो मेरी नाज़! दुनिया नाम है बीज से फल निकालने का, अक़्ल से, मुहब्बत से, सोच विचार से। हम तुझे कुछ गाइड-लाइंस दे रहे हैं, मेहनत और समझ-बूझ तेरा काम है। जैसे-जैसे ज़माना आगे बढ़ रहा है इल्म, अक़्ल, मेहनत और समझदारी की ज़रूरत और क़िस्में भी बढ़ती जा रही हैं।

एक सदी पहले घरेलू औरत का काम ज़्यादा नहीं होता था। अब इंटरनेशनल पॉलिटिक्स, मशीनी ज़िन्दगी, साइन्स की तरक़्क़ी, मुल्कों की जंगें, मँहगाई और नए इकोनॉमिक सिस्टम की वजह से उस की समाजी, बाहरी और घरेलू ज़िम्मेदारियां बहुत बढ़ गई हैं। लेकिन आज की औरत के लिए इसके ईनाम में मिलने वाला फल भी ज़्यादा मज़ेदार है।

वेस्ट्रन मुल्कों की ग़लत आज़ादी हो या एशियाई मुल्कों की हद से ज़्यादा पाबन्दी, दोनों ग़लत हैं। अब इनके बीच से सही रास्ता ढूढंना तेरा काम है।

किस ने कहा है कि औरत कमज़ोर होती है। बिल्कुल ग़लत! औरत बड़ी ताक़त रखती है। जिस्म में बेशक वह मर्दों से कमज़ोर है लेकिन बात जिस्मानी पहलवानी की नहीं है।

जब इन्सान बबर शेर को पिंजरे में बन्द कर सकता है तो क्या औरत मर्द को अपने कंट्रोल में नहीं ले सकती! रहीम व करीम ख़ुदा ने औरत को बहुत से ऐसे असलहे दिए हैं जिन की बदौलत वह मर्द पर हुकूमत कर सकती है। उन को पहचानने, तेज़ रखने और मौक़े पर इस्तेमाल करने का फ़न सीख ले और बस।

हाँ! किसने कहा कि औरत अक़्ल नहीं रखती। सरासर ग़लत! ज़िन्दगी के हर मैदान और हिस्ट्री के हर दौर में अज़ीम औरतों का नाम आता है। यह बात अलग है कि जिस्मानी एतेबार से नेचर ने कुछ काम करने की ताक़त सिर्फ़ औरत को दी है और कुछ कामों की ताक़त सिर्फ़ मर्दों को। दोनों के शौक़ और ख़्वाहिशें भी अलग-अलग हो सकती हैं लेकिन जहाँ तक अक़्ल और समझ-बूझ की बात है, दोनों में एक जैसी सलाहियतें हैं।

जिसने भी कहा है कि मर्द औरत के सर का ताज है, सही कहा है। जिस तरह एक महारानी की हुकूमत और ताक़त का निशान उसके सर का ताज है उसी तरह मर्द औरत का सब से क़ीमती ज़ेवर है, उसकी ताक़त है, उसके लश्कर का कमांडर है। मर्द औरत के बग़ैर इतना मजबूर नहीं होता है जितना औरत मर्द के बग़ैर। यूरोप वालों का यह कहना ग़लत है कि औरत और मर्द बराबर हैं। नेचर ने मर्द को सरदारी दी है क्योंकि कोई भी यूनिट हो चाहे वह घरेलू स्तर पर ही क्यों ना हो लीडर के बग़ैर नहीं रह सकती। इस सरदारी पर ना तो मर्द को घमंड करना चाहिए और ना औरत को डरना चाहिए क्योंकि दोनों एक दूसरे की ज़रूरत को पूरा करते हैं। दोनों हर मोड़ पर एक दूसरे के साथी हैं। एक के बग़ैर दूसरा बेकार है।

इसीलिए नाज़ी! तू किसी छोटेपन या बड़ाई के ग़लत एहसास में ना फँस जाना। सही बैलेन्स बनाए रखना। ज़िन्दगी की सारी ख़ुशियाँ बैलेन्स से हैं और बैलेन्स अक़्ल से।

ख़ुदा ने औरत के तरकश में तीन अचूक तीर रखे हैं जो मर्द के दिल में हर वक़्त पार हो सकते हैं। सही निशानेबाज़ी से हर मर्द हर औरत पर जान दे सकता है। उन तीन तीरों का नाम है, अक़्ल, कैरेक्टर और निसवानियत यानी औरत का औरतपन। ●

# मोमिन
## झूठा नहीं हो सकता

■ डॉ. कल्बे सिब्तैन नूरी

*एक बार रसूले ख़ुदा[स०] से पूछा गया कि या रसूलल्लाह! क्या मोमिन बुज़दिल हो सकता है?'' आपने फ़रमाया, ''हाँ।'' फिर सवाल हुआ, ''क्या मोमिन कंजूस हो सकता है?फ़रमाया, ''हाँ।'' फिर पूछा गया, ''क्या मोमिन झूठा हो सकता है?'' रसूले ख़ुदा[स०] ने फ़रमाया, ''नहीं।''*

*झूठ गुनाहे कबीरा है लेकिन हमारे समाज में झूठ इस आसानी और शिद्दत के साथ बोला जाता है जैसे कोई बात ही नहीं। जिधर देखो उधर झूठ। सियासत में झूठ, बिज़नेस में झूठ, मामलात में झूठ, यानी हर तरफ़ झूठ ही झूठ। झूठ को सिर्फ़ इस्लाम ही ने नहीं बल्कि दुनिया के हर मज़हब और धर्म ने नापसंद बताया है क्योंकि झूठ इन्सान के विक़ार और इज़्ज़त को ख़त्म कर देता है और मामलात (Affairs) को ख़राब कर देता है।*

*इस हदीस में साफ़ बताया गया है कि झूठ और ईमान एक साथ जमा नहीं हो सकते। इसीलिए मोमिन कभी झूठा नहीं हो सकता। इस हदीस के हिसाब से अगर हम अपने समाज का जाएज़ा लें तो मोमिनों की तादाद कितनी निकलेगी? यक़ीनन उंगलियों पर गिनने के क़ाबिल.......।* ●

# गोद के बोलते बच्चे

सै. आलिम हुसैन रिज़वी
रिटायर्ड असिस्टेंट जनरल मैनेजर
यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया, वाराणसी

बात कुछ यहाँ से शुरु होती है कि जब हज़रत अली[अ॰] की विलादत का वक़्त आया तो उनकी माँ जनाबे फ़ातिमा बिन्ते असद अपने घर से निकल कर काबे की तरफ़ आईं और काबे की दीवार से टेक लगाकर अल्लाह से दुआ की कि उनकी मुश्किल आसान हो। यहाँ मैं यह बताता चलूँ कि पहली बात तो यह कि 1400 साल पहले अस्पताल या नर्सिंग होम का कोई वुजूद नहीं था और विलादतें घरों में होती थीं जिनको तजुर्बेकार दाईयाँ अंजाम देती थीं। दूसरे यह कि अगर नर्सिंग होम होते भी तो काबा कोई नर्सिंग होम तो था नहीं कि जनाबे फ़ातिमा बिन्ते असद काबे का रुख़ करतीं। मानना पड़ेगा कि यह एक इलाही हिदायत थी जिसे मानते हुए आप काबे के क़रीब गईं और अल्लाह से दुआ माँगी। उसी इलाही इन्तिज़ाम के तहत आप जिस दीवार से लगी खड़ी थीं, वह दीवार फटी और अंदर जाने का रास्ता बना और आप काबे के अंदर दाख़िल हो गईं। यहाँ फिर मैं आपसे सवाल करता हूँ कि क्या आपको जनाबे फ़ातिमा बिन्ते असद के अमल पर ताज्जुब नहीं होता। अरे! उस ज़माने की बात छोड़िए। आज के ज़माने में अगर ऐसा हुआ होता तो औरत तो औरत, मर्द अंदर दाख़िल होना तो दरकिनार काबे से बहुत दूर चले जाते। यहाँ फिर यह मानना पड़ेगा कि जनाबे फ़ातिमा बिन्ते असद को इस इलाही इंतिज़ाम की पहले से ही ख़बर थी और इसीलिए वह बजाए डरने के इत्मीनान से काबे के अंदर दाख़िल हो गईं और वहाँ हज़रत अली[अ॰] की विलादत हुई। आपके इस अमल ने अल्लाह के नज़दीक आपके मरतबे को भी दुनिया पर ज़ाहिर कर दिया। दूसरे ताज्जुब के लिए भी तैयार रहिए! क्या कभी ऐसा हुआ है कि किसी इन्सान की बीवी जिसके यहाँ विलादत होने वाली हो, कुछ बताए बिना कम से कम तीन दिन घर से ग़ायब रहे और उसके ठिकाने का भी पता न हो और वह इन्सान घर में बैठा रहे। यह अमल इस बात को मानने के लिए मजबूर कर रहा है कि इस इलाही इंतेज़ाम की ख़बर हज़रत अली[अ॰] के वालिद हज़रत अबू तालिब[अ॰] को भी थी। यह वाक़िआ हज़रत अबू तालिब के अल्लाह के नज़दीक मरतबे को भी बताता है।

बहरहाल जब हज़रत अली[अ॰] की विलादत के बाद जनाबे फ़ातिमा बिन्ते असद ने बाहर आना चाहा तो फिर वही दीवार फटी, उसमें दर बना और आप हज़रत अली[अ॰] को लेकर बाहर आईं। बाहर हज़रत मोहम्मद[स॰] (उस वक़्त तक एलाने नुबुव्वत नहीं हुआ था) और हज़रत अबू तालिब[अ॰] आपका इंतेज़ार कर रहे थे। आप ने रसूलुल्लाह[स॰] से कहा कि बच्चे ने आँखें नहीं खोली हैं। जैसे ही रसूले ख़ुदा ने हज़रत अली[अ॰] को अपनी गोद में लिया, आप ने अपनी आँखें खोल दीं। इसके बाद हम सुनते रहते हैं कि हज़रत अली[अ॰] ने तौरेत, ज़बूर, इंजील और क़ुरआन की तिलावत रसूल[स॰] की गोद में की। जिस पर कुछ लोग तनक़ीद करते हैं कि ऐसा कैसे हो सकता है? भला गोद का बच्चा भी बोल सकता है? इसका जवाब मैं नहीं ख़ुद क़ुरआन मजीद देगा।

आइए! हम सबसे पहले गोद के उन बोलते बच्चों पर रौशनी डालते हैं जिनका ज़िक्र क़ुरआन मजीद ने किया है।

## हज़रत ईसा[अ॰]

जब जनाबे मरयम जो कुँआरी और पाक दामन थीं, अल्लाह के हुक्म से हामिला हुईं और हज़रत ईसा पैदा हुए तो चूँकि यह बच्चा बग़ैर किसी से शादी हुए पैदा हुआ था इसलिए उस इलाक़े में हंगामा बरपा हो गया और लोग उनको बुरा-भला कहने लगे। चूँकि हर मुसलमान का क़ुरआन पर ईमान है और ऐसा न होने पर वह मुसलमान की सफ़ से निकल जाएगा इसलिए हम आगे का वाक़िआ क़ुरआन की ज़बानी बयान करते हैं, "फिर मरयम बच्चे (हज़रत ईसा[अ॰]) को उठाए हुए अपनी क़ौम के पास आईं तो लोगों ने कहा कि मरयम! यह तो तुमने बहुत बुरा काम किया है। ऐ हारून की बहन! न तो तुम्हारा बाप ही बुरा आदमी था और न तुम्हारी माँ बदकिरदार थी। मरयम ने उस बच्चे की तरफ़ इशारा कर दिया तो क़ौम वालों ने कहा कि हम उस बच्चे से कैसे बात करें जो गहवारे में है। (इस पर) उस बच्चे ने आवाज़ दी कि मैं अल्लाह का बंदा हूँ, उसने मुझे किताब दी है और मुझे नबी बनाया है।" [1]

यूँ तो गोद के दूसरे बच्चे इस बच्चे से पहले बोल चुके थे लेकिन चूँकि यह बोलने वाला बच्चा नबी था इसलिए यह ज़िक्र पहले हुआ।

### हज़रत यूसुफ़ का गवाह बच्चा

हज़रत यूसुफ़ पैग़म्बर जब गुलाम बनाकर मिस्र लाए गए तो अज़ीज़े मिस्र ने उन्हें अपने घरेलू कामों के लिए अपने घर में रख लिया। चूँकि हज़रत यूसुफ़ बहुत ख़ूबसूरत थे इसलिए अज़ीज़े मिस्र की बीवी ज़ुलैख़ा उन पर आशिक़ हो गई। उसने हज़रत यूसुफ़ को अपना बनाने के लिए घर के सारे दरवाज़े बंद कर दिए और अपना मतलब बयान किया। हज़रत यूसुफ़ चूँकि नबी और मासूम थे इसलिए आप ने इनकार किया और ज़ुलैख़ से बचने के लिए सदर दरवाज़ा खोलने के लिए दौड़ पड़े। ज़ुलैख़ा ने उनको पकड़ने की कोशिश की। हज़रत यूसुफ़ की क़मीज़ का पिछला हिस्सा इस पकड़-धकड़ में फट गया। जैसे ही हज़रत यूसुफ़ दरवाज़ा खोलने में कामयाब हुए, उन्होंने दरवाज़े पर ज़ुलैख़ा के शौहर अज़ीज़े मिस्र को खड़ा पाया। ज़ुलैख़ा ने फ़ौरन हज़रत यूसुफ़ पर ज़बरदस्ती करने का इल्ज़ाम लगाया। जबकि हज़रत यूसुफ़ ने इससे इनकार किया। उस वक़्त वहाँ झूले में एक दूध पीता बच्चा भी लेटा था। हज़रत यूसुफ़ ने कहा कि बच्चा यहाँ के तमाम वाक़िआत का गवाह है, इस से पूछा जाए। यहाँ से क़ुरआन का बयान पढ़िए, "उस पर (ज़ुलैख़ा के ही) घर वालों में से एक गवाह (दूध पीते बच्चे) ने गवाही भी दे दी कि अगर उनका (हज़रत यूसुफ़[अ॰]) कुर्ता सामने से फटा है तो वह (ज़ुलैख़ा) सच्ची है और यह (यूसुफ़) झूठों में से हैं। और अगर उनका कुर्ता पीछे से फटा है तो वह झूठी और यह सच्चों में से हैं। फिर जो देखा कि उनका कुर्ता पीछे से फटा है तो उसने कहा कि यह तुम औरतों की मक्कारी है।" [2]

यहाँ एक ग़ैर मुताल्लिक़ बच्चा झूले में से एक नबी की इस्मत की गवाही में बोला है।

### ख़ंदक़ वालों (अस्हाबुल उख़दूद) में का एक बच्चा

इन ख़ंदक़ वालों का एक हल्का सा ख़ाका क़ुरआन मजीद ने सुरए बुरूज आयत 4-8 में खींचा है। यहाँ एक नबी आए थे और उनके बहुत से अस्हाब ने उनकी पैरवी की थी लेकिन उनके न मानने वाले उन से लड़े और नबी को शहीद कर दिया। तब लोगों ने ख़ंदक़ें खोदीं जिन्हें आग से भर दिया और यह धमकी दी कि या तो वह लोग नबी का बताया हुआ रास्ता छोड़ दें वरना उन सब को इस आग में झोंक दिया जाएगा। बहुत से लोग डर कर नबी के रास्ते से हट गए मगर कुछ डटे रहे और शहीद होते रहे। नबी के मानने वालों में एक औरत भी थी। वह आग में कूदने ही वाली थी कि उसने अपने दो महीने के बच्चे को देखा। उस बच्चे के ख़याल से उसका इरादा बदलने वाला ही था कि वह बच्चा बोल उठा, "ऐ माँ! तुम अपने आप को आग के हवाले कर दो। यह अल्लाह की राह में बहुत थोड़ा अमल है।" [3]

### फ़िरऔन की बेटी के बाल संवारने वाली का बेटा

फ़िरऔन की बेटी के बाल संवारने वाली अल्लाह और हज़रत मूसा[अ॰] पर ईमान रखती थी। एक दिन वह फ़िरऔन की बेटी के बालों में कंघा कर रही थी मगर कंघा गिर गया। उसने उसे उठाते वक़्त अल्लाह का नाम लिया। बेटी ने ताज्जुब से पूछा कि क्या तुम्हारा मतलब मेरे बाप से है। उस औरत ने जवाब दिया नहीं, बल्कि वह जो मेरा, तुम्हारा और तुम्हारे बाप का भी मालिक है। बेटी से यह बात मालूम होने पर फ़िरऔन ने उस औरत के बच्चों को एक के बाद एक ज़िंदा दहकती हुई आग में फेंकना शुरु किया। वह औरत यह मंज़र देखती रही लेकिन जब उसका नया पैदा बच्चा फेंका जाने वाला था तो उसके सब्र का दामन छूट गया। ऐसे में उसका वह छोटा सा बेटा बोला, "ऐ माँ! सब्र करो क्योंकि तुम सही रास्ते पर हो।" यह सुनकर माँ का इरादा मज़बूत हो गया। पहले बच्चा फिर बाद में माँ शहीद हो गई। [4]

अब एतेराज़ करने वाले ख़ुद इंसाफ़ से काम लें कि जब हज़रत ईसा, ज़ुलैख़ा के घर का बच्चा, ख़ंदक़ वालों का बच्चा और फ़िरऔन की नौकरानी का बच्चा यह सब गोद में बोल सकते हैं तो फिर हज़रत अली[अ॰] गोद में क्यों नहीं बोल सकते जबकि अल्लाह ने हज़रत मोहम्मद[स॰] की रिसालत का एलान उनके पैदा होने तक रोक दिया था क्योंकि हज़रत अली[अ॰] को ही रसूल का गवाह और नासिर बनना था।

1-सूरए मरयम/27-30, 2-सूरए यूसुफ़/26-28, 3-बिहारुल अनवार, 4-बिहारुल अनवार



# पानी

■ सै. आले हाशिम रिज़वी

*आसमान से गिरता है*
*तो बारिश कहलाता है*
*ज़मीन से आसमान पर*
*भाँप बनकर जाता है*
*जम कर गिरे तो*
*ओला कहते हैं उसे*
*गिर कर जम जाए अगर*
*तो बर्फ़ कहा जाता है*
*फूलों पर गिरता है*
*वह शबनम बनकर*
*फूलों से निकलता है*
*अर्क़ की सूरत लेकर*
*भर आती हैं जब आँखें*
*छलकता है आँसू बनकर*
*पहाड़ों से गिरता है*
*वह झरने की तरह*
*ज़मीन से निकलता है*
*वह चश्मे की तरह*
*नबी के क़दमों से निकले*
*तो ज़मज़म है यह*
*जन्नत में बहे अगर*
*तो कौसर है यह*
*अल्लाह की नेमत है पानी*
*ज़िंदगी की ज़रूरत है पानी।।*

■ शहीद लखनवी

# हुसैन ऐसे थे

बग़ौर सुन ले ज़माना, हुसैन[अ०] ऐसे थे
बक़ा, फ़ना को बनाया, हुसैन[अ०] ऐसे थे।
छुरी के नीचे वह ख़ालिक़ से प्यार की बातें
अजल को हो गया सकता, हुसैन[अ०] ऐसे थे।
मुख़ालेफ़त पे ज़माना था उस तरफ़ लेकिन
वही किया जो कहा था, हुसैन[अ०] ऐसे थे।
सिपाहे शाम शुजाअत का लोहा मान गई
दबे न लाखों से तन्हा, हुसैन[अ०] ऐसे थे।
कमर को बाँध के पीरी में जलती रेती से
उठाया बेटे का लाशा, हुसैन[अ०] ऐसे थे।
जवाँ की लाश उठाई, बनाई क़ब्रे सग़ीर
कहीं भी अज़्म न बदला, हुसैन[अ०] ऐसे थे।
हज़ार शुक्र के सजदे 'शहीद' करता है
बनाया क़तरे को दरिया, हुसैन[अ०] ऐसे थे।

मौलाना अख़्तर अब्बास जौन
क़ुम, ईरान

# करबला

**सवालः** इमाम हुसैन[अ॰] ने फ़रमाया हैः ''मैंने अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर के लिए क़याम किया है'' इसका क्या मतलब है?

**जवाबः** इमाम के इस क़ौल से यह बात पूरी तरह से समझ में आ जाती है कि इमाम के क़याम और करबला के वाक़िए में अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर की बुनियादी जगह है। यानी इमाम का असली मक़सद यही है कि नेकी और अच्छाईयों के बारे में लोगों को बताया जाए और उन पर अमल करने का हुक्म दिया जाए। साथ ही बुराई और वह चीज़ें जो ख़ुदा को नापसंद हैं उनसे दूर रहने का हुक्म भी दिया जाए।

असल में अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर सारे नबियों, इमामों और मोमिनीन की ज़िम्मेदारी है।

क्योंकि इस माद्दी दुनिया में अच्छाई व बुराई, हक़ व बातिल जैसे दोनों पहलू मौजूद हैं जिनमें फ़र्क़ करना बहुत मुश्किल काम है। ऐसे में ख़ुदा का भेजा हुआ दीन, अच्छाई व बुराई और हक़ व बातिल को पहचनवाकर अच्छाइयों पर अमल करने और बुराईयों से दूर रहने का हुक्म देता है।

रसूले ख़ुदा[स॰] फ़रमाते हैं, ''अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर करने वाला ज़मीन पर ख़ुदा, किताबे ख़ुदा और रसूले ख़ुदा का जानशीन है''।[1]

हज़रत अली[अ॰] फ़रमाते हैं, शरीअत अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर की वजह से क़ाएम है''।[2]

ख़ुदावंदे आलम ने क़ुरआन में मोमिनीन के सिफ़ात में अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर को नमाज़ क़ाएम करने, ज़कात देने और ख़ुदा व रसूल की इताअत करने जैसे दूसरे सिफ़ात से भी आगे रखा है।

इमाम बाक़िर[अ॰] फ़रमाते हैं, ''अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर पैग़म्बरों का रास्ता है, यह अच्छे लोगों का काम है। यह वह वाजिब है कि जिसकी वजह से सारे वाजिबात बाक़ी हैं, रास्तों का अम्नो-अमान इसी की वजह से है, हलाल कमाई इसी की वजह से है, इसी की वजह से दुश्मन भी इंसाफ़ का ध्यान रखता है और सारे काम इसी की वजह से ठीक होते हैं''।[3]

इसलिए अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर सिर्फ़ इमाम हुसैन[अ॰] की ही नहीं बल्कि

सारे नबियों, इमामों और मोमिनीन की ज़िम्मेदारी है।

इमाम हुसैन[अ] के ज़माने में अच्छाइयों और बुराइयों के बीच बहुत ज़्यादा फ़र्क़ नहीं रह गया था और बुराइयाँ ज़माने में बहुत ज़्यादा फैल गई थीं जैसा कि आप ने खुद फ़रमाया कि "क्या तुम नहीं देखते हो कि हक़ पर अमल नहीं किया जा रहा है और बातिल से रोका नहीं जा रहा है। ऐसे में हम मौत को कामयाबी और ज़ालिमों के साथ ज़िंदगी को ज़िल्लत की ज़िंदगी समझते हैं"।

इसीलिए आपने क़याम किया और इसकी बुनियाद अपने नाना की उम्मत की इस्लाह यानी अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर को बनाया।

**सवालः** अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर की शर्तों में से यह भी है कि कोई ख़तरा या नुक़सान न हो। इमाम हुसैन[अ] ने ऐसे ख़तरे में क्यों क़याम किया?

**जवाबः** किसी चीज़ के जाएज़ होने की दलील यह है कि इमामों ने उसे अंजाम दिया हो क्योंकि उनकी सीरत शरई अहकाम के लिए दलील है।

अगर यह मान भी लिया जाए कि इमाम हुसैन[अ] के क़याम को दूसरी दलीलों की रौशनी में देखा जाए तो अगर मसलेहत और मक़सद ज़्यादा अहम हो तो अम्र बिल मारूफ़ व नहीं अनिल मुन्कर के वाजिब होने के लिए यह दो शर्तें ज़रूरी नहीं हैं। यानी अगर अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर उस ख़तरे के मुक़ाबले में ज़्यादा अहम हो तो उस ख़तरे या नुक़सान को बर्दाश्त करना ज़रूरी है। जैसे अगर अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर दीन की बक़ा के लिए हो तो ऐसे में सब कुछ बर्दाश्त किया जा सकता है बल्कि करना चाहिए।

यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुनकर दो तरह के हैं।

एक तो यह कि लोगों को गुनाह से रोकने और खुदा की इताअत के लिए हो। यह आम अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर है। यह वही सूरत है जिसमें नुक़सान का ख़तरा न होने की शर्त है।

दूसरे यह कि जो दीन की बक़ा या उसकी हिफ़ाज़त के लिए या उसको ज़िंदा करने के लिए हो कि जिसके न करने से पूरी क़ौम या दीन का नुक़सान होता हो। जैसे यज़ीद की हुकूमत में दीन के ख़त्म ही हो जाने का ख़तरा पैदा हो गया था। इस मौक़े पर हर तरह की क़ुर्बानी देकर और हर तरह का ख़तरा मोल लेकर अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर वाजिब है।

जैसा कि इमाम हुसैन[अ] ने खुद फ़रमाया था, "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजूऊन व अलल इस्लामि अस्सलाम" यानी हम अल्लाह के लिए हैं और हमें अल्लाह की तरफ़ ही जाना है। ऐसे इस्लाम पर सलाम हो जिसकी उम्मत का ख़लीफ़ा यज़ीद जैसा शख़्स है।

इमाम वह आयत पढ़ रहे हैं जो आमतौर पर मुसीबत के वक़्त पढ़ी जाती है और इसके बाद आप फ़रमा रहे हैं कि उस इस्लाम पर हमारा सलाम हो जिसका हाकिम यज़ीद जैसा शख़्स हो।

ऐसे ख़तरे के मुक़ाबले में क़याम करना और दीन को बचाना हर हाल में हर शख़्स की ज़िम्मेदारी है।

**सवालः** इस्लामी अहकाम पर अमल करने की एक शर्त यह भी है कि इंसान में उस काम को करने की ताक़त भी हो। फिर इमाम हुसैन[अ] ने इतनी ज़ालिम हुकूमत के मुक़ाबले में क़याम क्यों किया?

**जवाबः** सबसे पहले तो यहाँ वही बात कही जाएगी जो इस से पहले वाले सवाल में कही गई है कि किसी चीज़ के जाएज़ होने की दलील यह है कि इमामों ने उसको अंजाम दिया हो। इसलिए कि उनकी सीरत शरई अहकाम के लिए दलील है।

यहाँ पर आमतौर से यह ग़लती होती है और यह कहा जाता है कि इस काम की हमारे पास ताक़त नहीं है और इस्लाम ने भी यही कहा है कि जिस चीज़ की ताक़त न हो उसको न करो।

ऐसा नहीं है बल्कि जिस चीज़ की ताक़त न हो उसकी ताक़त पैदा करने की कोशिश करना चाहिए।

यह न कहिए कि ताक़त नहीं है, हम मजबूर हैं या तन्हा हैं। हम न इमाम हुसैन[अ] की तरह तनहा, न जनाबे ज़ैनब[स] की तरह मजबूर और न इमाम सज्जाद[अ] की तरह क़ैद हैं।

जिस तरह से इंसान हज के लिए वीज़े और टिकट का इंतेज़ाम करता है, वहाँ यह नहीं कहता कि क्या करें हमारे पास तो वीज़ा ही नहीं है, हम कैसे जाएं। इसी तरह से दूसरे सारे शरई अहकाम पर अमल करने के लिए भी उसको पूरी कोशिश करनी चाहिए।

**सवालः** कुछ लोग ख़ास कर जवान यह कहते हैं कि मसाएब सुनकर रोना नहीं आता। ऐसा क्यों है और इसका हल क्या है?

**जवाबः** असल में रोना एक नेचरल चीज़ है जिसका ताल्लुक़ इंसान के दिल और जज़्बात से है। इंसान जिसको जितना ज़्यादा पहचानता है, उसे उस से उतनी ही मोहब्बत होती है और जितनी मोहब्बत होती है उसकी तकलीफ़ पर उतना ही रोना आता है। एक माँ अपने बेटे की तकलीफ़ पर तड़प जाती है मगर दूसरों की तकलीफ़ से उस पर

मरयम
Nov 2012
Monthly Coupon
ड्रॉ में शामिल होने के लिए
10 कूपन जमा करके हमें भेजिए।

इतना असर नहीं होता।

जैसे सड़क पर एक्सीडेंट में मरे हुए ज़ख़्मी और लहूलहान आदमी को देखकर अफ़सोस तो सभी को होता है मगर हर आदमी वहाँ बैठकर रोता नहीं है। मगर वही इंसान अपने घर में नार्मल मौत में मरे हुए अपने किसी रिश्तेदार को देखकर फूट-फूट कर रोता है। दोनों में क्या फ़र्क़ है? मौत तो उसकी ज़्यादा दर्दनाक थी। मगर क्योंकि उसको ज़्यादा क़रीब से पहचानता था इसलिए आँसू निकल आए।

शायद हमारे पास अहलेबैत[अ॰] की पहचान और मारफ़त कम है, इसलिए मसाएब सुनकर भी रोना नहीं आता।

इसका इलाज यह है किः

1- अहलेबैत[अ॰] की तारीख़ को पढ़कर उनकी सीरत को समझने की कोशिश करें।

2- उनके अक़वाल को पढ़कर उन पर ग़ौर व फ़िक्र करें।

इस तरह उनकी मारफ़त बढ़ेगी और उसके नतीजे में मोहब्बत बढ़ेगी और जब मोहब्बत बढ़ेगी तो आँसू खुद बखुद निकल आएंगे।

**सवालः** अज़ादारी[अ॰] का फ़लसफ़ा और इसके फ़ाएदे क्या हैं?

**जवाबः** यक़ीनन अहलेबैत[अ॰] पर अज़ादारी के बहुत सारे फ़ाएदे और फ़लसफ़े हैं:

**पहलाः मोहब्बत और दोस्ती**

खुदावंदे आलम ने अहलेबैत[अ॰] से मोहब्बत मुसलमानों पर वाजिब की है।

"यही वह फ़ज़्ले अज़ीम है जिसकी बशारत परवरदिगार अपने बंदों को देता है जिन्होंने ईमान इख़्तियार किया है और नेक आमाल किए हैं तो आप कह दीजिए कि मैं तुम से इस तबलीग़े रिसालत का कोई अज्र नहीं चाहता अलावा इसके कि मेरे अक़रबा से मोहब्बत करो"।[4]

सच्ची मोहब्बत का मतलब यह होता है कि जिस से मोहब्बत हो उसकी खुशी में खुश और उसके ग़म में ग़मगीन हो।

हज़रत अली[अ॰] फ़रमाते हैं, "हमारे शिया वह हैं जो हमारी खुशी में खुश और हमारे ग़म में ग़मगीन हो जाएं।"[5]

**दूसराः अपनी इस्लाह**

अज़ादारी, अहलेबैत[अ॰] की मारफ़त और पहचान की बुनियाद पर है जिसमें उनके फ़ज़ाएल व मक़सदों को याद किया जाता है। इस तरह इंसान उनको अपना आइडियल बनाता है। अगर कोई अहलेबैत[अ॰] को अपना आइडियल बनाकर उनकी सीरत पर अमल करने लगे तो उसकी इस्लाह के लिए इससे अच्छा और क्या रास्ता होगा।

**तीसराः समाज की इस्लाह**

मजलिसें इंसान की इस्लाह के साथ-साथ अहलेबैत[अ॰] की तालीमात को समाज में फैलाती हैं, और समाज उस रास्ते पर बढ़ने लगता है जो अहलेबैत अतहार[अ॰] और हक़ीक़ी इस्लाम का रास्ता है।

**चौथाः अपने मज़हब का आने वाली नस्ल में ट्रांस्फ़र**

हमारे बच्चे जो कि नई और आने वाले कल की नस्ल हैं, उनकी तरबियत और इस्लाह एक बहुत बड़ा काम है। इन मजलिसों के ज़रिए इस्लाह व तरबियत के साथ-साथ अहलेबैत की मारफ़त और दीन की तालीमात अगली नस्ल तक ट्रांस्फ़र होती हैं।

इन सबके अलावा अज़ादारी से हमारा कल्चर इस्लामी होता है और इबादत, ईसार, शुजाअत, तवक्कुल, सब्र, अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर, बा मक़सद मौत, ज़ालिम से बेज़ारी और मज़लूम की हिमायत वग़ैरा जैसे दर्स मिलते है।

**सवालः** *"कुल्लु यौमिन आशूरा व कुल्लू अर्ज़ि कर्बला"* का क्या मतलब है?

**जवाबः** सबसे पहले हमको यह समझना चाहए कि आशूरा का मक़सद क्या था।

जिस वजह से आशूरा है वह यह है कि यज़ीद और उसकी हुकूमत दीने इस्लाम के लिए ख़तरा बन गई थी और वह दीन को बदल कर कुफ़्र फैलाना चाहता था।

दीन को ऐसे ख़तरनाक मोड़ पर देखकर इमाम हुसैन[अ॰] ने यज़ीद ही नहीं बल्कि यज़ीदियत के मुक़ाबले की शुरुआत का एलान इस तरह किया, "हमारे जैसे तुम्हारे जैसों की बैअत नहीं कर सकते।"

यह जुमला बता रहा है कि आज इमाम[अ॰] जिस जंग को छेड़ रहे हैं वह क़यामत तक बाक़ी रहेगी। जगहें बदलेंगी, दिन बदलेंगे और जंग की शक्ल बदलेगी मगर यज़ीदियत और हुसैनियत के बीच जंग हर हाल में जारी रहेगी।

इसका मतलब यह है कि जब भी यज़ीदियत किसी भी शक्ल में दीन के लिए ख़तरा बन जाएगी कोई न कोई हुसैनी उसका मुक़ाबला करेगा, और यह मुक़ाबला जिस दिन हो वह आशूरा और जहाँ भी हो वह करबला है क्योंकि हक़ व बातिल का मुक़ाबला हर रोज़ होता है। इसलिए हर दिन आशूरा और हर जगह करबला है। इस तरह यह जुमला साबित करता है कि करबला आज भी ज़िंदा है और क़यामत तक ज़िंदा रहेगी।

1-मीज़ानुल हिक्मत, 3/80, 2-ग़ुरर, 2/400, 3-उसूले काफ़ी, 5/1, 4- सूरए शूरा/23, 5-बिहार, 44/287

# परवरिश के बारे में क़ुरआन का पैग़ाम

■ इब्राहीम मज़ाहिरी

बच्चों की तरबियत और परवरिश के सिलसिले में सबसे पहला काम ख़ुद अपनी तरबियत करना है। यह बात हमें याद रखनी चाहिए कि जिसमें ख़ुद अख़्लाक़ी सिफ़तें न हों वह किसी दूसरे को भी पाकीज़गी और अच्छाई का रास्ता नहीं दिखा सकता। ग़ुस्सैल और चिड़चिड़े पैरेंट्स से नर्म मिज़ाज बच्चा वजूद में नहीं आ सकता।

बच्चा पैदाईशी तौर पर विरासत में अपने पैरेंट्स से कई तरह की सिफ़तें लेता है, लेकिन इसके अलावा मां-बाप का किरदार और अंदाज़ भी बच्चे की ज़िंदगी पर गहरा असर डालता है। बहुत ही ताज्जुब की बात है कि कुछ पैरेंट्स इस सिलसिले में बग़ैर कुछ किए यह उम्मीद रखते हैं कि उनके बच्चे भी अच्छे होंगे। यह कैसे मुमकिन है कि बच्चा अदब और अख़्लाक़ वाला हो जबकि उसके बड़े एक दूसरे से बदतमीज़ी से बात करते हों। क्या आपने ऐसा सुना है कि किसी बदअख़्लाक़ और बेअदब घराने का बच्चा बड़ा होकर लोगों की आंख का तारा और उनका नूरे नज़र बन जाए? बिल्कुल नहीं! क़ुरआन इस बारे में फ़रमाता है, "क्या तुम लोगों को नेकियों का हुक्म देते हो और ख़ुद को भूल जाते हो।" [1]

इसलिए वह तमाम बातें जो हम अपने बच्चों में देखना चाहते हैं उनको सबसे पहले अपने अंदर तलाश करें और वह जैसे भी हैं, ख़ुश अख़्लाक़ या बदअख़्लाक़, सच्चे या झूठे, हसद करने वाले या ख़ुद ग़र्ज़, इसकी वजहें हमें कहीं और नहीं बल्कि ख़ुद अपने अंदर तलाश करना होंगी।

इमाम ख़ुमैनी इस बारे में फ़रमाते हैं, "जो शख़्स चाहता है कि किसी समाज का मुरब्बी बने या किसी इदारे की तरबियत करे या उसे दीन की दावत दे, तो पहले उसे चाहिए कि अपने आपको दीनी बनाए और फिर दीन की दावत दे। ख़ुद दीनदार बने ताकि दूसरों को दीनदार बना सके। अगर ख़ुद को दीनदार न बनाए तो दूसरों को भी दीनदार नहीं बना सकता।"

ख़ुदा ने लोगों के लिए हादी भेजे और पैग़म्बरों को चुना। ऐसे लोगों को चुना जो बचपन से आख़िरी उम्र तक ग़ल्तियां नहीं करते, मासूम होते हैं। अल्लाह ने ऐसे ही लोगों को चुना कि वह लोगों की तरबियत और परवरिश करें, तज़किया करें और तालीम दें।

### फ़ैमिली को आग से बचाए रखना

घर बच्चे की परवरिश और ज़िंदगी के लिए पहली सीढ़ी है, इसलिए उसे हर तरह की ख़राबी से बचाना पहला काम है। बच्चे घर से पहले न किसी दूसरी जगह से असर लेते हैं और न ही कोई बाक़ाएदा आदत अपनाते हैं। वह इंसानी और दीनी टीचिंग्स और ज़िंदगी के चलन घर के अंदर ही सीखते हैं क्योंकि उनकी ज़िंदगी के शुरुआती दिन पैरेंट्स के नज़दीक घर ही में गुज़रते हैं और कम उम्री में जो बातें वह घर में सीख लेते हैं किसी दूसरी जगह नहीं सीख सकते।

फ़ैमिली वह पहला सोशल माहौल है कि जिसमें बच्चा आगे के लिए तैयार होता है और पैरेंट्स ही उसको नेक या बुरा बनाते हैं। ख़ुदा ने इस माहौल के अस्ली ज़िम्मेदारों को यूँ ख़तरे की जानकारी दी है, "ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन इंसान और पत्थर होंगे जिस पर वह फ़रिश्ते बैठे होंगे जो सख़्त मिज़ाज और तुंद व तेज़ हैं और ख़ुदा के हुक्म की

मुख़ालेफ़त नहीं करते हैं। और जो हुक्म दिया जाता है उसी पर अमल करते हैं।"[2]

क्या वाक़ई पैरेंट्स ने अपने घर वालों को दुनियावी और उख़रवी भड़कती हुई आग से बचाने के लिए और उनकी परवरिश के लिए कोई बेहतर रास्ता अपनाया है?वैसे इस बात का भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि माँ बच्चों की तरबियत और परवरिश में ज़्यादा वक़्त लगाती है और अहम रोल अदा करती है लेकिन साथ ही उसे यह भी चाहिए कि परवरिश के मामले में बाप को ध्यान भी दिलाती रहे। यह नामुमकिन है कि नेक और ज़िम्मेदार माँ-बाप के बग़ैर नेक औलाद परवरिश पा सके।

क़ुरआन और इस्लामी टीचिंग्स के मुताबिक़ एक वक़्त ऐसा भी आएगा कि ग़ैर ज़िम्मेदार पैरेंट्स और उनके ख़ताकार बच्चे जहन्नम में एक साथ अज़ाब का मज़ा चखेंगे। हांलाकि वह रास्ते पर चलने और जन्नत की तरफ़ जाने की कोशिश कर सकते थे लेकिन अपनी सुस्ती और हिमाक़त की वजह से अब वह ज़लील व ख़्वार होंगे और एक दूसरे पर होता हुआ अज़ाब देखेंगे।

"ऐ रसूल[स०]! कह दीजिए कि असली घाटे वाले वही हैं जिन्होंने ख़ुद को और अपने घर वालों को क़यामत के दिन घाटे में रखा। जान लो कि यही खुला हुआ घाटे है।"[3]

ऐसे पैरेंट्स न सिर्फ़ यह कि ख़ुद फ़ायदा नहीं उठा पाते बल्कि अपनी असल दौलत यानी अपनी और अपने बच्चों की अनमोल ज़िंदगी भी बर्बाद कर बैठते हैं। उनकी मिसाल एक ऐसे बर्फ़ बेचने वाले की सी है जो सख़्त गर्मी में खड़ा हो और बर्फ़ यानी उसकी असल पूँजी हर लम्हा पानी बनती जा रही हो। दर हक़ीक़त किसी भी शख़्स की फ़ैमिली उसकी असल पूँजी है जो सही रास्ते से भटक जाने की वजह से ख़ुद को और अपने ख़ानदान को जहन्नम में ढकेल देता है जबकि उनकी सही परवरिश इस बात की वजह बन जाती है कि जन्नत में एक दूसरे के साथ रहें। यही वह जगह है जहां बेऔलाद लोग उन लोगों के मुक़ाबले में जो इस से ज़्यादा बचे हुए होंगे जो बच्चों की ग़लत तरबियत करने की वजह से जहन्नम के रास्ते पर चले जाएंगे।

किसी ने रसूले ख़ुदा[स०] से पूछा कि अपने घर वालों को आग से कैसे बचाएं?तो आप[स०] ने फ़रमाया, "उन्हें अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुनकर करो। अगर तुम्हारी बात मान जाएं तो तुम ने उन्हें आग से बचा लिया और अगर न मानें तब भी तुमने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर दी।"

एक और जगह पर रसूल[स०] फ़रमाते हैं, "जान लो कि तुम सब निगेहबान हो और तुम सब इस सिलसिले में जिसकी निगेहबानी कर रहे हो, उसके ज़िम्मेदार हो। इस्लामी हुकूमत का हाकिम, लोगों का निगेहबान है और इस सिलसिले में जवाबदेह है। मर्द अपने घर वालों का निगेहबान और मसऊल है और औरत शौहर के ख़ानदान और बच्चों की नेगहबानी के सिलसिले में जवाबदेह है।"

इस बारे में इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं, "ख़ुद को और अपने घर वालों को नेकी की तालीम दो और उन्हें बाअदब बनाओ।"

इस तरह यह बात साफ़ हो गई कि अच्छाई और बुराई का असल फैक्टर घरों में छुपा है और पैरेंट्स की ग़लत तरबियत और परवरिश की वजह से ही समाज बिगड़ जाया करते हैं।

औलाद की परवरिश को क़ुरआन ने इतनी अहमियत दी है कि ख़ुदा अपने बंदों से कहता है कि अल्लाह के हक़ के बाद पैरेंट्स के हक़ का ख़्याल रखा जाए क्योंकि वह बच्चे की परवरिश में ख़ुदा के बनाए हुए जानशीन हैं "तुम सब उसके सिवा किसी की इबादत मत करो और मां-बाप के साथ नेकी करो।"[4]

इतनी अहमियत की वजह यही है कि ख़ुदा ने हर घर के बच्चों को उस घर वालों के पास अपनी अमानत के तौर पर रखा हुआ है। क़ुरआने मजीद का बयान है, "ऐ रसूल उस वक़्त को याद करो जब तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं अपना एक ख़लीफ़ा ज़मीन पर बनाने वाला हूं।"[5]

दूसरी तरफ़ देखा जाए तो इंसान एक ऐसा क़ीमती वजूद है कि तमाम चीज़ें उसी के लिए पैदा की गई हैं।

"हर चीज़ कि जो ज़मीन में है तुम्हारे लिए पैदा की गई।"[6]

इसलिए क्या ही बेहतर हो कि हम अपना क़ीमती वक़्त फ़ुज़ूल तफ़रीहों में बर्बाद करने, बेकार मुलाक़ातें करने, बेकार बातें और ग़ीबत करने, फ़ुज़ूल बात-चीत करने और दूसरों की ज़िंदगी में ऐब निकालने के बजाए क़ुरआन में दिए गए बच्चों की परवरिश के अहम नुक्तों की स्टडी करें और उनकी मदद से बच्चों की तरबियत करके अपने बाद एक बाईमान और नेक नस्ल छोड़ें जो हमारे मरने के बाद हमारे लिए दुनिया में नेकनामी का ज़रिया बने और आख़िरत में भी हमारे काम आए।

1-सूरए बक़रा/44, 2-सूरए तहरीम/6, 3-सूरए ज़ुमर/15, 4-सूरए असरा/23, 5-सूरए बक़रा/30, 6-सूरए बक़रा/29

# हदीसे रसूल[स०]

- *किसी काम को "दिखावे" के तौर पर मत करो और उसे शर्म की वजह से मत छोड़ो।*
- *इंसान का बेहतरीन माल व ज़ख़ीरा "सदक़ा" है।*
- *दो चीज़ें ऐसी हैं जिनसे बढ़कर कोई नेकी नहीं: 1-अल्लाह की तौहीद पर ईमान लाना। 2-लोगों को फ़ायदा पहुँचाना।*
- *दो चीज़ें ऐसी हैं जिनसे बढ़कर कोई बुराई नहीं: 1-अल्लाह के साथ शिर्क करना। 2-लोगों को नुक़सान पहुंचाना।*
- *जन्नत का एक दरवाज़ा ऐसा है जिसको मुजाहिदों का दरवाज़ा कहा जाएगा।*
- *सबसे ज़्यादा कमज़ोर शख़्स वह है जो दुआ भी न कर सके।*
- *मुझ पर और मेरे अहलेबैत[अ०] पर दरूद भेजने से निफ़ाक़ दूर होता है।*
- *बदतरीन चीज़ों में से एक चीज़ जो हर वक़्त इंसान के साथ रहती है वह हसद है।*
- *अल्लाह के नज़दीक एक तालिबे इल्म अल्लाह की राह के मुजाहिद से अफ़ज़ल है।*
- *इल्म की फ़ज़ीलत इबादत की फ़ज़ीलत से बढ़ कर है।*
- *हर चीज़ के लिए सवारी है और आदमी की सवारी अक़्ल है।*
- *जन्नत में बदअख़लाक़ और सख़्त मिज़ाज दाख़िल नहीं होगा।*
- *सबसे अच्छी मौत शहादत की मौत है।*

(ख़दीजा बानो बिन्ते हाजी ग़ुलाम अली)



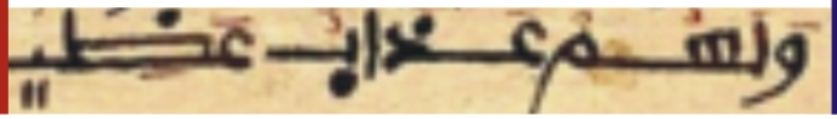

# मुबाहेला

बेदीनी और गुमराही की आख़िरी हदों तक पहुंचे हुए अरबों के ख़िलाफ़ जब रसूले इस्लाम[स०] को फ़तेह हासिल हो गई तो बाक़ी बचे हुए गुमराह लोगों से बात चीत की गई। इन लोगों ने अपने पिछले नबियों की तालीमात में तबदीलियाँ की थीं और अब तौहीद के मसले पर बहुत ज़्यादा गुमराही का शिकार हो चुके थे।

फ़तेह मक्का के बाद तौहीद के मुनकिरों का अरब से क़रीब-क़रीब सफ़ाया हो चुका था और इस्लाम का पैग़ाम अरब की फ़िज़ाओं से निकल कर बाक़ी दुनिया में फैल रहा था। तौहीद का बिगड़ा हुआ अक़ीदा रखने वाले लोगों में सबसे बड़ा गिरोह ईसाइयों का था। वह हज़रत ईसा को ख़ुदा का बेटा मान कर ख़ुदा के साथ शिर्क कर रहे थे। उनके सामने इस्लाम की हक़्क़ानियत और ख़ुदा परस्ती को साबित करना एक बहुत बड़ी बात थी।

इस्लाम चूंकि तौहीद के मसले पर किसी भी तरह की गुमराही और इन्हेराफ़ को क़तई तौर पर क़ुबूल करने को तैयार नहीं है इसलिए रसूले इस्लाम[स०] नें उन्हें सीधी राह पर आने के लिए दावत दी। इसके लिए पहली बार दलील से काम लिया गया लेकिन जब फिर भी वह सीधी राह पर नहीं आए तो रसूल[स०] ने कहा कि अब जंग के लिए तैयार हो जाओ। जब वह इस पर भी तैयार नहीं हुए तो तीसरी सूरत ख़ुद नजरान के ईसाईयों के पास इसके सिवाए कुछ नहीं रह जाती थी कि वह आख़िरी रसूल[स०] के साथ मामला तय करें और ज़िम्मी की हैसियत का इन्तेख़ाब कर लें। यह बात बड़ी अहम है कि अहले किताब अपने बड़े-बड़े आलिमों की मौजूदगी में इस्लाम की दलीलों के सामने तौहीद परस्ती के ख़िलाफ़ अपने ग़लत नज़रियात पर कोई ठोस दलील पेश नहीं कर सके और जब मुबाहिला हुआ तो वहाँ हार से दो चार हुए। आख़िर कार उन्होंने रसूल[स०] की शर्तों पर सुलह कर ली। इस मौक़े पर किसी एक आदमी का ख़ून लिए बग़ैर और किसी क़त्ल व क़िताल के बग़ैर इस्लाम का झंडा बुलंद हुआ था। इस वाक़ेए को इस्लाम की तौहीद परस्ती के नज़रिए की बहुत बड़ी कामयाबी माना गया है। इस सारे बैकग्राउंड में देखा जाए तो रसूले इस्लाम[स०] पूरी दुनिया के लिए तौहीद का जो पैग़ाम ले कर आए थे उसकी हक़्क़ानियत रोज़े रौशन की तरह साफ़ नज़र आने लगती है।

रसूले इस्लाम[स०] ने अपनी नुबुव्वत के ऐलान के बाद सबसे पहले यही बात कही थीः 'ला-इला-ह इल-लल्लाह' कहो और कामयाब हो जाओ। इस दावत की सच्चाई को साबित किया जाना और वह भी ख़ास तौर पर उन अहले किताब के सामने जो अपने सिलसिले को नबियों के साथ जोड़ते थे, बहुत बड़ी बात थी। अगले मरहले में इस्लाम को असल ख़तरा तो इन गुमराहों से ही था। वाक़ेए मुबाहिला में आख़िरकार इस्लाम उन पर छा गया। इस्लाम की हक़्क़ानियत को साबित करने वाले इस वाक़ेए का ज़िक्र हदीसों में, तारीख़ में और तफ़सीरों में बहुत मिलता है। मुबाहले के लिए रसूले इस्लाम[स०], हज़रत अली[अ०], हज़रत फ़ातिमा[अ०], इमाम हसन[अ०] और इमाम हुसैन[अ०] को लेकर निकले थे मगर ईसाईयों ने इन अज़ीम हस्तियों को देखकर मुबाहला करने से इनकार कर दिया और अपनी हार मान ली थी। मुबाहले में होना यह था कि अच्छों को अच्छा कहना था और बुरों के लिए बददुआ करना थी। लेकिन ईसाईयों ने कहा कि अगर यह अज़ीम हस्तियाँ बददुआ कर देंगी तो हम सब तबाह हो जाएंगे। इस तरह इस्लाम की हक़्क़ानियत सारी दुनिया पर रौशन हो गई और इस्लाम जीत गया।

# करबला और सोशल रिफ़ार्म

इस आर्टिकिल का टॉपिक करबला और सोशल रिफ़ार्म है। इसमें करबला की हक़ीक़त और करबला से सबक़ लेते हुए समाज में कैसे सुधार लाया जा सकता है, करबला एक हमेशा बाक़ी रहने वाली सच्चाई है जिसे कुछ घंटों की जंग नहीं कहा जा सकता है बल्कि यह हक़ व बातिल का मारेका है और यह नबियों[अ०] के मूवमेंट का सिलसिला है। करबला एक नमूना है, नूर और हिदायत का चिराग़ है जिससे इन्सानियत सबक़ लेती रहेगी। इसमें दुनिया के सारे इन्सानों के लिए सबक़ और सीख मौजूद है।

आपने उस वक़्त क़ियाम किया जब हर तरफ़ जुल्मो सितम की घटाएं छाई हुई थीं। इन्सानियत जुल्मो सितम में पिस रही थी अदालत सिसक रही थी ज़बानों पर ताले पड़े हुए थे। हक़ की आवाज़ बुलंद करने पर पाबंदी थी आमरियत की मंहूस जंजीरों में इन्सानियत जकड़ी हुई थी। इन्सानी वैल्यूज़ की बेहुरमती हो रही थी, किताबे खुदा से मुँह मोड़ लिया गया था। और सुन्नते रसूल को बदल दिया गया था। ऐसे आलम में इमाम[अ०] दुखी इन्सानियत के मसीहा बनकर उठे। इन्सानियत की बीमारी का अपने खून से इलाज करने लगे।

इमाम[अ०] ने इन्सानियत को हक़्क़ानियत, शुजाअत, आज़ादी, सच्चाई, दयानत, फ़िदाकारी, मर्दानगी, जाँबाज़ी, ईसार व सरफ़रोशी का दर्स दिया और दुनिया के रहनुमाओं को एक रास्ता दिखा गए कि जिससे क़यामत तक इन्सान फ़ायदा उठाते रहेंगे।

हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि वह हुसैन के ख़ून का बदला लेने वाले इमाम का जल्दी ज़हूर फ़रमाए ताकि दुनिया से ज़ुल्मो सितम ख़त्म हो, अदलो इंसाफ़ का दौर-दौरा हो और आलमी व इलाही हुकूमत क़ाएम हो और सोशल रिफ़ार्म की तकमील हो सके।

## सोशल रिफ़ार्म

सोशल और सोशल रिफ़ार्म ऐसी बहसें हैं जो बहुत पुरानी हैं। और दीनी रहनुमाओं ने अपनी पहचान इन्सानों के बहुत बड़े रिफ़ार्मर के तौर पर करवाई है। सुधार का मतलब उलमा ने जो कुछ बयान किया है इससे यह बात सामने आती है कि अगर एक समाज में फ़साद है तो इस्लाह नहीं है और अगर इस्लाह है तो फ़साद नहीं है। अगर एक समाज में इस्लाही खूबियां ज़्यादा होंगी तो बुराईयां कम और अगर बुराईयां ज़्यादा होंगी तो इस्लाह कम।

## सोशल रिफ़ार्म की अहमियत

क़ुरआने करीम, अम्बिया[अ०] को रिफ़ार्मर और बहुत बड़ा सुधार करने वाला बयान करता है। सोशल रिफ़ार्म के लिए रिवायात भी बहुत ज़्यादा हैं मगर हम इमाम हुसैन[अ०] के क़ौल को बयान करते हैं कि इमाम[अ०] ने अपने क़याम का मक़सद सोशल रिफ़ार्म क़रार दिया है। मैंने तो सिर्फ़ अपने दादा की उम्मत की भलाई के लिए क़याम किया है, मैं अमर बिल मारूफ़ (अच्छाइयों की तरफ़ बुलाना) व नही अनिल मुनकर करना (बुराईयों से रोकना) चाहता हूँ और मैं अपने दादा मोहम्मद[स०] और अपने बाबा अली इब्ने अबी तालिब[अ०] की सीरत पर चलना चाहता हूँ।

इमाम खुमैनी[र०] सोशल रिफ़ार्म की अहमियत बयान करते हुए फ़रमाते हैं, "सैय्यदुश शोहदा इसी की ख़ातिर मैदान में आए थे खुद असहाब व अंसार को क़ुरबान किया ताकि समाज के लोगों पर क़ुरबान हों और समाज की भलाई हो।"

## सोशल रिफ़ार्म के लिए क़याम की ज़रूरत

क्या सोशल रिफ़ार्म के लिए हर जगह क़याम की ज़रूरत है या क़याम के बग़ैर भी सोशल रिफ़ार्म हो सकता है? इन सवालों का जवाब बहुत सादा सा है मगर इन सवालों के जवाब से पहले कुछ बातें बयान कर देना ज़रूरी हैं ताकि जवाब भी आसानी से मिल सकें।

### पहली दलील

इन्सानी समाज में सोशल रिफ़ार्म की ज़रूरत इस वहज से पेश आती है क्योंकि इन्सानी समाज में शुरू ही से दो किरदारों की जंग जारी है। एक खुदाई किरदार और दूसरा शैतानी किरदार। हर दौर और हर समाज में कुछ लोग इलाही किरदार वाले रहे हैं उन्होंने इलाही किरदार व इन्सानी किरदार की तरवीज की और दूसरा किरदार शैतानी किरदार है जिसने न सिर्फ़ इन्सानी वैल्युज़ की पामाली की बल्कि ग़ैर इन्सानी अक़दार को राएज करने की कोशिश की। अगर कोई भलाई करने वाला भलाई का बेड़ा न उठाए तो ज़िक्रे खुदा मिट जाएगा और समाज में बहुत बड़ा फ़ितना व फ़साद बरपा हो जाएगा। अगर फ़िरऔन को कोई रोकने वाला न होता, अगर हज़रत मूसा[अ०] रिफ़ार्मर बन कर न उठते तो पूरा समाज फ़िरऔनी बन जाता और हर तरफ़ जुल्म व सितम और फ़ितना व फ़साद फैल जाता।

### दूसरी दलील

क़याम की उस वक़्त ज़रूरत पेश आती है जब समाज में हक़ व बातिल की तमीज़ मिट जाए, इन्सानी वैल्यूज़ के बजाए शैतानी व जाहिली रसमें फैल जाएं, क्योंकि वैसा इन्सानी समाज नहीं होगा बल्कि इन्सान नुमा हैवानी समाज होगा। इमाम हुसैन[अ०] अपने क़याम की वजह बयान करते हुए फ़रमाते हैं क्या तुम नहीं देख रहे हो कि हक़ पर अमल नहीं हो रहा है और बातिल से दूरी नहीं की जा रही है।

### तीसरी दलील

जब एक रिफ़ार्मर और आलिम के पास मददगार हों तो उस पर क़याम वाजिब हो जाता है। हज़रत अली फ़रमाते हैं, "अगर बैअत करने वाले की मौजूदगी और मदद करने वाले के वजूद से मुझ पर हुज्जत तमाम न हो गई होती और वह अहद न होता जो अल्लाह ने उलमा से ले रखा है कि वह ज़ालिम के भरे हुए पेट और मज़लूम की भूख पर सुकून व क़रार से न बैठें...।"

### चौथी दलील

नबियों की बेसत का मक़सद सोशल रिफ़ार्म था। इमाम खुमैनी[र०] फ़रमाते हैं, "तमाम अम्बिया सोशल रिफ़ार्म के लिए आए थे। हज़रत इमाम हुसैन[अ०] इसी ख़ातिर मैदान में आए।"

### पांचवी दलील

क़ियाम न करने का नतीजा अज़ाबे इलाही का

नाज़िल होना है। इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] से रिवायत है कि हज़रत शुऐब[अ०] पर वही नाज़िल हुई कि मैं तुम्हारी क़ौम पर अज़ाब नाज़िल करूंगा। जिसमें चालीस हज़ार बुरे और शरीर हैं और साठ हज़ार नेक लोग हैं। हज़रत शुऐब[अ०] ने कहा कि ऐ ख़ुदा! चालीस हज़ार बुरे अज़ाब के मुसतहेक़ हैं, अच्छे लोगों पर अज़ाब कैसे नाज़िल होगा? अल्लाह तआला ने जवाब दिया नेक लोगों पर इस वजह से अज़ाब नाज़िल करूंगा क्योंकि उन्होंने गुनाहगारों के साथ साज़बाज़ कर ली थी और मेरे ग़ज़ब की वजह से उनसे ग़ज़बनाक नहीं हुए थे। हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, ''ज़ालिम के दुश्मन और मज़लूम के मददगार बनो।''

### इस्लामी समाज की गुमराही

बुनयादी तौर पर इस्लाम इन्सानी समाज की भलाई के लिए आया है ताकि आम लोगों की दुनिया और आख़िरत संवर सके और समाज में इंसाफ़ की हुकूमत हो, दुनिया में भाईचारा, इन्सान दोस्ती, तौहीद परस्ती और हक़ की चहल-पहल हो मगर यही इस्लामी समाज जिसके बानी को इस दुनिया से गए हुए चंद साल गुज़रे थे, अपने सच्चे समाज और असली रास्ते से हट गया और इतना हटा कि पचास साल के अंदर रसूल[स०] के नवासे और उनके साथियों को बेदर्दी के साथ शहीद कर दिया गया।

अगर इस इन्हेराफ़ पर एक नज़र डालें तो यह पैग़म्बरे अकरम[स०] की रेहलत के फ़ौरन बाद शुरू हो जाता है। जैसे रसूल की ख़िलाफ़त की बादशाहत में तबदीली, अक़ाएद में तबदीली, इस्लामी समाज में गिरावट, बैतुल माल की बे इंसाफ़ी के साथ तक़सीम वग़ैरा।

### अक़ाएद में तबदीली

रसूल[स०] की रेहलत के बाद बनी उमय्या के दौर में इस्लाम के बुनयादी अक़ीदों में तबदीलियाँ की गईं। बनी उमय्या ने अपने ऐब छुपाने के लिए नए-नए ग़लत अक़ीदे फैलाए जिसके नतीजे में कई फ़िरक़े पैदा हो गए। जैसे क़दरिया, जबरिया और मुरजिया उन्होंने एक निहायत ही ख़तरनाक अक़ीदा यह फैलाया कि हुकूमत ख़ुदा का तोहफ़ा है। ख़ुदा जिसे चाहता है हुकूमत देता है हाकिम चाहे कैसे ही चुना जाए वह ख़ुदा का साया है वह रसूल का ख़लीफ़ा है इसलिए लोगों को उसके किसी काम पर ऐतराज़ नहीं करना चाहिए।

### सुन्नतों की पामाली और बिदअतों का रिवाज

सुन्नतों की पामाली और बिदअतों का रिवाज रसूल अल्लाह[स०] की रेहलत के बाद शुरू हो चुका था मगर बनी उमय्या के दौरे हुकूमत में सुन्नतें बिल्कुल मिट चुकी थीं। उनका इरादा था कि दीने इस्लाम को बिल्कुल नाबूद कर दें। उन्होंने इस्लाम के हक़ीक़ी व असली चेहरे को बिल्कुल बिगाड़ दिया था। नमाज़े जुमा को बुध के दिन पढ़ाया, अमीरे शाम ने ज़ियाद बिन अबीह को अपना ख़ूनी भाई क़रार दिया और यज़ीद को अपना जांनशीन बना दिया। ऐसा लगता था जैसे दौरे जाहिलियत पलट आया है। हज़रत इमाम हुसैन[अ०] इस तरफ़ इशारा फ़रमाते हैं, ''ऐ लोगो! सुन्नते रसूल मिट चुकी है और बिदअत ज़िन्दा हो गई है।'' इमाम ख़ुमैनी बनी उमय्या के इस घिनावने रोल की तरफ इशारा फ़रमाते हैं, बनी उमय्या का इरादा था इस्लामे मोहम्मदी[स०] को ख़त्म करें और दीन की असल को जड़ से उखाड़ फेंके मगर यज़ीद और यज़ीदी ख़त्म हो गए।

### करबला का इस्लाही सिस्टम

#### अमर बिल मारूफ़ व नही अनिल मुनकर

करबला के इंक़ेलाबी मूवमेंट में एक चीज़ जो साफ़ तौर पर नज़र आती है वह अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुनकर है। इमाम हुसैन[अ०] ने अपना मक़सद यह बताया कि मैंने अपने नाना की उम्मत की इस्लाह के लिए ख़ुरूज किया है और मैं अम्र बिल मारूफ व नही अनिल मुनकर करना चाहता हूँ और अपने नाना मोहम्मद रसूल अल्लाह[स०] और अपने वालिद अली इब्ने अबी तालिब[अ०] की सीरत पर चलना चाहता हूँ।

एक और जगह अपने क़याम के बारे में फ़रमाते हैं, ''ख़ुदाया! तू जानता है कि मेरा क़याम न तो सलतनत के लिए है और न दौलत के लिए बल्कि हम तेरे दीन के मामले को पेश करना चाहते हैं और हम यह चाहते हैं कि तेरे अहकाम पर अमल किया जाए। ''हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, ''अगर कोई मुसलमान अपने दिल से, ज़बान से और हाथ से अम्र बिल मारूफ़ न करे तो वह ज़िन्दों में चलती फिरती लाश है।

### क़ुरआन और सुन्नते रसूल[स०]

दौरे बनी उमय्या में क़ुरआन को भुला दिया गया था यानी लोग क़ुरआन की तिलावत तो करते

थे मगर रूहे कुरआन ख़त्म हो चुकी थी, लोग बस सवाब के लिए कुरआन की तिलावत करते थे मगर कुरआन पर अमल नहीं करते थे। इस्लामी समाज से सुन्नते रसूल[स०] बिल्कुल मुर्दा हो चुकी थी। इमाम[अ०] के क़याम का मक़सद यह था कि कुरआन को समाज में फैलाया जाए और कुरआनी अहकाम पर अमल दोबारा शुरु हो। आप अपने क़ियाम से यह चाहते थे कि दीने इस्लाम की खोई हुई इज़्ज़त व अज़मत वापस आ जाए।

### हक़ीक़ी इमाम व खलीफ़ए रसूल[स०]

सोशल रिफ़ार्म उसी वक़्त असरदार होता है जब इन्सानियत के हक़ीक़ी रहनुमाओं का तआरुफ़ करवाया जाए और ग़ासिब और ज़ालिम हुकमरानों के जुल्म को बयान किया जाए ताकि लोग हक़ीक़ी रहनुमाओं से दीन को लेकर उनकी इताअत को अपना सबसे पहला फ़रीज़ा समझें ताकि उनकी रहनुमाई में समाज में सोशल जस्टिस क़ाएम हो सके। इमामे हुसैन[अ०] ने जहाँ इस्लामी समाज की बेहिसी और बनी उमय्या के जुल्मों का तज़किरा किया है वहाँ अहलेबैते[अ०] का हक़ीक़ी रहबर के तौर पर तआरुफ़ भी कराया है।

### दीनी बेदारी और दीनी वैल्यूज़

इमाम हुसैन[अ०] ने सख़्त मुश्किलों के बावजूद दीनी वैल्यूज़ को ज़िंदा रखा था। नवीं मोहर्रम को आपने हज़रत अब्बास[अ०] से फ़रमाया कि जाओ! उनसे कह दो कि जंग कल तक के लिए टाल दो। क्यों? इसकी क्या वजह थी? फ़रमाया, "मैं नमाज़ से मुहब्बत करता हूं, तिलावते कुरआन, कसरते दुआ और इस्तेग़फ़ार से मुहब्बत करता हूँ।"

शबे आशूरा आप और आपके तमाम साथी ज़िक्रे खुदा और तिलावते कुरआन में मशगूल रहे थे। रोज़े आशूर आपके एक सहाबी ने कहा कि ऐ रसूलल्लाह[स०] के बेटे! दिल चाहता है कि आपके साथ नमाज़े ज़ोहर अदा करूँ। आपने फरमाया, "तुमने नमाज़ को याद किया है, अल्लाह तुम्हें नमाज़ियों में क़रार दे।" जो भी समाज की भलाई करना चाहता है उसे चाहिए कि पहले अपनी इस्लाह करे फिर वह समाज की भलाई कर सकता है। इमाम खुमैनी[र०] नमाज़ और दूसरे दीनी अहकाम को अहमियत देते थे। इस्लाह करने वालों के लिए यह पैग़ाम है पहले अपने नफ़्स की इस्लाह करें फिर सोशल रिफ़ार्म का परचम बुलंद करें।

### शहादत तलबी का जज़्बा

जिहाद का सबसे बुलंद दर्जा यह है कि इन्सान अपनी तमाम ताक़त और खुलूस के साथ आख़िरी दम तक खुदा और रसूल[स०] के दुश्मनों के मुक़ाबले में जंग करते हुए शहीद हो जाए। यही चीज़ हम करबला में देखते हैं, करबला वाले मौत से खेलते हुए नज़र आते हैं। यह मौत इन्सान के लिए ज़ीनत है। अगर कोई समाज में सोशल रिफ़ार्म करना चाहता है वह मौत से न डरे। अगर समाज की भलाई शहादत में छुपी हो तो इन्सान बिला ख़ौफ़ो ख़तर मैदान में कूद पड़े।

मगर जब हम हिस्ट्री पर निगाह डालते हैं तो हमें दिखता है कि उस वक़्त इस्लामी समाज में यज़ीद के जुल्म के ख़िलाफ़ सिर्फ़ ख़ामोशी था। लोग सहमे हुए थे और शहादत का जज़्बा ख़त्म हो चुका था। हैरत की इन्तेहा यह है कि जब इमाम[अ०] ने अपने क़याम का ऐलान किया तो बड़े-बड़े लोगों ने आपको मशवेरा दिया कि आप क़ियाम न करें, शहीद हो जाएंगे तो आपने फ़रमाया, "दीने खुदा की नुसरत और उसकी सर बुलंदी के लिए मैं सबसे ज़्यादा सज़ावार हूं और उसकी राह में जिहाद मेरी ज़्यादा ज़िम्मेदारी बनती है ताकि दीन का परचम बुलंद हो सके। फिर फरमाया कि मैं मौत को सआदत और ज़ालिमों के साथ ज़िंदगी को ज़िल्लत समझता हूँ। एक और जगह फरमाया कि इब्ने ज़ियाद ने मुझे क़त्ल और ज़लीलाना ज़िंदगी के बीच ला खड़ा किया, ज़िल्लत हमसे दूर है। खुदा की क़सम! मैं अपने हाथ उन ज़लील हाथों में नहीं दूंगा और गुलामों की तरह फ़रार कभी नहीं करूँगा। करबला से पहले लोग क़ियाम क्यों नहीं करते थे? इसलिए कि मौत से डरते थे मगर करबला के बाद हम देखते हैं कि मुसलमानों में इंक़ेलाब, शहादत और आज़ादी का जज़्बा पैदा हो गया है।

### नतीजा

करबला में समाज के तमाम मर्ज़ों और दर्द की दवा छुपी है। इसमें कोई शक नहीं कि करबला हमें जुल्म व सितम के ख़िलाफ डट जाने का सबक़ देती है। इस इस्लामी मूवमेंट से सारी दुनिया में सोशल रिफ़ार्म किया जा सकता है।

अल्लाह तआला का अटल फ़ैसला है कि जब तक कोई क़ौम अपने अंदर तबदीली पैदा नहीं करती खुदा भी उसकी हालत को नहीं बदलता। यह खुदा की सुन्नत है और सुन्नते खुदा में तबदीली मुमकिन नहीं है। इसलिए हमें समाज की भलाई खुद करना होगी फ़रिश्ते आकर रिफ़ार्म का फ़रीज़ा नहीं अंजाम देंगे। अगर हमें करबला की रौशनी में समाज में तबदीली लाना है तो हमें इन पहलुओं पर ज़रूर काम करना चाहिए कि लोगों की सोच में तबदीली लाएं, उनकी सोई हुई ज़ेहनियत और मुर्दा ज़मीरों को बेदार करें, वक़्त के यज़ीद के मज़ालिम को बयान करें और उसके मुक़ाबले के लिए तैयार हों।

सोशल रिफ़ार्म करने वालों को पहले अपनी इस्लाह की तरफ़ ध्यान देना चाहिए और वह अपने आपको इस क़ाबिल बनाएं कि अगर उन्हें सोशल रिफ़ार्म के लिए बड़ी से बड़ी क़ुरबानी भी देना पड़े तो उससे फ़रार न करें। ●

(यह आर्टिकिल असल का ख़ुलासा है)

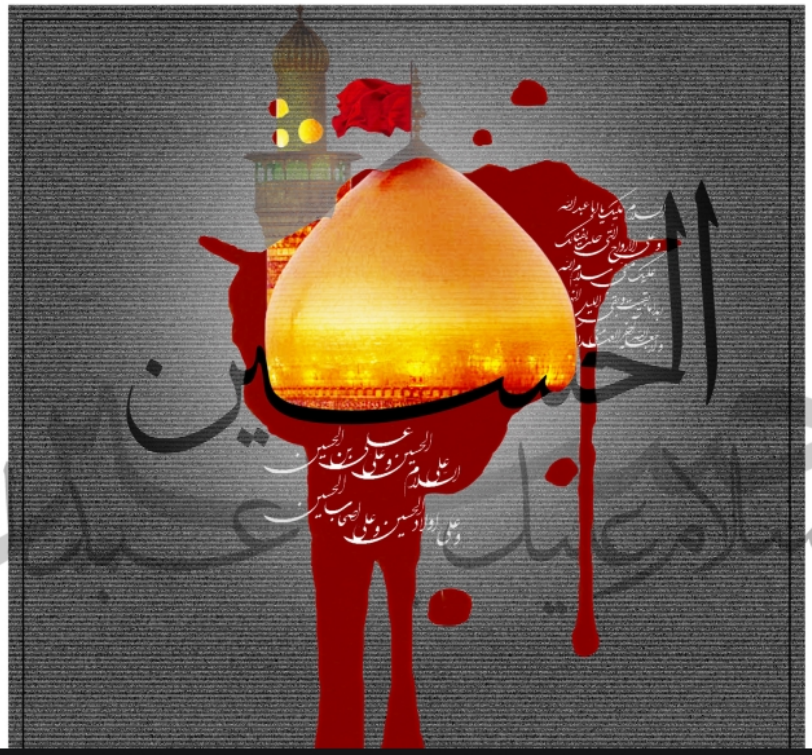

# बे-तक़वा औरतों पर होने वाला अज़ाब

रिवायत में है कि इमाम अली[अ] ने फ़रमाया है:-

मैं और फ़ातिमा[स] रसूल[स] के पास गए। देखा कि रसूल[स] शदीद गिरया कर रहे हैं। मैंने कहा कि ऐ रसूले ख़ुदा[स] मेरे माँ-बाप आप पर क़ुरबान हो जाएं! क्या हुआ आप इतना क्यों रो रहे हैं?

रसूल[स] ने फ़रमाया कि ऐ अली[अ]! जिस रात (मेराज) मुझे आसमान पर ले जाया गया था, वहाँ मैंने अपनी उम्मत की कुछ औरतों को देखा था जो बहुत बड़े अज़ाब में घिरी हुई थीं। मुझे उन्हीं की हालत और उनके अज़ाब के बारे में सोच कर रोना आ रहा है।

मैंने एक औरत को देखा जिसको बालों से लटकाया गया था जिसका भेजा उबल रहा था।

एक दूसरी औरत को देखा जिसे ज़बान से लटकाया गया था और खौलता हुआ पानी उसके हलक़ में उंडेला जा रहा था।

एक और औरत को देखा जिसे उसकी छातियों से लटका दिया गया था।

एक औरत अपने ही बदन का गोश्त खा रही थी, उसके नीचे से आग निकल रही थी।

एक औरत के हाथों को उसके पैरों से बाँध दिया गया था और उस पर साँप-बिच्छू हमले कर रहे थे।

एक गूँगी-बहरी और अंधी औरत को आग के एक ताबूत में बंद कर दिया गया था। उसका भेजा उसकी नाक से बह रहा था और जुज़ाम व बर्स से उसका बदन बोटी-बोटी हो गया था।

एक औरत को आग के तंदूर में पाँव के बल लटका दिया गया था।

एक औरत के जिस्म के अगले-पिछले हिस्सों को आग की क़ैंचियों से काटा जा रहा था (या ख़ुद अपने हाथों से काट रही थी)।

एक औरत के चेहरे और हाथों में आग लगी हुई थी और वह अपने जिस्म के अंदर वाले हिस्सों को खा रही थी।

एक औरत को देखा कि उसका सर सुअर के सर के जैसा और बदन गधे के जैसा था जो हज़ार-हज़ार तरह के अज़ाब में घिरी हुई थी।

एक औरत कुत्ते के जैसी थी। आग उसके पीछे से दाख़िल हो रही थी और मुँह से निकल रही थी। फ़रिश्ते आग के गुर्ज़ से उसके सर और बदन पर वार कर रहे थे।

हज़रत फ़ातिमा[स] ने कहा कि ऐ मेरे महबूब और मेरी आँखों की ठंडक! इन सब ने ऐसा क्या किया था कि ख़ुदा ने उनके लिए इतना सख़्त अज़ाब रखा है?

रसूल[स] ने फ़रमाया कि जिस औरत को उसके बालों से लटकाया गया था, वह अपने बालों को मर्दों से नहीं छुपाती थी।

जिसको ज़बान से लटकाया गया था, वह अपने शौहर को परेशान करती थी।

जिसको उसकी छातियों से लटकाया गया था, वह अपने शौहर के साथ हमबिस्तरी से भागती थी।

जो पाँव के बल लटकी हुई थी, वह अपने शौहर की इजाज़त के बिना घर से निकलती थी।

जो अपने बदन का गोश्त खा रही थी, वह ग़ैर मर्दों के लिए अपने बदन को सजाती थी।

जिसके दोनों हाथ उसके पैरों से बंधे हुए थे और साँप-बिच्छू हमले कर रहे थे, वह सही तरह से तहारत नहीं करती थी। अपने कपड़े गंदे रखती थी, जिनाबत और हैज़ (पीरियड्स) के बाद ग़ुस्ल नहीं करती थी, सफ़ाई का ख़याल नहीं रखती थी और नमाज़ को अहमियत नहीं देती थी।

जो गूँगी और बहरी थी, वह ज़िना के ज़रिए बच्चेदार होती थी और उन बच्चों को अपने शौहर की गर्दन पर डाल देती थी।

जिसका गोश्त क़ैंचियों से काटा जा रहा था (या ख़ुद अपने गोश्त को क़ैंची से काट रही थी), वह दूसरे मर्दों के लिए ख़ुद को पेश कर देती थी।

जिसके बदन और चेहरे में आग लगी हुई थी वह अपने अंदर के हिस्से खा रही थी, वह ज़िना के लिए दलाली करती थी।

जिसका चेहरा कुत्ते जैसा था और आग उसके पीछे से दाख़िल और मुँह से बाहर निकल रही थी, वह गाने-बजाने वाली और हसद करने वाली थी।

इसके बाद रसूल[स] ने फ़रमाया कि वाए हो उस औरत पर जो अपने शौहर को ग़ुस्सा दिलाए और कितनी ख़ुश क़िस्मत है वह औरत जिसका शौहर उस से राज़ी हो। (1)

1- उयूनु अख़्बारिर्रज़ा, 2/92

# नक़ली दीन

■ अब्बास असग़र शबरेज़

यूं तो हम सब लफ़्ज़े 'नक़ली' को अच्छी तरह से पहचानते हैं क्योंकि हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में हमारा इससे अच्छा ख़ासा सरोकार रहता है। इसलिए इस लफ़्ज़ पर बहस करने की तो कोई ज़रूरत नहीं है लेकिन नक़ल और जिस चीज़ की नक़ल बनाई जाती है और जिसे असल कहते हैं, उन दोनों के फ़र्क़ पर बात करने की ज़रूर ज़रूरत है।

नक़ल और असल में सबसे बड़ा फ़र्क़ यह पाया जाता है कि नक़ल के अंदर असल की सारी क्वालिटीज़ बिल्कुल नहीं पाई जाती हैं यानी ऐसा नहीं है कि अगर हम किसी जानदार की नक़ल बना रहे हैं तो इस नक़ल में भी जान होगी। मिसाल के तौर पर अगर किसी ने गांधी जी की मूर्ती यानी नक़ल बनाई है तो इस मूर्ती में गांधी जी वाली कोई क्वालिटी नहीं होगी। सिर्फ़ एक क्वालिटी होगी कि यह नक़ल गांधी के जिस्म के जैसी होगी। यह नक़ल न गांधी जी की तरह बोलती होगी, न लिखती होगी, न पढ़ती होगी, न आज़ादी की जंग लड़ती होगी और न अहिंसा की बात करती होगी। इस नक़ल का बस एक फ़ाएदा होगा कि जैसे ही हम इसे देखेंगे वैसे ही हमारे ज़ेहन में गांधी जी की पिक्चर बन जाएगी और हमारे दिल में उनकी याद आ जाएगी। यही नक़ल का सबसे बड़ा फ़ाएदा है और इसीलिए नक़ल बनाई भी जाती है।

लेकिन अगर कोई ख़ाना-ए-काबा की नक़ल बना ले तो यह नक़ल सिर्फ़ शबीह ही होगी, ख़ाना-ए-काबा नहीं हो जाएगा और न ही इसमें ख़ाना-ए-काबा वाली कोई बात होगी। अगर कोई ख़ाना-ए-काबा को बनाकर और उसे मुक़द्दस समझकर उसका तवाफ़ करने लगे या हज करने लगे तो न उसका यह तवाफ़ किसी काम का है और न हज क्योंकि यह इन्सान सिर्फ़ नक़ल का तवाफ़ और हज कर रहा है। नक़ल, नक़ल ही होती है और वह असल की बराबरी नहीं कर सकती।

दरअसल नक़ल बनाने की बुनियाद मोहब्बत है। नक़ल मोहब्बत की वजह से बनाई जाती है। एक आदमी करबला नहीं जा सकता मगर ज़ियारत की बहुत चाहत रखता है, वह क्या करेगा? वह यही तो करेगा कि करबला की नक़ल बना लेगा और उसे देख-देख कर इमाम हुसैन[अ०] को याद करता रहेगा।

घरों में फ़ोटो लगाने के पीछे भी यही मामला है। किसी की मां मर गई। अब मां तो वापस आ नहीं सकती, इन्सान उसका फ़ोटो लगा कर ही अपने दिल को सुकून दे लेता है। किसी को किसी आलिमे दीन या मरजा से मोहब्बत है, वह उसका फ़ोटो अपने रूम में लगा लेता है। ख़ुलासा यह है कि नक़ल का ताल्लुक़ मोहब्बत से है।

इन्सान की एक सिफ़त यह भी है कि वह हर चीज़ की नक़ल आसानी से बना लेता है और सिर्फ़ अपने ज़ेहन में ही नहीं बनाता बल्कि अपने ज़ेहन की तस्वीर को बाहर की दुनिया में भी उतार देता है और ऐसा वह अपने नेचर की बुनियाद पर करता है। आम इन्सान अगर किसी बात या चीज़ को समझना या देखना चाहते हैं तो वह सबसे पहले उस चीज़ की पिक्चर को बाहर की दुनिया में तलाश करते हैं और जब बाहर कहीं वह उन्हें नज़र नहीं आती तो कम से कम अपने ज़ेहन में ही उसकी पिक्चर बना लेते हैं। यहां तक कि अल्लाह तआला जिसका न जिस्म है और न रूह, इन्सान उसकी भी नक़ल बना लेता है। बुत परस्ती हमारी बात का खुला सुबूत है जो हर जगह आसानी से देखने को मिल जाती है और क़रीब-क़रीब हर मज़हब में है। आज ही नहीं बल्कि हर ज़माने में रही है। इस्लाम से पहले बुत परस्ती होती ही थी बल्कि ख़ुद ख़ुदा के घर में होती थी जिसकी रसूले इस्लाम[अ०] ने खुल कर मुख़ालेफ़त की थी और सारे बुत तोड़ दिए थे।

ख़ुलासा यह कि नक़ल या डुप्लीकेसी एक ऐसी चीज़ है जो हर मज़हब में और हर ज़माने में रही है। हम भी इस से अछूते नहीं रहे हैं। हम भी बहुत सी बल्कि अनगिनत नक़लें बनाते हैं।

अब सवाल उठता है कि ठीक है हर चीज़ की नक़ल बनती है और बनाई जाती है लेकिन

# नक़ली दीन

क्या दीन और मज़हब की नक़ल भी बन सकती है और बनाई जा सकती है।

इस सवाल का जवाब देने से पहले यह बता देना भी ज़रूरी है कि नक़ल, जहां इन्सान को असल से क़रीब करती है वहीं कभी-कभी दूर भी कर देती है और इस हद तक दूर कर देती है कि इन्सान कुछ वक़्त के बाद नक़ल का ही होकर रह जाता है और असल को सिरे से भूल ही जाता है।

आइए! अब क़ुरआन में देखते हैं कि ख़ुदा हम से कौन सा दीन चाहता है। सूरए आले इमरान की आयत/85 में है, ''अगर कोई इस्लाम के अलावा किसी और दीन को तलाश करेगा तो उससे वह दीन क़ुबूल नहीं किया जाएगा।''

दीन भी कौन सा दीन? वह दीन जो ख़ालिस होगा क्योंकि यह बात तो हम सब जानते ही हैं कि ख़ुदा को मिलावट बिल्कुल पसंद नहीं है क्योंकि मिलावट यानी शिर्क और शिर्क तो हराम है ही।

अब ख़ालिस दीन कहां से आए? ख़ालिस दीन के लिए दो शर्तें हैं: एक यह कि ख़ुद इन्सान ख़ालिस हो और दूसरे यह कि जिस से दीन ले वह भी हमें ख़ालिस दीन दे और ख़ुद भी ख़ालिस हो क्येंकि जो ख़ुद ही ख़ालिस नहीं होगा वह ख़ालिस चीज़ कहां से देगा। लेकिन आज के ज़माने की सबसे बड़ी ख़राबी यह है कि दीन तो दीन हम ख़ुद ही ख़ालिस नहीं रह गए हैं। हमारी इन्सानियत न जाने कहां खो गई है और ऐसी खोई है कि हमें पता भी नहीं है कि कब खोई और कहां खोई है? अगर ऐसा न होता तो दुनिया के अज़ीम तरीन और शरीफ़ तरीन इन्सान यानी रसूले इस्लाम(स०) की शख़्सियत की तौहीन किए जाने पर दुनिया ख़ामोश तमाशाई बनी न रह जाती...लेकिन दुनिया से इन्सानियत उठ गई है, अब सिर्फ़ इन्सानियत का ढिंढोरा पीटा जा रहा है।

हमारी मुश्किल यह है कि हम दीन की बात करते हैं तो हमारी समझ में ही नहीं आता कि दीन किस से लें। हम ज़बान से तो कहते हैं कि हमने दीन को रसूले इस्लाम और बारह इमामों से लिया है लेकिन हक़ीक़त यह है नहीं। हम जब दीन की बात करते हैं तो हम सब की ज़बान पर बस एक ही बात आती है कि हमारी समझ में ही नहीं आता कि क्या करें...कोई आलिम कुछ कहता है और कोई कुछ, ईरानी उलमा यह कहते हैं और हिन्दुस्तानी उलमा वह. ..बताईए! हम क्या करें।

इमाम सादिक़(अ०) फ़रमाते हैं कि लोग दुनिया कें मामलों में बहुत चालाक होते हैं लकिन दीन में बड़े सीधे बन जाते हैं। सवाल यह पैदा होता है कि हम दुनिया के मामलों में क्यों नहीं कहते कि समझ में नहीं आता कि क्या करें...वह आलिम कुछ कहते हैं और यह आलिम कुछ और। आप ने कभी सुना है कि किसी बिज़नेस मैन ने कहा हो कि मौलाना साहब! यह कस्टमर आया हुआ है, बताईए क्या करूं। यह इतनी क़ीमत लगा रहा है और मैं इतनी। नहीं, बल्कि अगर मौलाना साहब कुछ बताएंगे भी तो कह दिया जाएगा कि अरे भई! यह आपका मामला नहीं है। यह हमारा मामला है, इसमें आप दख़ल मत दीजिए। हमें अल्लाह ने अक़्ल और समझ दी है, हम ख़ुद तै कर लेंगे कि प्रोडक्ट को कितने में बेचना है।

दीनी मामलों में हम ऐसा क्यों नहीं करते। वहां हमारी अक़्ल कहां चली जाती है। क्या ख़ुदा ने समझ सिर्फ़ दुनियावी मामलों के लिए ही दी है, दीनी मामलों में वापस ले ली है। मिसाल के तौर पर चांद के ही मसले को ले लीजिए। चांद रात आई नहीं कि हर आदमी फ़ोन करने लगता है। दिल्ली के मौलाना का चांद हो गया है, लखनऊ के मौलाना का अभी नहीं हुआ है, इनका हो गया है और उनका नहीं हुआ है। क्या करें! कुछ समझ ही में नहीं आता, कोई कुछ कहता है, कोई कुछ....जिस तरह दीन के दूसरे सारे मामले आपके अपने हैं वैसे ही चांद का मसला भी आपका अपना है, अपने बिज़नेस की तरह इसे भी ख़ुद ही हल कीजिए। लकिन यहां आकर हमारी अक़्ल ख़ब्त हो जाती है और सारा मामला उलमा के सर डाल दिया जाता है।

असल में बात यह है कि हम दुनिया की दूसरी हर चीज़ की तरह दीन में भी आसानी तलाश करते हैं। हम सस्ता दीन तलाश करते हैं। वह हैं ना चाइनीज़ प्राडक्ट्स जो मार्केट में हर तरफ़ फैले हुए और छाए हुए...हम फ़ौरन उनकी तरफ़ भागने लगते हैं। अब अगर पूछिए कि यह तो अच्छी क्वालिटी के नहीं हैं, आप इन्हें क्यों ख़रीद रहे हैं तो जवाब यही मिलेगा कि सस्ते हैं। आदमी जानते-भूजते हुए भी सस्ता माल ले लेता है चाहे ख़राब ही क्यों न हो।

चाइनीज़ इंडस्ट्री ने यूं भी दुनिया की मार्केट को बरबाद कर दिया है और यही चाइनीज़ इंडस्ट्री वाली सोच दीनी दुनिया में भी घुस जाए तो फिर हम समझ सकते हैं कि कितनी बड़ी मुसीबत आने वाली है। यह इतनी बड़ी मुसीबत है कि इससे दीन की बुनियादें ही हिल सकती हैं जो कि हिल रही हैं। आज इसी सोच की वजह से हमारे असली दीन की शक्ल बिगड़ गई है, यह एक बिल्कुल नया दीन है, यह वह दीन है ही नहीं जो ख़ुदा ने हमें दिया था। जो दीन ख़ुदा ने हमें दिया था उसमें ख़ुलूस था, प्यार था, एक दूसरे से मोहब्बत थी, अम्नो अमान था, शांती थी, इन्साफ़ था, अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास था, पड़ोसियों और आसपास वालों बल्कि सारी इंसानियत के लिए एक दर्द था... जो दीन ख़ुदा ने हमें दिया था वह दिन के कुछ मिनटों या घंटों का दीन नहीं था बल्कि चौबीस घंटे का दीन था जबकि हम दिन में कुछ देर इबादत करके समझ लेते हैं कि हम दीनदार हो गए और इबादत भी कैसी करते हैं वह भी अल्लाह ही जानता है। इसकी सबसे छोटी मिसाल नमाज़ है। हमारे यहां एक बहुत बड़ी अक्सरियत ऐसी है जिसको नमाज़ की बुनियादी शर्तें भी नहीं पता हैं। नमाज़ के लिए तजवीद वाजिब है...हम में से कितनों को तजवीद आती है, आना तो दूर की बात है बहुत सों ने तो यह लफ़्ज़ भी नहीं सुना होगा मगर हक़ीक़त यह है कि तजवीद के बिना नमाज़ बातिल है और क़ुबूल भी नहीं की जाएगी...अब इसके बाद भी वह क़ुबूल कर ले तो यह तो उसका करम होगा।

और ऐसा सिर्फ़ नमाज़ में ही नहीं है बल्कि क़रीब-क़रीब सारे दीनी अहकाम में ही ऐसा है।

ऐसा क्यों है? इसलिए क्योंकि हमें आसान और सस्ता दीन लेने की आदत पड़ गई है, इतना सस्ता कि हमें एक आंसू में जन्नत में मिल जाती है। जबकि हम यह जानते भी नहीं कि इस एक आंसू की क़ीमत क्या है और इमाम हुसैन[अ०] कौन सा आंसू हम से मांग रहे हैं। सिर्फ़ कुछ आंसू या इन आंसूओं के साथ हुसैन[अ०] की सीरत पर अमल भी, हुसैन[अ०] के बताए रास्ते पर चलना भी। लेकिन रोना आसान और सस्ता भी है मगर हुसैन[अ०] के रास्ते पर चलना पहाड़ खोदने के बराबर है। इसलिए हमने आंसू ले लिए और रास्ता कहीं पीछे ही छोड़ दिया। उस रास्ते से कितना भटक गए यह भी हमें नहीं पता।

सस्ता दीन...यही हमारी सबसे बड़ी मुश्किल है। हुआ यह कि हम ज़माने के गुज़रने के साथ-साथ दीन की भी नक़ल और डुप्लीकेट बना लिया और यहीं से मामला ख़राब हो गया। जिस तरह ख़ुदा की नक़ल या डुप्लीकेट नहीं बनाया जा सकता उसी तरह दीन की भी नक़ल नहीं बनाई जा सकती। दीन हमें असल और प्योरिफ़ाईड ही लेना पड़ेगा। इमाम ख़ुमैनी ने कभी कहा था कि दीन के रास्ते में सबसे बड़ी रूकावट ख़ुद दीन है लकिन कौन सा दीन? यही नक़ली, डुप्लीकेट दीन और बिगड़ी हुई शक्ल वाला दीन...।

अगर सच्चा मुसलमान बनना है तो सच्चा दीन लेना पड़ेगा और सच्चा दीन सच्चे लोगों से लेना पड़ेगा यानी क़ुरआन, रसूल[अ०] और अहलेबैत[अ०] से और उनके बाद उनके सच्चे पैरोकारों से लेकिन ध्यान रहे कि सिर्फ़ इतना ही काफ़ी नहीं है बल्कि हमें दीन को लेने, समझने, उस पर अमल करने और इस रास्ते पर चलने के लिए अपने बिज़नेस वाले मामले की तरह अपनी अक़्ल, समझ, शऊर यानी सभी कुछ इस्तेमाल करना होगा...इसके लिए अपना क़ीमती वक़्त भी देना होगा। जिस तरह हम अपना कॅरियर बनाने और अपने शौक़ के लिए दुनिया भर की किताबें पढ़ते हैं उसी तरह कुछ दीनी किताबें भी पढ़ना और समझना होंगी। दीन आसानी से नहीं मिलता उसके लिए कुछ इम्तेहान भी देने होंगे। जहां समझ में न आए वहां सच्चे उलमा और दीन के जानकारों से मालूमात भी लेना होंगी। मगर ध्यान रहे कि सच्चे उलमा होने चाहिएं और सच्चे उलमा की एक पहचान यह है कि वह कभी दीन का शार्ट-कट नहीं बताते और सस्ता दीन नहीं देते हैं।

अब कौन सच्चा है, यह बताना ख़ुदा का काम नहीं है बल्कि हमारा काम है क्योंकि ख़ुदा ने हमें अक़्ल भी दी है और समझ भी।

# आप भी मरयम

## के लिए आर्टिकिल भेज सकती हैं...

1. A4 साईज़ पर लिखा हो।
2. पेपर के एक साईड पर लिखा हो।
3. पहले कहीं छपा न हो।
4. आर्टिकिल की ओरिजिनल कॉपी भेजिए।
5. भेजे गए आर्टिकिल्स एडिटोरियल बोर्ड से पास होने के बाद ही पब्लिश किए जाएंगे।
6. आर्टिकिल रिजेक्ट होने पर उसकी वापसी नहीं होगी।
7. आर्टिकिल सिलेक्ट हो जाने के बाद अपने मुनासिब वक़्त पर पब्लिश किया जाएगा।
8. आर्टिकल में एडिटर को बदलाव का इख़्तियार

# घर के काम

■ शहीद मुतह्हरी

हज़रत अली[अ] और जनाबे फ़ातिमा[स] ने शादी के बाद अपने घर के कामों का बटवारा रसूले खुदा[स] के मश्वरे पर छोड़ दिया। रसूले ख़ुदा[स] के पास जाकर उन से कहा, "ऐ रसूले ख़ुदा[स]! हम यह चाहते हैं कि घर के कामों की तक़्सीम आपकी राय से हो।"

रसूल[स] ने बाहरी काम अली[अ] को और घर के काम फ़ातिमा[स] को दे दिए। अली[अ] व फ़ातिमा[स] दोनों ही बहुत ख़ुश थे कि उन्होंने अपनी घरेलू ज़िंदगी के कामों के बारे में पैग़म्बरे ख़ुदा[स] से मश्वरा किया और पैग़म्बर ने मेहरबानी और मोहब्बत से अपने राय पेश कर दी। ख़ास तौर से जनाबे फ़ातिमा[स] बहुत ख़ुश थीं कि रसूल[स] ने बाहर के कामों से उन्हें दूर रखा। कहा करती थीं "मुझे सारे ज़माने की ख़ुशी मिल गई जो रसूले ख़ुदा[स] ने मुझे मर्दों से सरोकार रखने वाले कामों से बचा लिया।"

उस दिन से बाहर के काम, खाना-पानी, ईंधन और बाज़ार की ख़रीदारी अली[अ] करते थे और घर के काम जैसे हाथ की चक्की से आटा पीसना, रोटी पकाना, धुलाई और घर की सफ़ाई वग़ैरा जनाबे फ़ातिमा करती थीं। इसके अलावा अली[अ] जब भी वक़्त मिलता था घर के कामों में जनाबे फ़ातिमा की मदद भी करते थे। एक दिन पैग़म्बर[स] उनके घर आए तो देखा अली[अ] व फ़ातिमा[स] दोनों मिलकर काम कर रहे हैं।

आप[स] ने सवाल किया कि तुम दोनों में कौन ज़्यादा थका हुआ है। बताओ मैं उसकी जगह काम करूँगा, अली[अ] ने कहा, "ऐ रसूले ख़ुदा[स]! फ़ातिमा थकी हुई हैं।" "रसूले ख़ुदा[स] ने फ़ातिमा से आराम करने को कहा और ख़ुद उनकी जगह काम करने लगे। दूसरी तरफ़ जब भी अली[अ] जिहाद के लिए या कहीं और शहर से बाहर जाते थे तो फ़ातिमा[स] बाहर के काम भी करती थीं।

इसी तरह सिलसिला चलता रहा। अली[अ] व फ़ातिमा[स] घर का काम ख़ुद ही करते रहे और किसी कनीज़ या ख़ादिम की ज़रूरत महसूस नहीं की। यहाँ तक कि बच्चे भी हो गए और बच्चों ने मामूली से घर में जो निहायत बारीनक़ और पाकीज़ा था आँख खोली और अब घर के काम बढ़ गए थे जिस से जनाबे फ़ातिमा[स] की ज़हमतें बढ़ गईं थीं। एक दिन अली[अ] ने अपनी बीवी की हालत देखी कि घर के कामों में उनका लिबास गर्द से अट गया है। इसके अलावा चक्की चलाने की वजह से हाथों में छाले भी पड़ चुके हैं। पानी की मश्क जो कभी-कभी कंधे पर उठाकर दूर से लाती थीं उसके बंधनों से जिस्म पर निशान पड़ गया है। अली[अ] बहुत ग़मज़दा हुए और जनाबे फ़ातिमा[स] को मश्वरा दिया कि पैग़म्बर[स] के पास में जाकर अपने कामों में मदद के लिए एक कनीज़ की दरख़्वास्त करो।

जनाबे फ़ातिमा[स] मश्वरा मानते हुए रसूल[स] के घर गईं। इत्तेफ़ाक़ से उस वक़्त रसूले अकरम[स] के पास कुछ लोग बैठे हुए थे। जनाबे फ़ातिमा[स] को उन लोगों के सामने पैग़म्बर[स] से अपनी ज़रूरत बताते हुए अच्छा नहीं लगा इसलिए घर वापस आ गईं। रसूले अकरम[स] जनाबे फ़ातिमा[स] के आने और जाने से समझ गए कि फ़ातिमा[स] किसी काम से आई थीं और मुनासिब वक़्त नहीं देखा तो वापस चली गईं।

दूसरे दिन सुबह रसूले अकरम[स] जनाबे फ़ातिमा[स] के घर आए। अली[अ] व फ़ातिमा[स] दोनों आराम कर रहे थे और चेहरों को ढके हुए थे। रसूले ख़ुदा[स] ने कमरे के बाहर से बुलंद आवाज़ से कहा, "अस्सलामु अ़लैकुम।"

अली[अ] व फ़ातिमा[स] ने शर्म की वजह से जवाब नहीं दिया।

दोबारा कहा, "अस्सलामु अ़लैकुम"। अली[अ] फिर भी ख़ामोश रहे।

तीसरी बार कहा, "अस्सलामु अ़लैकुम।"

रसूले अकरम[स] का यह उसूल था कि जब भी किसी के घर जाते थे तो घर या कमरे के बाहर से बुलंद आवाज़ से सलाम करते थे और अगर जवाब नहीं मिलता था तो अंदर आने की इजाज़त चाहते थे और अगर तब जवाब नहीं मिलता था तो तीन बार सलाम की तकरार करते थे, फिर भी जवाब न मिलता तो वापस चले जाते थे। अली[अ] ने देखा कि अगर इस बार भी पैग़म्बर का जवाब न दिया तो पैग़म्बर[स] वापस चले जाएंगे। यह सोच कर बुलंद आवाज़ से कहा, "व अलैकस्सलाम या रसूलुल्लाह! अंदर तशरीफ़ लाईए।"

पैग़म्बर[स] कमरे में गए और सिरहाने बैठ गए। जनाबे फ़ातिमा[स] से कहा, "तुम कल मेरे पास आई थीं। फिर वापस चली आई थीं, तुम्हें ज़रूर कोई काम था, बताओ क्या काम था।"

हज़रत अली[अ] ने कहा, "अगर इजाज़त हो तो मैं बयान करूँ। दरअसल मैंने ही ज़ेहरा[स] को आपके पास भेजा था। वजह यह थी कि मैंने देखा अब घर के काम बढ़ गए हैं और फ़ातिमा[स] को बहुत ज़्यादा परेशानी हो रही है। इसलिए मैंने कहा कि रसूले अकरम[स] के पास जाओ ताकि वह एक कनीज़ का इंतेज़ाम कर दें जो घर के कामों में तुम्हारी मदद कर सके।"

रसूले अकरम[स] नहीं चाहते थे कि उनकी या उनके किसी रिश्तेदार की ज़िंदगी का स्टेंडर्ड दूसरे आम लोगों से बुलंद हो, जिनकी आमदनी कम है क्योंकि उन दिनों मदीने में ग़ुरबत बहुत ज़्यादा थी और मुसलमान बहुत परेशान थे। इधर पैग़म्बरे अकरम[स] अपनी बेटी को पहचानते थे उन्हें मालूम था कि फ़ातिमा[स] इबादत की शैदाई हैं और उन्हें ज़िक्रे ख़ुदा से ख़ुशी और ताक़त मिलती है। इसीलिए कहा, "क्या तुम चाहती हो कि मैं ऐसी चीज़ बता दूँ जो इस सबसे बेहतर हो?"

"हाँ! बताइए ख़ुदा के रसूल[स]।"

"जब भी सोने लगो तो चौंतीस बार अल्लाहो अकबर, तेंतीस बार अल-हम्दुलिल्लाह, तेंतीस बार सुब्हानल्लाह पढ़ना न भूलना। यह अमल तुम्हारी रूह को वह असर बख़्शेगा जो ज़िंदगी के लिए एक कनीज़ के असर से ज़्यादा होगा।"

जनाबे फ़ातिमा[स] ने अभी तक सर से रूमाल नहीं हटाया था। अब सर से रुमाल हटाया और ख़ुशी-ख़ुशी तीन बार कहा, "जिस चीज़ से ख़ुदा और रसूल[स] ख़ुश हों मैं भी उसी से ख़ुश हूँ।" ●

तफ़सीरे कुरआन

# सूरए राद

اَنزَلَ مِنَ السَماءِ ماءً فَسا لَت اودِيَة بِقَدرِها
فاحتمَلَ السَّيلُ زَبَداً رابِياًو مِمَّايوقِدون عَليهِ فى النَّارِ
اِبتِغاءَ حِليَة اَو مَتاع زَبدمِثلُه كذلك يَضرِبُ اللّٰهُ الحقَّ وَالباطِلَ
فَامَّاالزَّبَدُفيذهَبُ جُفاء وامَّايَنفَعُ النَّاسَ فَيَمكُثُ فى الاَرضِ كَذلكَ
يَضرِبُ اللّٰهُ الاَمثالَ

(सूरए राद/17)



■ हैदर अब्बास ज़ैदी

''उसने आसमान से पानी बरसाया तो वादियों में बक़द्र ज़र्फ़ बहने लगा और सैलाब में जोश खाकर झाग आ गया और उस धात से भी झाग पैदा हो गया जिसे आग पर ज़ेवर या कोई और दूसरा सामान बनाने के लिए पिघलाते हैं। इसी तरह परवरदिगार हक़ व बातिल की मिसाल बयान करता है कि झाग ख़ुश्क होकर फ़ना हो जाता और जो लोगों को फ़ायदा पहुँचाने वाला है वह ज़मीन में बाक़ी रह जाता है और ख़ुदा इसी तरह मिसालें बयान करता है।''[1]

कुरआने करीम की यह एक बड़ी हसीन और मायनेदार आयत है यूँ तो कुरआन की सारी ही आयतें हसीन और मायने दार हैं। हम इस पूरी आयत की तफ़सीर से पहले उसके जुमलों की तफ़सीर बयान करेंगे।

1- ''*अन-ज़-ल मिनस्समा-इ*'' आयत के इस हिस्से में बारिश के पानी की तरफ़ इशारा किया गया है कि आसमान से नीचे गिरता है और बंजर ज़मीन को ज़िंदा करता है और उसमें नई जान डाल देता है।

2- ''*फ़-सालत बिही औदि-य-तुन*'' इस पानी से नहरें बहती हैं। क्योंकि जब बारिश होती है तो पानी पहाड़ की ऊँचाई से सैलाब की तरह नीचे उतरता है और यही सैलाब फिर नहरों और दरियाओं को भर देता है।

3- ''*बि-क़्-द-रिहा*'' यह सही है कि वह सैलाब पहाड़ के नीचे की तरफ़ आता है लेकिन हर नहर में जितनी गुंजाइश होती है वह उतने ही पानी को अपने अंदर समोती है। मुमकिन है कि नहर से पहले जो पानी हो वह उस नहर के दस बराबर हो लेकिन नहर सिर्फ़ अपनी कैपेसिटी भर पानी को जगह देती है।

4-''*फ़ह्-त-म-लस्सैलु ज़-ब-दर-राबिया*'' जिस वक़्त नहर में सैलाब आता है, उसके साथ-साथ पानी के ऊपर झाग भी होते हैं। *ज़बद* के मायने झाग और *राबी* के मायने बुलंद या ऊँचाई के हैं।

5- ''*व मिम्मा यूक़िदू-न अ़लैहि इब्तिग़ा-अ हिल-यतिन औ मताइन ज़-ब-दुन मिस्लुहू*'' सिर्फ़ सैलाब ही झाग को अपने साथ नहीं लिए रहता है बल्कि ऐसा ही झाग उस वक़्त भी देखने को मिलता है जब किसी धात को ज़ेवर बनाने के लिए पिघलाया जाता है।

अरबी ज़बान में जब किसी चीज़ को पकाने के लिए आग पर रखा जाता है तो उसे ''*औक़दन्नार*'' कहते हैं लेकिन इस जुमले को अ़लैहि के साथ इस्तेमाल करते हैं जिसका मतलब यह होता है कि आग उस धातु को चारों तरफ़ से अपनी लपेट में ले लेती है ताकि वह अच्छी तरह पिघल कर ख़ालिस बन जाए।

6- *''कज़ालि-क यज़्रिबुल्लाहुल हक़्-क़ वल बातिल''* इस जुमले में इस बात का साफ़ इशारा है कि इन दो बातों:

A: जब सैलाब आता है तो झाग को भी अपने साथ बहा ले जाता है।

B: जब धातु को आग में पिघलाया जाता है तो मिलावट वाली चीज़ें उस से अलग हो जाती हैं।

को दोहराने का मक़सद हक़ और बातिल की तस्वीर पेश करना है।

7- *''फ़-अम्मज़-ज़-ब-दु फ़-यज़्हबु जुफ़ा''* झाग बाहर फेंक दिया जाता है और ख़त्म हो जाता है।

8- *''व अम्मा मा यन्फ़उन्नासु फ़-यम्कुसु फ़िल अर-ज़ि''* लेकिन जो लोगों के फ़ाएदे की चीज़ है वह बाक़ी रह जाती है।

9- *''कज़ालि-क यज़्रिबुल्लाहुल अम्सा-ल''* ख़ुदा हक़ व बातिल के लिए इसी तरह की मिसालें पेश करता है। हक़ पानी और ख़ालिस धात की तरह है जो सारे मरहले गुज़ारने के बाद बाक़ी रहता है जिनमें से एक इंसान की ज़िंदगी की जान है और दूसरा ज़ीनत और ज़िंदगी का वसीला है।

जबकि बातिल की मिसाल पानी पर तैरने वाले झाग या धात पिघलाते वक़्त उभरने वाले झाग की है जो थोड़ी देर के बाद ही ख़त्म हो जाता है या दूर फेंक दिया जाता है। दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कहा जाए कि हक़ हमेशा बाक़ी रहता है और बातिल जल्दी ही मिट जाता है।

यहाँ तक हम ने आयत के जुमलों की तफ़सीर बयान की है और अब हम आयत में मौजूद कुछ अहम प्वाइंट्स को बयान करेंगे।

1- कभी-कभी इन्सान ख़ुद हक़ और बातिल को भी नहीं पहचान पाता है और हक़ और बातिल को उनकी निशानियों के ज़रिए पहचानता है। क़ुरआने करीम ने हक़ व बातिल दोनों की ख़ासियतों को इस तरह बयान किया है: हक़ साबित, मज़बूत और फ़ायदेमंद है जबकि बातिल कमज़ोर और बेफ़ायदा है।

2- हक़ में ठोस पन पाया जाता है जबकि बातिल अंदर से खोखला होता है, जैसा कि हम देखते हैं कि पानी भारी होता है लेकिन झाग हलका होता है, धात भारी होती है और उस से निकलने वाला झाग हलका होता है। यह इस बात की निशानी है कि भारी चीज़ें ठोस और मज़बूत होती हैं जबकि झाग अंदर से खोखला और ख़ाली होता है। इस बात को हम आसानी से महसूस कर सकते हैं। जैसे फ़ीसाग़ोरस का पहाड़े का क़ानून मज़बूत और फ़ायदेमंद है और एक ज़माना गुज़र जाने के बाद भी उसमें कोई ग़लती नहीं निकाली जा सकती है जबकि बहुत से दूसरे स्कॉलर्स के नज़रिए आज नाकाम हो गए हैं और कुछ ख़ास फैक्टर्स की वजह से ज़माने के गुज़रने के साथ भुला भी दिए गए।

3- हक़ चूँकि मज़बूत है इसलिए सेल्फ़-डिपेंडेंट होता है जबकि बातिल अपनी कमज़ोरी की वजह से हक़ के सहारे और उस पर सवार रहता है इस तरह कि अगर पानी और धात (हक़) को अलग कर दिया जाए तो झाग (बातिल) का कोई नामो निशान नहीं रह जाएगा।

इस बात का मतलब यह हुआ कि हक़ से दूर रह कर बातिल एक सेकेंड भी बाक़ी नहीं रह सकता और अगर हम यह देखते हैं कि बहुत से बातिल नज़रिए कुछ दिनों तक समाज में अपना रंग जमाए रखते हैं और बाक़ी रहते हैं तो वह सिर्फ़ इस वजह से है कि वह हक़ के साथ मिले हुए होते हैं और हक़ का लिबास पहन कर अपना असली चेहरा छुपाए हुए रहते हैं।

अब हम ऐसे प्वाइंट्स को बयान करेंगे जो इस आयत में छुपे हैं:

आयत की इस मिसाल में दस बातों की तरफ़ इशारा किया गया है और यह आयत ख़ुद इस बात की गवाह है कि क़ुरआने करीम और ख़ास तौर पर यह आयत इन्सानी सोच का नतीजा और उसका लिखा हुआ नहीं है बल्कि ऐसा कलाम है जो ख़ुदावंदे आलम की तरफ़ से आख़िरी नबी पर नाज़िल किया गया है।

यह दस बातें इस तरह से हैं:-

1- कभी हक़ व बातिल की लड़ाई ईमान और कुफ़्र की शक्ल में नज़र आती है तो इस सूरत में

हक़ (ईमान) को पानी की तरह क़रार देने के मायने यह होंगे कि जिस तरह पानी इन्सानी ज़िंदगी की पूँजी है इसी तरह बहुत से जानदार और पेड़-पौधों की ख़िलक़त की शुरुआत भी पानी से ही होती है जैसा कि क़ुरआन मजीद ने भी बयान किया है: *"व-जअल्ना मिनल मा-इ कुल-ल शै-इन हैय्य"* "हम ने हर जानदार को पानी से पैदा किया है।"

इसी तरह ख़ुदा और क़यामत के दिन पर ईमान रखना इन्सान की समाजी ज़िंदगी की सबसे बड़ी दौलत है। ख़ुदा पर ईमान के साए में ही सोशल जस्टिस और इंसाफ़ फल-फूल सकता है। इसी ईमान के साए में इन्सान के पाकीज़ा ख़यालात एक ख़ास तरीक़े से समाज में ज़ाहिर होते हैं जबकि जिस क़ौम के पास ईमान नहीं होता उसमें कमज़ोर लोगों के अंदर हक़ पर चलने और समाजी इंसाफ़ फैलाने का जज़्बा और हौसला भी नहीं पाया जाता है। ऐसी क़ौमों में इन्सानों को तरह-तरह के तबक़ों और कास्ट में बाँट दिया जाता है और हमेशा यह लोग छोटी बड़ी जंगों में फंसे रहते हैं।

एक ज़माना वह था जब मशहूर साइकॉलोजिस्ट सिग्मंड फ़्राइड का मानना था कि दीन की उम्र ख़त्म हो चुकी है और दुनियावी सिस्टम और समाजी क़ानून दीन की जगह ले चुका है लेकिन पहली वर्ल्ड-वार जिसमें एक करोड़ से ज़्यादा इन्सानी जानों का नुक़सान हुआ था, उसने यह साबित कर दिया कि फ़्राइड का ख़याल बिल्कुल ग़लत था। और इसी तरह दूसरी वर्ल्ड-वार ने यह भी साफ़ कर दिया कि वेस्टर्न क़ौमों में इन्सानी ज़िंदगी मर चुकी है और उसकी जगह मेकेनिकल ज़िंदगी ने ले ली है। हक़ीक़त यह है कि वह इन्सानी मास्क पहने हुए दरिंदे हैं।

इस तरह ईमान को धात का नाम दिया गया है क्योंकि कुछ धात इन्सान की ज़िंदगी का सरमाया हैं जिसके बारे में क़ुरआन का एलान भी है: *"व अंज़ल्नल हदीद व फ़ीहि बासुन शदीद व मनाफ़िउन लिन्नास"* "हम ने लोहा पैदा किया जिसमें बहुत बड़ी ताक़त पाई जाती है और लोगों के लिए फ़ाएदा है।"

अगर यह धात नाबूद हो जाए तो इन्सानी ज़िंदगी मुश्किल में पड़ जाएगी।

2- सैलाब के ऊपर उभरने वाले झाग या धात पिघलाते वक़्त उठने वाला फ़ेन उस पर्दे की तरह है जो थोड़ी देर तक पानी और धात के चेहरे को छुपाए रखता है लेकिन ज़्यादा देर नहीं गुज़रती कि वह सारा झाग ख़त्म हो जाता है और पानी का साफ़ चेहरा लोगों की नज़रों को अपनी तरफ़ खींच लेता है। इसी तरह कभी-कभी हक़ का चेहरा भी बातिल के नक़ाब से छुप जाता है लेकिन आख़िरकार बातिल का नक़ाब हट जाता है और हक़ व हक़ीक़त का चेहरा खिलने और चमकने लगता है।

कभी-कभी शैतानी ख़यालात और बातिल सोच हक़ के सूरज को सावन की काली घटाओं की तरह अपने घेरे में ले लेती है लेकिन इन बादलों का घेराव हमेशा बाक़ी नहीं रहता बल्कि जल्द ही ख़त्म हो जाता है। क़ुरआन ने इसी बात को इस अंदाज़ में पेश किया है: *"व क़ुल जा-अल-हक़्क़ु व ज़-ह-क़ल बातिल इन्नल बाति-ल का-न ज़हूक़ा"* इसी तरह दूसरी जगह पर इरशाद होता है: "ख़ुदावंद बातिल को नाबूद करता है और हक़ को अपने कलाम के ज़रिए पायदार बनाता है।"[2]

3- बातिल खोखला और बे-फ़ायदा है जबकि हक़ तरह-तरह की बरकतों से भरा है। पानी पर तैरने वाले झाग से कोई फूल नहीं खिलता, कोई पेड़ हरा-भरा नहीं होता और न ही कोई प्यासा इस से अपनी प्यास बुझा सकता है लेकिन पानी जानदारों और पेड़-पौधों के अंदर ज़िंदगी के हज़ारों जलवे बिखेर देता है।

4- पानी आसमान से गिरता है और

دوماہی مؤمل لکھنؤ

| | |
|---|---|
| उमदा तबाअत | عمدہ طباعت |
| आसान ज़बान | آسان زبان |
| क़ुर्आनी मालूमात | قرآنی معلومات |
| अख़्लाक़ी बातें | اخلاقی باتیں |
| आर्ट गैलरी | آرٹ گیلری |
| इस्लामिक पज़ल | اسلامک پزل |
| कामिक्स | کامکس |

आज ही मेम्बर बनिये
ज़रसालाना
Rs.150

द्विमासिक मुअम्मल लखनऊ
MUAMMAL

AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION
546/203 Near Era's Lucknow Medical College
Sarfarazganj, Hardoi Road, Lucknow-3 U.P. (India)
Ph.: 0522-2405646, 9839459672
email: muammal@al-muammal.org


ज़मीन में जिस जगह जितनी सलाहियत होती है उसी एतेबार से वह पानी से फ़ायदा उठाती है जैसा कि मशहूर है कि बारिश के पानी से बाग़ में फूल खिलते हैं और जंगलों में काँटे उगते हैं। जिस तरह पहाड़, घाटी और नहरों की सलाहियत एक जैसी नहीं है और हर एक अपनी सलाहियत के बराबर पानी से फ़ाएदा उठाता है उसी तरह इन्सानों की रूह भी एक जैसी नहीं होती है बल्कि हर इन्सान अपनी सलाहियत के मुताबिक़ आसमानी टीचिंग्स से फ़ायदा उठाता है। लोगों के दिल भी एक तरह के नहीं होते हैं यानी कुछ दिलों में एक सुराही जैसी जगह भी नहीं होती है और कुछ दिलों में एक दरिया बराबर गुंजाइश पाई जाती है। इसलिए हर एक अपनी-अपनी सलाहियत और जगह के बराबर दीनी टीचिंग्स से फ़ायदा उठाता है।

लोगों की ख़िलक़त में फ़र्क़ का मसला इतना अहम है कि क़ुरआन मजीद ने उसको भी बयान किया है: ''उसने तुम्हें मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में पैदा किया है।'' [3]

रसूले इस्लाम ﷺ ने भी इन्सान की सलाहियतों को सोने-चाँदी की कानों और ज़मीनी ख़ज़ानों का नाम दिया है कि उनमें से कुछ इन्सान सोना-चाँदी होते हैं, ''लोग सोने और चाँदी की कान की तरह हैं।''

हज़रत अली अ० भी फ़रमाते हैं, ''लोगों के दिल बर्तन की तरह हैं और सबसे अच्छा बर्तन वह है जिसमें सबसे ज़्यादा जगह हो।''

बहरहाल इन्सान अपनी सलाहियत और क़ाबलियत के एतेबार से ही रूहानी और दुनियावी नेमतों से फ़ायदा उठाता है।

5- मैदाने जंग में कामयाबी का राज़ यह है कि जो चीज़ हासिल हो वह फ़ायदेमंद भी हो। ख़ुदावंदे आलम ने इसको समझाने के लिए इस तरह बयान किया है, *''व अम्मा मा यन्फ़उन्नासु फ़-यम्कुसु फ़िल अर-ज़ि''* ''जो चीज़ लोगों के फ़ायदे की है वह ज़मीन पर बाक़ी रहती है।''

6- बातिल तरह-तरह की शक्ल व सूरत में अलग-अलग मैदानों में ख़ुद को ज़ाहिर करता है जिस तरह झाग पानी के ऊपर और धात को पिघलाते वक़्त भी दिखाई पड़ता है। आयत में आया है, *''व मिम्मा यू-क़दू-न अ़लैहि फ़िन्नार''* ''झाग सिर्फ़ पानी ही पर नहीं बल्कि पिघलाई हुई धात के ऊपर भी दिखाई देता है।

7- बातिल की झूठी तरक़्क़ी हक़ ही के दम से क़ायम होती है और बातिल अपनी वक़्ती ज़िंदगी में हक़ का क़र्ज़दार होता है और अगर उसे हक़ की मदद न मिले तो कभी भी ख़ुद को ज़ाहिर नहीं कर सकता है। पानी पर उभरने वाला झाग पानी के सहारे ज़ाहिर होता है और अगर पानी न हो तो झाग का भी नाम व निशान नहीं होगा। क़ुरआन ने इसी बात को समझाने के लिए कहा है, ''यानी झाग की बुलंदी पानी के दम से है।''

8- बातिल हमेशा माहोल की अफ़रातफ़री से फ़ायदा उठाते हुए ख़ुद को ज़ाहिर करता है क्योंकि उसे पुर सुकून माहोल में पनपने का मौक़ा नहीं मिलता है। जिस तरह झाग उसी वक़्त पानी के ऊपर ज़ाहिर होता है जब पानी पहाड़ की ऊँची चोटियों से तेज़ रफ़्तार के साथ गढ़ों में गिरता है लेकिन जब वही पानी दरिया और साफ़ ज़मीन पर बहता है तो उसमें वह तूफ़ान नहीं होता और वह झाग भी आहिस्ता-आहिस्ता ख़त्म हो जाता है।

9- बातिल हक़ के सहारे आगे बढ़ता है और जब तक बातिल हक़ के कांधे पर सवार न हो आगे बढ़ ही नहीं सकता। यहाँ तक कि अगर वक़्ती तौर पर भी बातिल आगे बढ़ना चाहे तो उसे हक़ का सहारा लेना होगा जैसा कि झाग बग़ैर पानी के आगे नहीं बढ़ सकता।

10- बातिल तारीकी और अंधेरे की तरह है। वह ख़ुद को ज़ाहिर नहीं कर सकता बल्कि ख़ुद को हक़ के साथ मिला देता है ताकि थोड़ी देर के लिए ख़ुद को ज़ाहिर कर सके जिस तरह पानी पर उभरने वाला झाग पानी का मोहताज होता है और उसी के सहारे उभर कर ऊपर आता है। झाग बग़ैर पानी के किसी भी तरह ज़ाहिर नहीं हो सकता।

हज़रत अली अ० ने इस हक़ीक़त की तरफ़ यूँ इशारा किया है, ''अगर बातिल हक़ से मिलने से अलग रहता तो हक़ के चाहने वालों से छुपा न रहता और अगर हक़ बातिल की मिलावट से अलग रहता तो दुश्मनों की ज़बानें न खुल सकतीं लेकिन एक हिस्सा इस में से लिया जाता और एक उसमें से और फिर दोनों को मिला दिया जाता है और ऐसे ही मौक़ों पर शैतान अपने साथियों को कंट्रोल में कर लेता है और सिर्फ़ वह लोग निजात पा पाते हैं जिनके लिए ख़ुदा की तरफ़ से नेकी पहले ही पहुंच जाती है।'' [4]

1-सूरए राद/17, 2-सूरए इसरा/81, 3-सूरए नूह/14, 4- नहजुल बलाग़ा, ख़ुत्बा/50

# ख़ुशी-ग़म और हम

सै. आले हाशिम रिज़वी
aleyhashim@yahoo.co.in

हज़रत अली[अ०] ने नहजुल बलाग़ा में फ़रमाया है, "ग़म आधा बुढ़ापा है।" इस क़ौल की रौशनी में हम रंज और ग़म से होने वाले निगेविट असर को बहुत अच्छी तरह समझ सकते हैं। बुढ़ापा अपने साथ कमज़ोरी और बीमारियों को लेकर आता है। इसका मतलब है ग़म भी इन्सान को कमज़ोर और बीमार कर देता है। यही वजह है कि अल्लाह ने इन्सान के नेचर में ऐसी क्वालिटी रखी है कि वह बड़े से बड़े ग़म को भी धीरे-धीरे भूल जाता है। अगर ऐसा न हो तो इन्सान का जीना मुश्किल हो जाए। हर किसी को ज़िंदगी में कुछ ऐसे सदमों का सामना करना ही पड़ता है जो उसके पूरे वुजूद को हिलाकर रख देते हैं। लेकिन बीतता हुआ वक़्त हर ज़ख़्म का मरहम बन जाता है। जिस तरह रौशनी हर अंधेरे को दूर कर देती है ठीक वैसे ही ख़ुशी ग़मों के असर को ख़त्म कर देती है। हंसना, मुस्कुराना और ख़ुश रहना हमारी सेहत के लिए बहुत फ़ायदेमंद है। हिन्दी की एक मशहूर कहावत है, "चिंता चिता है" यानी किसी प्रॉब्लम को लेकर बहुत ज़्यादा टेंशन लेना हमारी ज़िंदगी को मुश्किल में डाल देता है। अपनी कोशिश में कमी नहीं करनी चाहिए लेकिन अगर मर्ज़ी के मुताबिक़ काम न बने तो मायूस होकर ख़ुद को दुखी कर लेना भी मुनासिब नहीं है। बल्कि ऐसे में अल्लाह पर भरोसा रखते हुए बेहतरी की उम्मीद बनाए रखनी चाहिए। हज़रत अली[अ०] का इरशाद है, "जब मर्ज़ी के मुताबिक़ काम न बने तो जिस हाल में हो उसी में ख़ुश रहो।" इस इरशाद में ग़मों से दूर रहने और ख़ुश रहने की साफ़ तौर पर हिदायत की गई है।

ख़ुशी और ग़म इन्सान की ज़िंदगी में आते-जाते रहते हैं। हमें दोनों को सही ढंग से फ़ेस करना चाहिए। वक़्त हमेशा एक जैसा नहीं रहता, कभी कामयाबी की ख़ुशी मिलती है तो कभी नाकामी का दर्द भी झेलना पड़ता है। मेडिकल साइंस की रिसर्च भी यही बताती है कि ख़ुश रहने वाले लोगों की सेहत ग़मों से परेशान लोगों के मुक़ाबले काफ़ी बेहतर रहती है। ख़ुश मिज़ाज लोगों का दिल-दिमाग़ सुकून से रहता है, जिसकी वजह से वह कई तरह की बीमारियों से बचे रहते हैं। जब इन्सान ख़ुश रहता है तो उसका दिमाग़ हर तरह के प्रेशर को आसानी से बर्दाश्त कर लेता है। लेकिन टेंशन में रहने वालों के लिए मामूली ग़म भी मुसीबतों का पहाड़ बन जाते हैं। हॉयपर-टेंशन, हाई ब्लड-प्रेशर, हार्ट-प्रॉब्लम, डिप्रेशन और दिमाग़ से जुड़ी कई बीमारियों की वजह, ग़मों को ख़ुद पर लादने की आदत होती है। आजकल समाज में स्युसाइड-टेंडेंसी भी बहुत बढ़ गई है। अख़बारों और न्यूज़ चैनलों पर ग़रीबी, बीमारी और नाकामी से तंग आकर ख़ुदकुशी जैसी हराम मौत मरने वालों के बारे में हम बराबर पढ़ते और देखते ही रहते हैं। दरअसल यह वही लोग हैं जो ग़म और परेशानी को सही तरीक़े से हैंडिल नहीं कर पाते। हर रात की एक सुबह होती है, इसलिए उम्मीद का दामन हाथ से नहीं छोड़ना चाहिए। ख़ुश मिज़ाज और ज़िंदा दिल लोगों का साथ सभी पसंद करते हैं। इसके अपोज़िट हमेशा ग़मज़दा और अपनी परेशानियों का रोना रोने वालों से लोग कतराने लगते हैं। दरअसल ऐसे लोग मायूसी भरी बातें करके माहोल को बेहद भारी बना देते हैं। हमारी कोशिश रहनी चाहिए कि ख़ुद भी ख़ुश रहें और दूसरों से भी ख़ुशियाँ बाटें।

# पैरेंटस की ज़िम्मेदारियाँ

*क़ुरआने मजीद में ख़ुदा फ़रमाता है, "ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं।"* (1)

*रसूले इस्लाम[अ०] फ़रमाते हैं, "ख़ुदा उन माँ-बाप पर रहमत करे जो अपनी औलाद की ऐसी परवरिश करते हैं कि वह भी उनके साथ नेक सुलूक करती है।"* (2)

*जब कोई ख़ुद नेक हो जाता है तो अल्लाह तआला उसके नेक हो जाने के ज़रिए उसकी औलाद और उसकी औलाद की औलाद को भी नेक बना देता है।* (3)

*हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, "अगर तुम दूसरों को सुधारना चाहते हो तो इसकी शुरूआत ख़ुद को सुधारने से करो और अगर तुम दूसरों को सुधारना चाहो और अपने आपको ख़राब ही रहने दो तो यह सबसे बड़ा ऐब होगा।"* (4)

*रसूल[अ०] फ़रमाते हैं, "जिस तरह तुम्हारा बाप तुम पर हक़ रखता है उसी तरह तुम्हारी औलाद भी तुम पर हक़ रखती है।"* (5)

*इमाम सज्जाद[अ०] फ़रमाते हैं, "तुम्हारी औलाद चाहे बुरी हो या अच्छी, बहरहाल तुम्हीं ने उसे पैदा किया है। समाज में उसे तुम्हारी ही औलाद कहा जाता है। इसलिए यह तुम्हारी ज़िम्मेदारी है कि तुम उसे अदब-आदाब सिखाओ, अल्लाह की मग़फ़िरत के लिए उसकी रहनुमाई करो और परवरदिगार की इताअत में उसकी मदद करो। तुम्हारा सुलूक अपनी औलाद के साथ उस शख़्स के जैसा होना चाहिए जिसे यक़ीन होता है कि एहसान के बदले में उसे अच्छी जज़ा मिलेगी और बदसुलूकी की वजह से सज़ा मिलेगी।"* (6)

*रसूले इस्लाम[अ०] ने फ़रमाया है, "जिस किसी के यहाँ बेटी हो और वह उसे ख़ूब अदब व अख़लाक़ सिखाए, उसकी तालीम के लिए पूरी कोशिश करे, उसके लिए आराम व आसाइश का भरपूर ख़्याल रखे तो वह बेटी उसे जहन्नम की आग से बचाएगी।"* (7)

*हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, "जो दूसरों का लीडर बनना चाहे उसे चाहिए कि पहले ख़ुद को सुधारे, फिर दूसरों को सुधारने के लिए आगे बढ़े। दूसरों को ज़बान से अदब सिखाने से पहले अपने किरदार से अदब सिखाए ...।"* (8)

*1.सूरए तहरीम/6, 2.मकारिमुल अख़लाक़/517, 3.मकारिमुल अख़लाक़/546, 4.ग़ुररुल हिकम/278, 5. मजमउज़्ज़वाएद, 8/146, 6.मकारिमुल अख़लाक़/484, 7.मजमउज़्ज़वाएद, 8/158, 8.नह्जुल बलाग़ह*

ख़ुशी बाटने से कभी कम नहीं होती बल्कि और बढ़ जाती है। कुछ लोग अपने फ़्युचर को लेकर काफ़ी फ़िक्रमंद रहते हैं। यह सही है कि हमें अपने फ़्यूचर की प्लानिंग करनी चाहिए। लेकिन उसे लेकर इतना ज़्यादा परेशान न हों कि हमारा 'आज' टेंशन से भर जाए। आने वाले वक़्त की बेहतरी को लेकर अपने मौजूदा वक़्त को दुखों से भर लेना सरासर नासमझी है। इस फ़्लॉसफ़ी को किसी शायर ने यूँ बयान किया है:

इस से बढ़कर ग़मे दौराँ तेरा हल क्या होगा।
सोचना छोड़ दिया हम ने कि कल क्या होगा।।

संजीदगी अच्छी आदत है लेकिन उसे रंजीदगी बना लेना मुनासिब नहीं है। कुछ लोग हमेशा सीरियस मूड में रहते हैं। ऐसे लोगों पर ग़म और परेशानी का असर ज़्यादा देखा गया है। यह असर इतना गहरा होता है कि अच्छा-भला हेल्दी इन्सान भी बीमार हो जाता है। यही वजह है कि मेडिकल साइंस ने बाक़ाएदा लॉफ़िंग थेरेपी डेवलप की है। इसमें सवेरे उठकर फ़्रेश माहोल में कुछ देर सब कुछ भुलाकर खुले दिल से ज़ोर-ज़ोर से हंसा जाता है। यह लॉफ़िंग थेरेपी ऐसी एक्सर्साइज़ है जो दिल-दिमाग़ पर बढ़ते प्रेशर को काफ़ी कम कर देती है। लेकिन यह तरीक़ा नेचुरल नहीं है इसलिए बेहतर तो यह होगा कि हम ऐसे हालात बनने ही न दें कि हमें झूठी हंसी का सहारा लेना पड़े। ग़मों को कभी ख़ुद पर हावी नहीं होने देना चाहिए। इसके बोझ को इतना मत बढ़ने दीजिए कि आपकी पूरी शख़्सियत ही उसके नीचे दब कर रह जाए। आख़िर में मैं यही कहूँगा कि "ख़ुश रहिए, फिट रहिए" की पॉलीसी अपनाकर ज़िंदगी को टेंशन-फ़्री रखिए। कहते हैं कि सिर्फ़ साँसों का चलना ज़िंदगी नहीं होती, बल्कि ज़िंदगी वह है जो ज़िंदादिली से जी जाए। हर परेशानी का सामना हिम्मत और सब्र के साथ करना चाहिए। हर हाल में ख़ुश रहने की आदत हमें हौसलामंद बनाती है। इन्सान के इरादे अगर मज़बूत हों तो फिर बड़ी से बड़ी मुसीबत भी मामूली लगने लगती है। ख़ुदा और ख़ुद पर यक़ीन रखते हुए ज़िंदगी के कठिन रास्ते पर मज़बूती के साथ क़दम बढ़ाते रहिए, इन्शाअल्लाह हर मुश्किल आसान होगी। याद रखिए हर नाकामी एक सबक़ देती है जो हमें अक्सर कामयाबी हासिल करने में मददगार साबित होती है। इसलिए किसी नाकामी को ज़िंदगी की हार मान कर हताश और मायूस नहीं होना चाहिए। उम्मीद के दिए हमेशा रौशन रखें ताकि आपकी ज़िंदगी ख़ुशियों के उजालों से भरी रहे।

**हंसा करो कि उदासी भली नहीं होती।**
**बुझे दिए की कोई ज़िंदगी नहीं होती।।**

# ख़लवत और गोशा-नशीनी

आयतुल्लाह मकारिम शीराज़ी

**तज़किय-ए-नफ़्स और अख़्लाक़ी सिफ़तें समाज के बीच रहकर ज़्यादा बेहतर तौर पर हासिल हो सकतीं है या तन्हाई व ख़लवत में?**

यह वह अहम सवाल है जिसको अक्सर लोग खुद अपने आप से करते रहते हैं।

कुछ लोगों का मानना है कि इन्सान जितना ज़्यादा गोशानशीनी की ज़िंदगी गुज़ारेगा उतना ही अख़्लाक़ी लेहाज़ से महफ़ूज़ रहेगा क्योंकि बहुत से लोगों की अक्सर अख़्लाक़ी बुराईयाँ दूसरों से रूबरू होने पर ही पैदा होती हैं। हसद, तकब्बुर, ग़ीबत, बोहतान, रिया, कीना वग़ैरा दूसरों के साथ ज़िंदगी गुज़ारने की बुनियाद पर ही पैदा होते हैं। जिस शख़्स का दूसरे लोगों से कोई सरोकार नहीं होता है ऐसा शख़्स न ग़ीबत करता है और न ही ग़ीबत सुनता है, न किसी से हसद करता है और न रिया, कीना और झूठ वग़ैरा जैसे गुनाह करता है।

इस नज़रिए के मानने वाले लोग जिनमें कुछ उलमा व फ़लॉस्फ़र्स और कुछ मशहूर आबिद व ज़ाहिद भी पाए जाते हैं, ऊपर दी गई दलील के अलावा दूसरी दलीलें भी पेश करते हैं। इन लोगों के मुताबिक़ एक गोशानशीन इन्सान बेहतर तौर पर खुदा की इबादत करता है और ख़ुज़ू व ख़ुशू के साथ उसकी बारगाह में हाज़िर होता है। ऐसा शख़्स बेहतर तौर पर खुदा की निशानियों और दुनिया के बारे में ग़ौर कर सकता है। यही वजह है कि बहुत से स्कॉलर्स और फ़लॉस्फ़र्स अपनी ज़िंदगी गोशानशीनी और ख़लवत में बसर कर दिया करते थे।

इसके अलावा, समाजी ज़िंदगी में एक मसला यह भी पैदा होता है कि इन्सान अक्सर ऐसे हालात से दो चार होता है जिनमें उसके ऊपर बहुत अहम ज़िम्मेदारियाँ आ जाती हैं और ज़्यादातर ऐसा होता है कि वह अपनी इन ज़िम्मेदारियों को पूरा नहीं कर पाता है जिसका नतीजा यह होता है कि अपने रास्ते से भटक जाता है। मिसाल के तौर पर समाजी और मिली-जुली ज़िंदगी में हमें आमतौर पर अलग-अलग तरह के गुनाहों, बुरी बातों और बुरे कामों का सामना करना पड़ता है जिसकी वजह से हम अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुनकर जैसी अहम ज़िम्मेदारी से रूबरू होते हैं जबकि इस अहम ज़िम्मेदारी को पूरा करने के बावजूद हम नहीं जानते कि हमने अपनी इस ज़िम्मेदारी को पूरा किया या नहीं? इसलिए बेहतर है कि एक कोने में बैठ जाएं ताकि इस अहम ज़िम्मेदारी से भी आज़ाद हो जाएं।

इन तमाम दलीलों के अलावा आयात व रिवायत में भी गोशानशीनी को अच्छा बताया गया है। जैसे:-

"फिर जब इब्राहीम[अ०] ने उन्हें और उनके माबूदों को छोड़ दिया तो हमने उन्हें इसहाक़[अ०] व याक़ूब[अ०] जैसी औलाद अता की और सबको नबी क़रार दिया।" [1]

इस आयत में इस बात की तरफ़ इशारा है कि हज़रत इब्राहीम[अ०] को गोशानशीनी की वजह से ही ऐसी औलाद

की नेमत मिली थी।

"और जब तुमने उनसे और ख़ुदा के अलावा उनके तमाम माबूदों से अलाहेदगी इख़्तियार कर ली है तो अब ग़ार में पनाह ले लो तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे लिए अपनी रहमत का दामन फैला देगा।" (2)

यह आयत भी इस बात का सुबूत है कि असहाबे कहेफ़ पर समाज से अलग रहने और गोशानशीनी की वजह से ही ख़ुदा ने करम किया था।

रसूले ख़ुदा(स) से पूछा गया कि कौन सबसे अफ़ज़ल है? आपने फ़रमाया कि वह जो अपनी जान व माल के साथ राहे ख़ुदा में जिहाद करे। लोगों ने सवाल किया कि उसके बाद? आपने फ़रमाया कि वह जो समाज से अलग होकर किसी पहाड़ी में गोशानशीन होकर ख़ुदा की इबादत करता हो और दूसरे लोग उसके ज़ुल्म से महफ़ूज़ हों।

इस हदीस में भी जिहाद के बाद गोशानशीनी को अफ़ज़ल बताया गया है। इमाम जाफ़र सादिक़(अ) फ़रमाते हैं, "गोशानशीन लोग इलाही क़िले और ख़ुदा की हिफ़ाज़त के तहेत ज़िंदगी गुज़ारते हैं। (3)

## गोशानशीनी के नुक़सान

अगरचे इन आयतों और रिवायतों में गोशानशीनी के बहुत से फ़ायदे बयान किए गए हैं लेकिन यह भी हक़ीक़त है कि इन बहुत से फ़ायदों के साथ-साथ समाजी ज़िंदगी और लोगों के बीच रहने के भी अपने ख़ास फ़ायदे हैं। बहुत सी दलीलों के ज़रिए साबित किया जा सकता है कि समाजी ज़िंदगी, तन्हा रहकर ज़िंदगी गुज़ारने से अफ़ज़ल और बेहतर है।

1- पहली चीज़ जो समाजी ज़िंदगी की अहमियत को साफ़ करती है वह यह है कि अक्सर अख़्लाक़ी फ़ज़ीलतें और अच्छाईयाँ समाज के बीच रह कर ही हासिल की जा सकती हैं, क्योंकि इनमें से अक्सर सिफ़तें इन्सानों के एक दूसरे के साथ रिश्तों और मेल-जोल की बुनियाद पर उभरती हैं। तवाज़ो, मोहब्बत, ईसार, बख़्शिश, सख़ावत, इंसाफ़, रहम, नफ़्स पर कंट्रोल वग़ैरा जैसी बहुत से सिफ़तें इन्सानों के आपसी रिश्तों और ताल्लुक़ात ही के ज़रिए पैदा होती हैं। इन अख़्लाक़ी सिफ़तों के लिए समाज के बीच रहना ज़रूरी है।

इसके अलावा हसद, तकब्बुर, झूठ, ग़ीबत वग़ैरा जैसी सिफ़तों से गोशानशीनी व ख़लवत के ज़रिए छुटकारा हासिल करना हक़ीक़त में न फ़ज़ीलत है और न ही इन्सानी कमाल। यह बिल्कुल उसी तरह से है जैसे कोई शख़्स इफ़्फ़त और पाकीज़गी के मुख़ालिफ़ कामों से बचने के लिए अपने सेक्चुअल पार्ट्स ही कटवा ले। ऐसा इन्सान सेक्चुअल बुराईयों से तो बच जाएगा लेकिन अख़्लाक़ी ऐतबार से यह कोई कमाल नहीं है। इन्सानी कमाल यह है कि इन्सान समाज के बीच ज़िंदगी गुज़ारे और नाज़ुक हालात के तहेत यूसुफ़ाना अंदाज़ में इन हालात से जंग करे और अपने नफ़्स पर अपना कंट्रोल बाक़ी रखते हुए इस जंग से जीत कर वापस आए। (लेकिन ऐसा भी नहीं होना चाहिए कि इन्सान जानबूझ कर ऐसे हालात पैदा करे।)

इसलिए अच्छे और नेक अख़लाक़ के लिए इसके अलावा और कोई चारा नहीं है कि इन्सान समाज के बीच ही ज़िंदगी गुज़ारे और समाज के साथ अपने आपसी ताल्लुक़ात बनाकर रखे।

दूसरे अलफ़ाज़ में नेक अख़लाक़ और अच्छी सिफ़तें नफ़्सानी ख़्वाहिशों और हवा व हवस की मुख़ालेफ़त के ज़रिए ही हासिल होती हैं जिस तरह जंगली पेड़ अलग-अलग क़िस्म के तूफ़ानों का सामना करके ही मज़बूत और जानदार होते हैं। यही पेड़ अगर किसी ऐसी जगह हों जहां उनकी मुख़ालिफ़त करने वाला कोई न हो तो उनकी मज़बूती ख़त्म जाएगी। इसी तरह गोशानशीन लोग भी धीरे-धीरे अपनी अख़्लाक़ी और रूही ताक़त खो देते हैं। यह हदीस शायद इसी तरफ़ इशारा कर रही है:

रसूले इस्लाम(स) के ज़माने में एक मुसलमान ख़ुदा की इबादत के लिए समाज से दूर एक पहाड़ पर चला गया था। दूसरे मुसलमान उसको लेकर रसूले ख़ुदा(स) के पास आए। रसूल(स) ने उससे फ़रमाया, "तुम और दूसरे मुसलमानों में से भी कोई ऐसा न करे क्योंकि इस्लामी समाज के बीच रह कर तुम्हारा सब्र व इस्तेक़ामत चालिस साल की इबादत से बेहतर

है।''

**2- तन्हाई और ख़लवत** से कई तरह की ज़ेहनी-रूहानी बीमारियाँ और कमियाँ पैदा हो जाती हैं क्योंकि इन्सान कितना ही अच्छी सोच और नज़रियों वाला हो फिर भी उस से ग़लतियाँ और कमियाँ हो ही सकती हैं। दूसरे लोगों के साथ उठने-बैठने के ज़रिए ही सामने आ सकती हैं। समाजी ज़िंदगी में इन्सान बहुत जल्द अपनी ग़ल्तियों की तरफ़ ध्यान देता है लेकिन तन्हाई और ख़लवत में सुधरने के लिए कोई रास्ता नहीं बचता। इसलिए इन्सान गुमराही की तरफ़ बढ़ता चला जाता है बिल्कुल उस शख़्स की तरह जो अपनी राह से भटक जाने पर जितना आगे बढ़ता चला जाता है उतना ही अपनी असली मंज़िल से दूर होता चला जाता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक ग़लत क़दम दूसरी ग़ल्तियों का ज़ीना भी बन जाता है और धीरे-धीरे इन्सान गुमराहियों और ग़ल्तियों का अम्बार लगाता चला जाता है जिसके नतीजे में वह ह्युमन वैल्यूज़ से बेगाना हो जाता है।

इस ऊपर वाली दलील के ज़रिए गोशानशीनी और ख़लवत के तरफ़दारों की यह दलील भी बातिल हो जाती है कि तन्हाई में सोच-विचार और ग़ौर करने के मौक़े ज़्यादा होते हैं। यह दलील इसलिए बातिल होती है क्योंकि बहकने और गुमराही का ख़तरा तन्हाई में कहीं ज़्यादा पाया जाता है।

3- एक दूसरा बड़ा ऐब जो ख़लवत व गोशानशीनी की वजह से पैदा होता है यह है कि इन्सान के अन्दर ''ख़ुद पसंदी'' पैदा हो जाती है। इन्सान आम तौर पर ख़ुद से और ख़ुद से जुड़ी हुई चीज़ों से बेहद मोहब्बत करता है और उसका यह जज़्बा एक टेलीस्कोप की तरह है जो उसके कामों और सोच को उसकी निगाह में उनकी असल हक़ीक़त से बड़ा और उसके बरख़िलाफ़ उसके ऐबों को छोटा करके पेश करता है जिसका नतीजा यह होता है कि इन्सान के अन्दर ख़ुद पसंदी पैदा हो जाती है।

ख़लवत और तन्हाई का माहौल इस तरह की बुरी सिफ़तों की पैदाइश के लिए बहुत मुनासिब होता है लेकिन समाजी ज़िंदगी यानी दूसरे लोगों के साथ उठने-बैठने के ज़रिए अपनी असल हक़ीक़त को भी समझता रहता है यानी अपनी हक़ीक़ी अच्छाईयों और साथ ही साथ अपने ऐबों को भी देख लेता है। साथ ही उन लोगों से भी आमने-सामने होता है जो अच्छाईयों और नेकियों में उससे अफ़ज़ल होते हैं जिसका नतीजा यह होता है कि अपने ऐबों और ग़ल्तियों को अच्छी तरह समझ लेता है। यह चीज़ उसकी ख़ुद पसंदी को दूर करने में मददगार बन जाती है। इसी ख़ुदपसंदी की वजह से अक्सर देखा गया है कि बहुत से गोशानशीन लोगों ने बड़े-बड़े अजीब व ग़रीब दावे किए हैं जिनकी न कोई बुनियाद थी और न कोई हक़ीक़त।

इस सबका एक अहम फ़ायदा यह भी सामने आता है कि इन्सान अपने ऐबों को भी देख लेता है। दूसरे लोग ख़ास कर वह जिनसे हमारे दोस्ताना ताल्लुक़ात नहीं होते हैं या जो हमारे दुश्मन होते हैं, वह हमारे ऐबों को दूर करने का बेहतरीन ज़रिया होते हैं। अगर यह लोग हमारे बीच न हों तो शायद हमारे बहुत से ऐब हम पर खुल ही न सकें और हमेशा के लिए छुपे रह जाएं। यह लोग हमारे लिए एक आईने की तरह होते हैं कि अगर हम गोशानशीन हो जाएं तो ख़ुद अपने हाथों से अपने इस आईने को तोड़ देंगे जिसका नतीजा यह होगा कि हमारा चेहरा बिल्कुल उस शख़्स की तरह होकर रह जाएगा जो आईने की तरफ़ बिल्कुल नहीं देखता है।

### 4- दूसरों के ख़िलाफ़ बदगुमानी

गोशानशीनी का एक दूसरा अहम नुक़सान दूसरे लोगों के ख़िलाफ़ बदगुमानी है। हक़ीक़त में यह सिफ़त ''ख़ुद पसंदी'' की बिना पर वुजूद में आती है क्योंकि ऐसे इन्सान शदीद क़िस्म की ख़ुद पसंदी में फंस जाने के बाद और दूसरे लोगों के ज़रिए मुनासिब इज़्ज़त न मिलने की वजह से यह सोचने लगते हैं कि दूसरे लोग उनकी तरफ़ से ख़ुदग़र्ज़ी, ग़लती के शिकार और इन्सानी अक़दार की तरफ़ से बे तवज्जो हो गए हैं साथ ही उनकी नियतें, इरादे और सोच भी सही नहीं है। हक़ीक़त यह है कि इस बुरी सिफ़त वाले लोग गुमाराह, मुनहरिफ़, ख़ुदग़र्ज़, हक़ को न पहचानने वाले और बद अख़्लाक़ होते हैं जिन्हें समाज में ज़िंदगी गुज़ारने का सलीक़ा भी नहीं होता है।

इस तरह की गोशानशीनी ख़ुद गोशा नशीनी में इज़ाफ़े और ज़्यादती की वजह बन जाती है और इन्सान दूसरे इन्सानों से और दूर हो जाता है।

### 5- गुस्सा और बदमिज़ाजी

गोशानशीन लोग बद अख़्लाक़ और बहुत जल्द ग़ुस्से में आ जाने वाले होते हैं। उनके अंदर दूसरे लोगों को बर्दाशत करने का माद्दा बहुत कम पाया जाता है यहाँ तक कि मुमकिन है सिर्फ़ एक छोटी सी बात को सुनकर ही तैश में आ जाएं और सख़्त क़िस्म का री-एक्शन ज़ाहिर कर दें। वैसे ज़रूरी नहीं कि यह सिफ़त हमेशा और हर इन्सान में पाई जाएं। हाँ! इतना ज़रूर है कि अक्सर मौक़ों पर देखने में आती है।

इसके उलट समाज के बीच ज़िंदगी गुज़ारने वाले लोग ख़ुश अख़्लाक़ और नर्मदिल होते हैं जिसके नतीजे में उन्हें जल्दी ग़ुस्सा नहीं आता है।

इस दावे की दलील भी किल्यर है कि हौसला और बरदाशत करने का माद्दा आम तौर पर प्रेक्टिस और सख़्त हालात से रूबरू होने की वजह से पैदा होता है और चूंकि समाजी ज़िंदगी की शर्त ही यह है कि इसमें अलग-अलग क़िस्म के हालात का सामना करना पड़ता है इसलिए इन्सान धीरे-धीरे सब्र और बरदाशत करने का आदी हो जाता है।

इसके अलावा तन्हाई पसंद लोग ज़्यादा तर बुझे-बुझे से होते हैं, बहुत कम हंसते या मुस्कुराते हैं, मज़ाक़

# गोशा नशीनी

HK

KAZIM
Zari Art

All Kinds of
Sarees, Suits
& Lehanga Chunri

Hata Dhannu Beg
Kazmain Road Lucknow
Contact No.
0522-2264357, 9839126005
8687926005

कम करते हैं और सैर व तफ़रीह के आदी भी नहीं होते जिसका नतीजा यह होता है कि उनकी ज़िंदगी मायूस करने और थका देने वाली होती है। इसी वजह से उनका रूही और साइकॉलोजिकल बैलेंस ख़त्म हो जाता है और वह अपने अंदर एक क़िस्म की ज़ेहनी परेशानी महसूस करने लगते हैं और अगर उनके अंदर ऐसी ज़ेहनी पेचीदगियां पैदा हो जाएं जिनका इलाज भी न मिल सके तो हमेशा के लिए साइकॉलोजिकल मरीज़ हो जाते हैं। नतीजे में उनकी बद अख़्लाक़ी में और इज़ाफ़ा हो जाता है।

### 6- इल्म व तर्जुबे की कमी

बहुत से ऐसे उलूम भी हैं जिनको सिर्फ़ उलमा से सुनकर या उनकी आदतों, अंदाज़ और नज़रियों को देखकर ही हासिल किया जा सकता है। ज़ाहिर है कि यह सब कुछ समाजी ज़िंदगी में ही हो सकता है। तर्जुबे और मुशाहेदे गोशानशीनी की ज़िंदगी में बिल्कुल मैयस्सर नहीं हो सकते। यह बात तो किल्यर है कि ज़िंदगी की पूँजी तर्जुबों के अलावा और कुछ नहीं है।

ऊपर जो कुछ बयान किया गया है उस से गोशानशीनी के मुक़ाबले में समाजी ज़िंदगी की अच्छाई ख़ुद बख़ुद सामने आ जाती है।

### वह कुछ हालात जहाँ गोशानशीनी की जा सकती है

यहां इस बात की तरफ़ इशारा ज़रूरी है कि अगरचे इन्सानी ज़िंदगी की बुनियाद समाज और दूसरे लोगों के बीच ज़िंदगी गुज़ारने पर रखी जानी चाहिए लेकिन इसके बावजूद ज़िंदगी में कभी-कभी ऐसे हालात पैदा हो जाते हैं जहां गोशानशीनी और समाज से पूरी तरह दूरी या कम से कम किसी हद तक अलग रहकर ज़िंदगी गुज़ारने के अलावा कोई रास्ता नहीं होता। ऐसा उस वक़्त होता है जब इन्सान ऐसी जगह या ऐसे हालात में ज़िंदगी गुज़ार रहा हो जहां चारों तरफ़ अख़्लाक़ी बुराईयाँ, गुमराही और इंहेराफ़ फैला हुआ हो क्योंकि ऐसी समाजी ज़िंदगी में उसको भी अख़्लाक़ी बुराईयों व गुमराही के अलावा कुछ हासिल नहीं होगा। इसलिए ऐसे समाज से दूर रहना बहुत ज़रूरी है क्योंकि उस समाज से सभी दूर भागते हैं जिसमें वबाई बीमारियाँ फैल जाती हैं। हज़रत इब्राहीम[अ०] और असहाबे कहेफ़ की गोशानशीनी इसी क़िस्म की थी। हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] की सुफ़यान सौरी से बात-चीत में भी इसी तरफ़ इशारा है, "ज़माना ख़राब हो गया, साथी बदल गए हैं इसलिए मैंने गोशानशीनी को अपने लिए बेहतर समझा है।[4]

इस हदीस से गोशानशीनी के तरफ़दारों की बहुत सी दलीलें ग़लत साबित हो जाती हैं। दूसरा अहम मौक़ा यह है कि अगर इन्सान बुरी सिफ़त या सिफ़तें रखता हो जिनका दूर करना उसके बस में न हो तो दूसरे लोगों को इन बुरी सिफ़तों से बचाए रखने के लिए गोशानशीनी करना बेहतर है।

इस बात की तरफ़ इशारा भी बहुत ज़रूरी है कि इन्सान दूसरे लोगों के साथ ज़िंदगी बसर करने के साथ-साथ अपना कुछ वक़्त गोशानशीनी में भी गुज़ारे ताकि उन लम्हों में गहराई के साथ ग़ौर व फ़िक्र कर सके। साथ ही हर क़िस्म की रिया और शक से बचकर पूरे ध्यान के साथ ख़ुदा की इबादत कर सके। बहुत से बुर्जुग उलमा अपनी ज़िंदगी इसी अंदाज़ से गुज़ारते थे और आज भी गुज़ारते हैं। मुमकिन है गोशानशीनी के बारे में कुछ रिवायतों में इसी तरफ़ इशारा हो। इसलिए इन्सानी ज़िंदगी में असल और बुनियादी चीज़ समाजी ज़िंदगी ही है और कुछ ख़ास हालतों में गोशानशीनी की बारी आती है।

1-सूरए मरयम/49, 2-सूरए कहफ़/16, 3-बिहार, 75/110, 4-बिहार, 47/60

# अब वक़्त आ गया है कुछ कर दिखाने का

अनम रिज़वी

India एक Developing Country है और अब एक Developed Country बनने की कोशिश में है। जब से यह दुनिया बनी है तब से इसमें धीरे-धीरे बदलाव आए हैं। अन-सिविलॉइज़्ड क़ौमें सिविलॉइज़्ड बनीं पर यह इतनी जल्दी नहीं हुआ। एक वक़्त वह था जब इन्सान इस दुनिया में आया ही था मगर दुनिया के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। वह पेड़ के साए को अपना घर मानता था और पेड़-पौधों से जो मिल जाए उसी से अपना पेट भर लेता था। उस स्टेज को कहते थे सेल्फ़-डिपेंडेंट स्टेज। यह दुनिया की पहली स्टेज थी जो आज बदलते-बदलते इंडस्ट्रियल और साइबर स्टेज बन चुकी है जहाँ बैंक, इन्डस्ट्रीज़, स्कूल, कॉलेजेस यानी हर चीज़ मौजूद है। हमारी ज़िंदगी आराम से गुज़रे इसके लिए हर सहूलत मौजूद है। एयर-कंडीशन, ट्रेन, जहाज़ वग़ैरा...अब अगर हम सोचें कि यह सब 21st Century में क्यों आम है और 1st या 2nd Century में क्यों नहीं था तो इसका सीधा सा जवाब यह है कि उस वक़्त हमारे पास अक़्ल तो थी पर इतनी सलाहियत मौजूद नहीं थी कि यह सारी चीज़ें बना पाते। बदलाव धीरे-धीरे ही आता है। आज साइंस ने इतनी तरक़्क़ी की है कि वह ज़मीन के साथ-साथ आसमान तक के रास्ते जान गई है। जहाज़ आसमान में उड़ते हैं और हमें एक मुल्क से दूसरे मुल्क में कुछ ही घंटों में पहुँचा देते हैं...यह है आज की साइंस का करिश्मा।

हज़रत अली अ० 1400 साल पहले ही कह चुके हैं कि मैं ज़मीन से ज़्यादा आसमान के रास्ते जानता हूँ। उस वक़्त लोग यह बात सुनकर हंसे क्योंकि उनमें इतनी सलाहियत ही नहीं पाई जाती थी कि वह अली अ० की बात को समझ पाते। लेकिन आज साइंस ने साबित कर दिया कि आसमान में भी रास्ते हैं। आज साइंस के ज़रिए हर मुल्क तरक़्क़ी कर रहा है। हमारी दुआ है कि हमारा मुल्क भी तरक़्क़ी याफ़्ता मुल्क बने!

जिस तरह साइंस के ज़रिए मुल्क तरक़्क़ी कर रहे हैं उसी तरह इस्लाम के ज़रिए हम इन्सान भी तरक़्क़ी कर सकते हैं। आज मुश्किल यह है कि मुल्क और अपनी दुनियावी तरक़्क़ी के साथ हम अपने दीन को भूलते जा रहे हैं जो बेहद ग़लत है। हिन्दुस्तान एक ऐसा मुल्क है जहाँ सिर्फ़ एक मज़हब वाले नहीं रहते बल्कि हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी मज़हब के लोग रहते हैं और सभी का अपना एक कल्चर है। मुसलमान इस्लाम को मानते हैं और इस्लाम एक ऐसा मज़हब है जिसको चलाने के लिए ख़ुदा ने एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बर भेजे ताकि हम गुमराही से बच सकें।

हमारी क़ौम में तीन तरह के लोग पाए जाते हैं:

एक वह है जो दीन को समझते हैं और उस पर अमल करते हैं, उनके रास्ते में जितनी भी मुसीबत आए वह उनका सामना करने के लिए तैयार रहते हैं, वह अपने मज़हब के साथ कोई कम्प्रोमाइज़ नहीं करते और यही हैं हक़ीक़ी मुसलमान।

दूसरे वह हैं जो दीन के अहकाम को तो जानते हैं पर मुसीबतों को अपने सामने देखकर पीछे हट जाते हैं जिसका जीता जागता सुबूत हमारा हिजाब है। हम अच्छी तरह जानते हैं कि हिजाब हमारे लिए बेहद ज़रूरी है। आज भी कई कालेज ऐसे है जहाँ हिजाब (स्कार्फ़) पर सख़्त पाबंदी है और हम यह जानते हुए कि हिजाब हम पर वाजिब है अपना हिजाब चुपचाप छोड़ रहे हैं। आज सिक्खों ने अपनी पगड़ी मनवा ली पर हम अपना स्कार्फ़ नहीं मनवा सके। इसकी वजह ख़ुद हम ही हैं कि परेशानी को देखकर ही अपने क़दम पीछे हटा लेते हैं।

तीसरे वह लोग हैं जो नाम के मुसलमान तो हैं पर न तो दीन के अहकाम जानते हैं और न उस पर चलने का शौक़ रखते हैं। वह सिफ़ मुल्क की तरक़्क़ी के साथ आगे बढ़ रहे हैं और ख़ुद उनकी तरक़्क़ी बेहयाई में है। यह लोग फ़ैशनेबिल कपड़े पहनकर बेपर्दा चलने में ही अपनी तरक़्क़ी समझते हैं।

यह देखकर बेहद दुख होता है कि हमारी क़ौम के कुछ लोग इस्लाम में पिछड़ते जा रहे हैं। वह शायद बस मोहर्रम में शलवार सूट पहन कर मातम करने से ही अपने आप को शिया समझते हैं लेकिन असलियत इससे बहुत दूर है। जो साल भर बेहिजाब घूमे और मोहर्रम में हज़रत ज़हरा पर आँसू बहाए, क्या हज़रत फ़ातिमा ऐसी औरत के आँसू क़ुबूल करेंगी?

हम मजलिस में यह सुनकर रोते हैं कि आले रसूल के सर से चादरें छीन ली गईं, उन्हें बेपर्दा बाज़ारों में घुमाया गया और आज हम अपनी मर्ज़ी से ख़ुद को बाज़ारों में बेपर्दा घुमाते हैं। कुछ तो यहाँ तक सोचते हैं कि हिजाब एक क़ैद है जिससे जितना दूर रहा जाए उतना ही बेहतर है। उधर कुछ शौहर भी अपनी बीवी को पर्दा नहीं कराते, शायद वह अपनी बीवी को नुमाइशी चीज़ समझते हैं, क्या यह सही है? नहीं! हरगिज़ नहीं। आज यह

ज़रूरी है कि हम अपनी सोच में बदलाव लाएं। आज ईरान को देखकर बेहद ख़ुशी होती है। वह एक ऐसा मुल्क है जो तरक़्क़ी याफ़्ता भी है और अपने मज़हब व अपनी तहज़ीब को भी नहीं भूला है। इस्लाम के रास्ते पर चलने की वजह से वहाँ औरतों की एक इज़्ज़त है। औरतें पर्दे में आर्मी तक ज्वाइन करती हैं, पढ़ाई करती हैं, जॉब करती हैं.. .ज़िंदगी की ऐसी कोई फ़ील्ड नहीं है जहां औरतें नज़र न आती हों लेकिन हिजाब में। इमाम ज़माना[अ] के लश्कर में 320 में से 40 औरतें होंगी। अब आप क्या सोचती हैं कि वह कैसी होंगी...बेशक मुत्तक़ी, परहेज़गार और इस्लाम के बताए हुए रास्ते पर चलने वाली ही होंगी।

सोचने की बात यह है कि आज हमारी क़ौम पीछे क्यों है? क्यों आज हम अपने दीन को छोड़कर दूसरों के रास्तों पर चलने की कोशिश करते हैं, क्यों हम अपने हिजाब को छोड़ना चाहते हैं, क्यों बेहयाई के रास्ते पर चलना चाहते हैं, क्यों? आख़िर क्यों?...हमारा दीन एक ऐसा मज़हब है जहाँ हर छोटी-बड़ी बात को बताया गया है। अल्लाह ने हमें क़ुरआन जैसी बेशक़ीमती किताब दी है ताकि हम गुमराह न हों। हमारे क़ुरआन में हिजाब के बारे में ख़ास तज़किरा है। दीनी एतेबार से हम हिजाब में रहकर हर हलाल काम कर सकते हैं। हिजाब हमारे दीन का ट्रेड मार्क है। नमाज़, रोज़े वग़ैरा के साथ हिजाब को भी दीन ने अहम जगह दी है। हमें किसी भी हालत में अपने हिजाब के साथ कम्प्रोमाइज़ नहीं करना चाहिए। कोशिश कीजिए कि हमारा स्कार्फ़ कालेज में मान लिया जाए। आज हम थोड़े से लोग आवाज़ उठाएंगे जो कल हमारी तादाद ज़्यादा भी होगी। स्कूल, कॉलेज, ऑफ़िस हर जगह अपने हिजाब का एहतेराम कीजिए और अगर कोई आप से इसको हटाने को कहे जो आज युरोप की कई मुल्कों में हो रहा है तो उनकी नियत आप अच्छी तरह समझ सकती हैं। अगर आप अपने ख़ुदा को राज़ी रखना चाहती हैं तो नमाज़, रोज़े के साथ हिजाब पर ख़ास ध्यान दीजिए और एक पक्का इरादा कीजिए कि चाहे कुछ हो जाए आप अपने हिजबा को मनवाने की पूरी कोशिश करेंगी...चाहे वह कालेज हो या ऑफ़िस।

देश की तरक़्क़ी में हम पूरा साथ देंगे लेकिन बे-हिजाब होकर नहीं बल्कि हिजाब के साथ। हमें यह सोच दिल से निकालना होगी कि हिजाब एक क़ैद है बल्कि यह साबित करना होगा कि हिजाब में भी औरतें हर हलाल काम कर सकती हैं। अब वक़्त आ गया है कुछ करने का और अपने हक़ के लिए आवाज़ उठाने का। हिजाब एक ऐसी चीज़ है जो हमें हर बुराई से बचाता है और हमारा परवरदिगार भी हम से राज़ी रहता कि हम अपने हिजाब को बचाने की हिम्मत रखते हैं। बदलाव ज़रूर आएगा क्योंकि नेक अमल में अल्लाह हमारा साथ देगा। अगर आज हम वादा करें और अपने हिजाब का पूरा ख़याल रखें तो कल हमारे बच्चे भी हमारा साथ देंगे। हमारे देश की तरक़्क़ी के साथ हमारी पस्ती न हो बल्कि दीन को हमारे समाज में एक ऊँचा मुक़ाम मिले।

इस्लाम को पहचनवाने के लिए हमें ख़ुद को बदलना होगा। ज़रूरी है कि हम गुमराही से बचें और दीन पर चलने की कोशिश करें और एक ऐसी शख़्सियत बनें कि हम कोई हराम काम न करें। दूसरी क़ौमें हमारा नाम सुनकर ही समझ जाएं कि हम वह हैं जो कोई बुरा या हराम काम नहीं कर सकते लेकिन इसके लिए हमें साबित करना होगा कि हम एक ईमानदार शख़्सियत हैं। काश ऐसा हो कि हमारा नाम सुनकर ही हमें नौकरी मिल जाए कि इस क़ौम के लोग बहुत ईमानदार होते हैं और यह कभी किसी को नुक़सान नहीं पहुँचाते। अगर आज हम कोशिश करें तो वह दिन ज़रूर आएगा जब हमारे समाज में हमारा एक अहम मुक़ाम होगा। बदलाव ज़रूर आएगा भले ही इसमें थोड़ा वक़्त लगे।

जैसा मैंने शुरु में बताया कि दुनिया की तरक़्क़ी धीरे-धीरे हुई उसी तरह हमारी तरक़्क़ी में भी थोड़ा वक़्त लगेगा और यह हमेशा याद रखें कि हमारी तरक़्क़ी हमारे दीन से जुड़ी है।

अल्लाह हमें तौफ़ीक़ दे कि हम उसके दीन पर उस तरह चल सकें जिस तरह वह चाहता है ताकि हमारा मुल्क भी तरक़्क़ी कर सके और हम भी।

## माफ़ी

*अगर हम अपने किसी रिश्तेदार या दोस्त के नाराज़ होने पर उससे माफ़ी मांगें तो इससे यह साबित नहीं होता कि हम ग़लत और वह सही है। बल्कि हमारी माफ़ी साबित करती है कि हम में रिश्ते और दोस्ती निभाने की क़ाबिलियत उनसे ज़्यादा है।*

aleyhashim@yahoo.co.in

मरयम
की तरफ़ से
ख़ूबसूरत और क़ीमती
तोहफ़े
'मरयम' की गिफ़्ट कूपन स्कीम को नवम्बर 2012 से बढ़ाकर जनवरी 2013 कर दिया गया है।
इसलिए अब ड्रॉ फ़रवरी 2013 में होगा जिसके लिए कूपन भेजने की तारीख़ का एलान जल्दी ही किया जाएगा।
'मरयम' के सभी रीडर्स से हमारी गुज़ारिश है कि कूपन मंगाए जाने के एलान से पहले कूपन न भेजें।
Contact No.:
+91-522-4009558
+91-9956620017 (Lucknow)
+91-9892393414 (Mumbai)
maryammonthly@gmail.com

RNI No: UPHIN/2012/43577

# GULSHAN

## MEHANDI & HERBALS

***IRFAN ALI PRADHAN***
*403 & 404, A Block*
*REGALIA HEIGHTS*
*Ahmadabad Palace Road*
*KOHE-FIZA*
*BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.*
*+919893030792, +917554220261*

***MOHTARMA "GULSHAN"***
*G-1, Krishna Apartment*
*Plot No. 2, Firdaus Nagar*
*Bairasia Road, BHOPAL*
*+91-755-2739111*